

असाधारण EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड । PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित PUBLISHED BY AUTHORITY

nio 58]

नई विरुत्तो, मंगववार, मार्च 31, 1992/चैत्र 11, 1914

No. 58]

NEW DELHI, TUESDAY, MARCH 31, 1992/CHAITRA 11, 1914

इत्त माना में भिन्म पृष्ठ संख्या दो जाती है जिसस कि यह अलग सकलन के रूप ल रखा जा सब्बे

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate computation

वाणिज्य मन्त्रालय

श्रायात व्यापार नियंद्रण

मार्श्वजनिक सूचना सं. 1 -- ग्राई टोसी (पीएन) / 92 -- 97

नई विल्ली, 31 मार्च, 1992

विषय :---श्रप्रैल, 1992 मार्च, 1997 के लिए नियति एवं श्रायात नीति

फाइल सं. आई पी सी/ 4/5(244) / 92-93:—-प्रायात एवं निर्यात (नियंत्रण) श्रिधिनियम, 1947 की धारा 3 कें तहन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करने हुए इस सार्वजनिक सूबना के उपायन्ध—1 में दी गई निर्यात एवं श्रायात नीति एनद्द्वारा श्रिधसूचित की जाती है। यह 1 श्रप्रैल, 1992 में प्रभावी होगी और पांच वर्षों की श्रवधि श्रयीत 31 मार्च, 1997 तक प्रभावी रहेगी।

- 2. प्रक्रिया पुस्तक (खण्ड 1 और 2) 1990—93 में निर्धारित प्रक्रिया (वाणिज्य मंद्रालय को सार्वजनिक सूचना सं. 2—प्राई टी सी (पी एन) / 90—93 दिनांक 30 मार्च, 1990 के नहर जारी) और भाषात एवं निर्मात नीति (खण्ड 1 और 2) 1990—93 (वाणिज्य मंद्रालय की सार्वजनिक सूचना संख्या 1—प्राई टी सी (पी एन) / 90—93 दिनांक 30 मार्च, 1990 और संख्या 19—प्राई टी मी (गी एन) / 90, दिनांक 30 मार्च) में दी गई अनुनार प्रक्रिया और भ्रन्य विवरण के साथ निर्यात एवं भ्रायान नीति, 1992—97 के प्रावधानों महिन लागू रहेगी और इन्हें इस नीति क तहत बनाई गई, जारी की गई सम्पन्न की गई मसझी जाएगी।।
 - 3. इसे लोकहित में जारी किया जाता है।

ही. भार. गेहता, मुख्य नियंत्रक श्रायात-निर्यात

श्राम्ख

मुझे नई निर्यात एवं आयात नीति को प्रस्तुत करते हुए हर्य हो रहा है जो प्रथम अप्रैल, 1992 से प्रभावी होगी।स्थाई नीतियों की आयश्यकता की ध्यान में रखते हुए नई नीति 5 वर्ग अर्थात् आटर्थी पंचवर्णीय योजना की पूरी श्रमिक के लिये प्रभावी रहेगी। नई नीति वर्तमान श्रामात निर्यात नीति (1990—93) हा स्थान लेगी।

इसे व्यापक रूप से स्वीकृत किया गया है कि व्यापार जिबल बास्तविक स्वतन्त्र प्रणाली के अन्तर्गत ही पत्रप सकता है। जिन्द्र सरकार द्वारा व्यापार नीति में 4 जुलाई, 1991 एवं 13 अगस्त, 1991 को व्यापक परिवर्तनों की घोषणा की गई थी। नई नीति व्यापार नीति सुधारों द्वारा निर्जारित दिशा को सुट्कु बनाएगी यह नीति औद्योधिक तथा वित्तीय नीतियों में किये गये परिवर्तनों की भी पूरक होगी।

नई नीति की धाधारभूत विशेषता इसका उदारीकरण होता है। इसमें लाइसेंसिंग, मालिक बतिबन्धों और अन्य बिनियमत व दण्ड-विधान नियंत्रणों से स्थाई तीर पर मुनित दिलाई गई है। दो प्रतिबन्धात्मक मूजियों को छोड़कर जिसी भी मद का आयात एवं निर्यात मुक्त रूप से किया जा सकता है। आयात को प्रतिबन्धात्मक सूत्रों व निर्यात को प्रतिबन्धात्मक सूत्रों करिया जा सकता है। आयात को प्रतिबन्धात्मक सूत्रों के आयात और निर्यात को प्रतिबन्धित करती है। वर्तमान परिस्थितियों में इन सूजियों को यवानंभव छोटा रखा गया है। सरकार की यह नीति है कि उद्यों ही निर्यात परिखन प्राप्त कर निर्यात तथा अवंद्यवस्था सुद्दु हो जायेगी, इन सूजियों में समय-समय पर कमी कर दी जायेगी।

निपेशस्मक सूचियों में सम्मिलिय मदों पर लोक नीति के आधार पर निकंत लगाये गये हैं। सरगोक्टन महों का ध्यापार साधारणनया अवल नामिन एजेंसियों के हारा ही किया जहेगा, तथापि, केन्द्र गरतार सरगीबद्ध मदों के यायान या निर्यात के लिये कियी अन्य को भी लाइसेंस देसकती है। सरगोबद्ध मदों की संख्या ने काफी हर तक कमी की गई है, तथा सरणीकरण कित्यय पैट्टोलियम उत्थादों, उर्वरकों, खाज ने नें, अनाओं और कुछ अन्य मदों तक ही संभित रह गया है। कुछ अन्य मदों को भी प्रतिबन्धात्मक सूचियों में सम्मिलित किया गया है तथा उन्हें लाइसेंसिन, पंजीकरण, सीलिंग सीमा आदि प्रतिबन्धों के अन्तर्गत रखा गया है। उपभोज्य एवं स्थायी माल पर यथापूर्व प्रतिबन्ध जारी रहेगा। ये प्रतिबन्ध आर्थिक कारणों के साथ-साथ, मुरक्षा, बचाय, पर्यावरण, रोजगार तथा इसी प्रकार के अन्य कारणों से आवश्यक सबसे गये हैं। निवेधात्मक सूचियों के साथ-साथ, मुरक्षा, बचाय, पर्यावरण, रोजगार तथा इसी प्रकार के अन्य कारणों से आवश्यक सबसे गये हैं। निवेधात्मक सूचियों के झारा विनिद्धित की जायेगी ताकि विणिष्ट मामलों में लाइसेंसिंग में बचा जा सके। जब भी कोई प्रक्रिया निर्वारित को जायेगी तो यह मुनिव्धित करने के लिये ध्यान रखा जायेगा कि प्रतिबन्ध अनुपालन एवं प्रणासन दोगों के लिये ही अनुसान और सरल हों।

नीति में निर्यात के प्रति सुरूपव्ट सुकाव है तथा निर्यात के लिये अभिमुद्र विगेश स्कोमों को सुद्रुद्ध किया गया है।

शुल्क मुक्त स्कीमों के कार्यक्षेत्र को मात्रा पर आवारित अग्रिम लाइमेंसी के अतिरिक्षत मूल्य पर आवारित अग्रिम लाइसेंसी के अतिरिक्षत मूल्य पर आवारित अग्रिम लाइसेंसी को आरम्भ करने और विस्तृत कर दिया गया है। इससे निर्यातक को पूर्ण कर में मृत्य सीमा लया भाविक प्रतिबन्धों के बिना अजिसेंबेदशील माल की छोड़कर, माल का प्रायात निर्यात करने ज दिये अधिक नम्यता प्राप्त हीगी। अग्रिम लाइसेंस स्तीम के अर्थान निर्यात सदन, व्यापार सदन तथा स्टार व्यापार सदन विश्व प्रमाणीकरण की मृत्यक्ष प्राप्त होगी। बाद में कुछ विजिट्योहन उत्पादों के निर्यात को भी स्व-प्रशाणीकरण स्कीम के अर्थक वाया जायेगा।

निर्यात संवर्धन पूंजीगत माल स्कीम (ई. पी.सी. जी.) को उदार बनाया गया है तथा नदनुका निर्यात धामार के साथ पूंजीगन मान का सायात 25% या 15% सीमागुल्क की रियागनी दरों पर इस तरह से दो प्रकार ये उपलब्ध रहेगा । इस स्कीम के अन्तर्गत नये पुराने दोनों पूंजीगत गत्न का अवययों का अव्यक्त किया जा सकता है। गूंजावि मान के घरेलू विनिर्माता जिन्हें संघटकों का आयात करना अभेकित है, लागत बीमा भाड़ा मूल्य जे 15% सीमागुल्क का ियापती दरों का भूगतान करके निर्यात संवर्भन पूंजीगत मान स्कीम क्या कर नकता है।

रत्न और स्राभूषण निर्यात संबर्धन स्कीमें मामूली स्रामीबनों के गाय भारी रहेगी।

व्यापार नीति सुधारों में, निर्यात श्राभिमुख यूनिटों तथा निर्यात संसाधन क्षेत्रों में स्थिप यूनिटों को श्राधिक स्यायतजा एवं नम्यता दी गई थी। नई नीति के श्रास्तर्गत उन्हों केवल अपनी मजीनरी ही नहीं बल्कि पट्टे पर ली गई मजीनरी को लगाने की भी अनुमति दी गई है। वे श्रपने उत्तर्वत का निर्यात सदनों, व्यापार सदनों, या स्थार व्यापार सदनों के माध्यम से भी निर्यात कर सकते है।

नियति सदनों, व्यापार सदनों तथा स्टार व्यापार सदनों की निर्णायक भूमिका को दोहराया गया है।

नि कि संबर्धन परिषदों (ई.पी. सी.) ने निर्यात के संबर्धन हेतु प्रयुव भृभिका निभाई है। नई नीति में उनकी भृषिका को मान्यक दी गई है। नई नीति के प्रन्तर्गत लाभ भ्रयवा रियायत प्रथवा कोई भी नाजसेंसे प्राप्त करने के लिये किनी भी भायातक/निर्यातक के लिये निर्यात संबर्धन परिषद द्वारा जारी पंजीकरण-सह-पदस्यता प्रमाण पत्र प्रच्युत करने की प्रनिवर्ध भेषेशा बनी रहेगी।

श्रभिग्रहीत निर्यातों को परिभाषित किया गया है तथा गुन्क मुक्त स्कीम बावसी स्कीम के अन्तर्गत लाभ तथा सीमाकर उत्तद णुक्क में छट श्रभिग्रहीत निर्याकों को भी मिलेगा।

कुछ श्रेणियों के निर्यात नथा निर्यानक विजेष भायात लाइसेंस प्राप्त करने के पात होंगें। इसमें ग्रानिप्रहीत निर्यात निर्यात सदन, व्यापार सदन तथा स्टार स्पापार सदन और वे विनिर्माता जो ग्राई, एस. ओ. 9900 (सीरिज) या बी. श्राई, एस. 14000 (सीरिज) गणवत्ता के प्रमाणीकरण की प्राप्त कर लेगें, णामिल है।

व्यापार और उद्योग के राह्योग से जिन्द्र रास्कार का गुगबत्ता पर जानस्कता के लिये तथा भारतीय उत्तादों को विश्व स्तरीय बनाने के निये कदम उठाने हेतु एक राष्ट्रव्यायी स्रभियान प्रारम्भ करने का प्रस्ताव है।

इस नीति का सरलता एवं सुस्कटना उद्देश्य है। इस नीति की प्रक्रिया भी होगी। प्रक्रिया को संबोधित किया जा रहा है जो संबोधित करने में प्रायन एवं सुपम होगी प्रक्रिया पुस्तक जल्दी ही ही जारी की जायगी तथा तब तक वर्तमान प्रक्रिया लागू रहेगी।

इस बात पर बल देते की श्रायण्यकता है कि नई नीति पांच वर्ष की श्रविध तक स्थाई रहेगी तथाति, उदारीकरण की दिशा में परिवर्तन करने होंगें। श्राकस्मिक स्थिति की ध्यान में रखते हुए कुछ श्रन्य परिवर्तन भी श्रावण्यक ही सकते हैं। सरकार की इच्छा है कि जहां तक संभव होगा, प्रत्येक किमादी में ऐसे परिवर्गन किये जायेंगे।

आशा है कि यह नीिदेश के हिए में विदेश कापार को बढ़ाने के समग्र उद्देश्य को प्राप्त करेगी।

इतको समाप्त करने नेपूर्व, मैं मुख्य नियंत्रक श्रायान निर्यात कार्यालय, वागिष्य संवाजय तथा उन सभी जिन्होंने इस नीति को बनाने में योगदान 'देया है, के प्रति प्रपनी यास्तविक कृतजना व्यक्त करता चाहंगा। में वागिष्य संवालय अ राष्ट्रीय सूचना केन्द्रके कम्प्यूटर वेंटर नथा भारत सरकार मुद्रणालय को उनको सेवाओं अतिये धवागद देता हूं।

नई विल्ली

31-3-1992

देवेन्द्र राज मेहता मुख्य नियंत्रक फ्रायात-निर्यात

प्रध्याय--एक

- भमिका

- अश्वित्वना ---पायरा एवं निर्मात (निरंखण) प्रिनियम, 1917 को घारा-3 में प्रवत्त णिवतयों का प्रयोग करते हुए तन्त्रीय सरकार 1992-97 की श्रविक के लिए निर्मात एवं अथात नीति को एतब्हारा प्रविद्वांत करते हैं।
- 2 बिनियोग एवं, प्रवीध :---निर्यात एवं, भावान नोति 1-4-92 सेलायू होगी तथा पांच वर्ष को अवधि तक अर्पात् 31 मार्थ, 1997 तक प्रभावं, रहेती।
- ृ असंशोबन :---ध्स कीवि में संशोधन अवका परिवर्तन करते के लिए सरकार जनहिन में ब्रोबकार पुरिक्षा रखतों है। ऐसे सर्वाबन, यदि कोई होते थी, मध्य नियंत्रक, आवात-नियित द्वारा मार्बजनिक सूबनाओं र प्रायः, खबिजुबिक किए जाएंगे।
- 4 अन्तवर्ती व्यवस्था :--- विवर्ति निर्वात-प्रायात नीतियों के अन्तर्गत कोई भी जारी को गई अधिनुषता वा तारिजित सूचना या अन्य परिवर्तन तथा जो इस नीति अ प्रारम्भ होने से पूर्व जागू थी, यदि इस नीति अ प्रायवामी से असंतत न हों, प्रभावी भाने जाएंगे तथा इस नीति के अन्तर्गत माने जाएंगे। इस नीति से पूर्व जारी किए गए लाइसैंत उसी अनुमति मही के आवादीनिर्यात के लिए मान्य रहेंगे।
- 5. निर्वात एवं आवान को खुला सामान्य लाइसंब क अन्तर्गत अनु प्रेय अवदा जिन्दी लिए पूर्ववर्ती गोतियों में किसी लाइसेंग/प्रश्मिट की श्रावणकता नहीं थो, लेकिन उन गोति के प्रस्तर्गत निर्वत्नण प्रयत्ता लाइसेंव को प्रावण्यका। है, वे भी अनु थि रहेंगे नगर्ते कि 31 मार्च, 1992 तक अवता इससे पूर्व की गर्विय में लाजनत्रों को खोगा गरा हो।
- 1. धन्तर्राष्ट्रीय व्यापार (विश्वासात्मक एवं विनियमत) विजेयक, 1992 संपद विश्वाच्या ही प्रत्युत हिया नाएगा। इस विधेया व कानुन बनने अकानु यह नीति नए अधिनियम के सन्तर्गत आई हुई मानी जल्मी।
 - 2. इस कार्यालय को महानिदेशक, यिदेश व्यासार िष्ट्य में पुत्तः नामोद्दिः किए जाने का प्रस्तान है।

ग्रध्याय—दो

उद्देश्य

- इस नीति के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:---
- (क) भारत के विदेश व्यापार को विश्वव्यापी बनाने के लिए ढांचे को स्थापित करना;
- (ख) भारतीय उद्योग की उत्पादकता, প্রাঞ্জিকিংগ एवं प्रतियोगितात्मकता की बढ़ावा देशा तथा इनके निर्यात सामर्थ्य को बढ़ाना ;
- (ग) माल की गुणावस्था के अन्तर्राष्ट्रीय स्वीकृत स्तरों की प्राप्त करने और उच्च बनाने के लिए प्रोत्माहन देना जिससे कि विदेश में भारत के उत्पादों की छवि को बढ़ावा मिले;
- (घ) भारत के निर्यात को बढ़ाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे माल, मध्यस्थों, संघटकों, उपमोज्यों तथा पूंजीगत माल श्रासानी से उपलब्ध करवाना;
- (ছ) व्यापार के लिए विनियंत्रित ढाँचे किश्रन्तर्गत प्रभाषी एवं स्नन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगी श्रायात प्रतिस्थापन एवं श्रात्मनिर्भरता को बढ़ावा देना;
- (च) भारत े विदेश व्यापार पर कुप्रभाय डालने वाले मान्निक, लाइसैंसिंग और मध्य विवेकाधीन रिधंतकों को कम अथवा समाप्त करना ;
- (छ) देश मे अनुसंधान तथा विकास और प्रौद्योगिकीय सामर्थ्य को प्रोत्साहन देना,
- (ज) निर्यात एवं आयात को संचालित करने वाली प्रक्रिया को सरल एवं कारगर बनाना।

ग्रध्याय---तीन

परिभाषाएं

- 7. इस नोति के उद्देश्य के लिए, जब तक भि संदर्भ में अन्यया अभेक्षित न हो, निम्नलिखित गब्दों ग्रीर ग्रिभिव्यक्तियों के निम्नलिखित ग्रर्थ होंगे :---
 - (1) "उपोग" या "संलगनी" का श्रर्थ है एक पुर्जा, उपसंयोजक श्रयवा संयोजक जो उपस्कर के मूल कार्या को परिवर्तित किए बिना उपस्कर के एक दुक्क को कार्यशावकत को सहयोग देना है।
 - (2) ''श्रधिनियम'' का अर्थ है---आयात-निर्धात (नियंत्रण) श्रधिनियम, 1947।
 - (3) "वास्तिबिक अप्रयोक्ता" का अर्थ है वास्तिबिक अप्रयोकता जो औद्योगिक अथवा गैर-मौद्योगिक हो सकता है।
 - (4) "वास्तिविष अपयोक्ता (श्रौद्योक्ति)" का श्रर्थ अन व्यक्ति से है जो अनतो निजो यूनिट में विनिर्माण के लिए बाहर का ठेका लेने वाली यूनिट सहित कितो श्रन्थ यूनिट में अपने निजो प्रयोग के लिए विनिर्माण के लिए श्रायातित भाम का प्रयोग करना है।
 - (5) "बास्तिबिक उपयोक्ता (गैर-मीद्योनिक)" का वर्ष छरा व्यक्ति से हैं जो श्रयने स्वयं के इस्तेमाल के लिए मायातिस सामग्री का निम्न में इस्तेमाल करता हो ≔
 - (1) कोई भी वाणिष्यिक प्रतिब्ठान जो कोई व्यवसाय, व्यापार का पेशा कर रहा हो; या
 - (2) कोई भी प्रयोगगाता, वैज्ञानिक या अनुसंबान और विकास (आर एण्ड डी) संस्था, विश्वविद्यालय या **धन्य** गैक्षिक संस्था या अस्वताल; या
 - (3) कोई भी मेबा उद्योग।
 - (6) ''पूंजीगत माल'' का अर्थ है मान के, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष उत्पादन के लिए या सेवा अर्धित करने के लिए अपेक्षित संयंत्र, मगोनरी, उपस्तर था उपसाधित जिनमें प्रतिस्थायन, आधुनिक्षीकरण या विस्तार के लिए अपेक्षित सामग्री भी शामिल है।

- (7) निर्यात श्रीर श्रायात के "सरणोबढ़" का श्रयं है केन्द्र सरकार हारा नामज़द को गई एजेंसियों के माध्यम से निर्यात श्रीर श्रायात करना ।
- (8) "सक्षम प्राधिकारो" का वर्ष हे--प्रह प्राधिकारों जो प्रधिनियम प्रयक्षा उसके अन्तर्गत दिये गए आदेणों अथवा इस नीति के तहत किसी शिविकार का प्रयोग कार्स, किसी कार्यभार अथवा कर्तव्य की पूरा करने के लिए सक्षम हो।
- (9) "संबद्धा" का अर्थ है वह उस संयोजन या संयोजन का वह पूर्जा जिसमें एक विनिर्धित उत्पाद तैयार फिया जाता है या जिसमें वह विवटित हो जाए और जिसमें सहायक या उपयंगी भी शामित है।
- (10) ''उनमोज्य'' माल का अर्थ है कोई भव जिसको त्रितिर्माण प्रक्रिया में णाभित्र किया जाना है या जिसकी श्रावाकता होती है परन्तु जी तैयार उत्पाद का भाग नहीं होती हैं। भवें जिनको निर्माण के दोरान वास्तविक रूप में या पूर्णतया उनमोग कर लिया जाता है, उन्हें उनमोज्य पर्वे माना जाएगा।
- (11) ''उनभोक्ता गात'' का श्रर्थ खान के उस माल से हैं जो आगामी संसाबन के बिना मतुष्य की आवश्यकताओं को सीधे ही पूरा करेगा और इत्यों उनभोक्ता के लिए टिकाऊ माल मी शामित होगा।
- (12) "प्रतिसंतुत्तन व्यापार" (काउंडर ट्रेड) का प्रर्थ उन प्रकत ने है जिसके अत्तर्गत व्यापार समझीता वा श्रस्था के नहत प्रायात/निर्यान करने वाले देश ने अवसा तीसरे देश के जरिये सीविश्वायान/निर्यात भारत के आयात/निर्यान से संतुलित होते हों। प्रतिसंतुतन व्यापार (काउंडर ट्रेड) के अन्तर्गत निर्यात/ग्रायान की श्रनुमित एसको एकाउंड, वापम व्यापित की व्यवस्था, वस्तु विनिध्य व्यापार या जिली ऐसी ही अन्य व्यवस्था के अन्तर्गत दो जा सकती है। ऐसा प्रतिसंतुलन पूर्णन्या या अभिक तीर पर नकद मात और/या सेवायों के हम में हो सकता है।
- (13) भारत में वितिसित श्रीर निर्यात किए गए किसी माल के संबंध में "णुल्क वापती" का अर्थ है---किसी श्रायातिक भाज पर अथवा ऐसे माल के विनिर्माण में प्रयुक्त उत्साद-गुल्क देश मात पर उगाहे जाने वाले शृल्क में कटीती।
- (14) "उत्पाद शुल्का देश माल" का प्रार्थ है--कोई माल जिनका भारत में निर्माण किया गा। हो सीर वह केन्द्रीय उत्पाद शुल्का तथा नभक स्रधिनियम, 1944 (1944का एक) के तहत उत्पाद शुरुक के स्रधीन हो।
- (15) 'नियंतिक' का अर्थ उन व्यक्ति से हैं जो निर्धात करता है, निर्यात करना चाहना है और जो निर्यातक-प्रायातक कोड नम्बर धारी हो।
- (16) "निर्यात सदन/व्यामार सका/स्टार व्यामार राजन" का अर्थ है "निर्यानक" जिसके पास मुख्य निर्मन्नक, व्यायात-निर्यात हारा जारी किया गया निर्यात सदन/व्यापार सदन/स्टार व्यापार सदन प्रमाण-पन्न हो ।
- (17) "निर्यात आभार" का अर्थ है—नाइयेम अथवा अनुजा में जामिल उत्पाद स्थाना उत्पादों का लाइससिंग या सक्षम प्राधिकारी द्वारा यथा निर्वारित श्रयंवा यथा निर्विष्ट मात्रा, मृत्य या दोनों में निर्यात करने का श्राभार।
- (18) "आयातक" का अर्थ उस व्यक्ति से हुँ जो आयात करता है, लागान करना चाहता है और जो आयातक--निर्वातक कांख सम्बर्धारी हो।
- (19) "श्रन्तर्राष्ट्रीय कीनत पर पुनः अदायगी स्कीम" का श्रयं है यह स्हीम जिसमें निर्यात उत्पाद में प्रयुक्त विशेष निवेश के संबंध में केन्द्रीय सरकार द्वारा साध्य-समय पर यथा-निर्वारित घरेनू श्रीर श्रन्तर्राष्ट्रीय कीमनों के बीच श्रंतर के बरावर धनराशि को पुनः श्रदायगी करने की व्यवस्था हो ।
- (20) "लाइवेंस प्राधिकारी" का अर्थ उस प्राधिकारी से है जो उस सन्य के जिए जागू किसी कार्न के तड्न लाइवेंस देने के लिए सक्षम हो।
- (21) "लाइसोंस" का अर्थ है- ादान किया गया लाइसोंस जिसमों सीमाशुल्क निकासी परिमट धयवा लाइसोंस प्राधिकारी द्वारा प्रधान की गई कोई अनुमति शामित है।
- (22) "लाइमें मिंग वर्ष" का अर्थ उस वर्ष से है जो प्रथम अर्जैल से आरम्भ होकर आगामी वर्ष के 31 मार्च को समाप्त हो।
- (23) "जीवन रक्षण औपधियों" का अर्थ दृष्टि बचाने चानी औपधियों सिह्त, उन भौषधियों से है जो जीवन बचाने के लिए आवश्याना के लिए तैयार रूप में उननका है और जिल्हें मुख्य नियंत्रक, आयात-नियनि द्वारा प्रधिसूचित किया गया है।
- (2!) "जीवन रक्षक उपकरण" के पर्य प्रतिरिक्त पुर्जी महित उस उपकरण से है जो जीवन बनाने के लिए ध्रावण्यक है और जिन्हें मुख्य नियंद्रक, ध्रायान-निर्मात द्वारा शिक्षमूचित किया गया है।
- (25) "विनिर्माण" का श्रर्थ है—विशेष नाम गुण या उपयोग बाह्य नया उत्पाद जो हाथ श्रयवा मणीन से प्रमाया, उत्पन्न किया, गढ़ा गया, संयोजिन किया गया, संसाधित किया गया श्रथवा तैयार किया गया हो।

- (26) "विनिर्भाता निर्यातक" का अर्थ उस व्यक्ति से है जो माल का गिर्माण करता है तथा उनका निर्मात करता है श्रथवा ऐसे माल का निर्यात करना चाहता है।
- (27) "त्थापारी निर्यातक" का अर्थ उस व्यक्ति े है जो व्यापार के यहाँ और निर्यात के कार्य में संनम्न हो अथवा माल निर्यात करना चाहता हो ।
- (28) "अधिसूचना" का अर्थ उस अधिसूचना से है जो राजवक्ष में प्रशामित की जाए।
- (29) "पुर्जे" का अर्थ है उपसंयोजन या संयोजन का एक तत्त्र जो सम्मान्त्रतया रूपये उपभोगी न हो और जो रख-रखाय के उद्देश्य के लिए आगे से असंयोजन के लिए संशोधन करने के योग्य न हो। "पुर्जा" एक संघटक अथवा उपनाधक हो सकता है।
- (30) "ब्यक्ति" का अर्थ है एक व्यक्ति कर्ष. तामायटी, कम्पनी, कार्पारेशन अथवा अन्य कोई वैध व्यक्ति।
- (31) "नीति" का अर्थ समय-समय पर यथासभौधित नियात-प्रायात नीति, 1992-97 से है।
- (32) "निर्धारित" का अर्थ है आयात एवं निर्या (नियंत्रण) अधिनिय्म, 1947 अधवा इसके तहत अथवा नीति के अंतर्गत बनाये गए नियम और श्रादेश।
- (33) "सार्यजिनक सूचना" जनता की सूचना के लिए चीति के यहर प्रकाणित सूचना।
- (34) "कच्ची सामग्री" का ग्रथं है---
 - (1) मूल सामग्री जिसकी माल के धिनि राण में श्रावण्यकता होती है, परन्तु यह कच्ची, स्वाभाविक, श्रविरिष्कृत अयवा अविनिर्मित श्रवस्था में हों।
 - (2) किसी विनिर्माता के लिए वह साम श या माल जिसकी उस विनिर्माण प्रक्रिया में आवश्यकता होती हो, घाहे वह सामग्री या माल वास्तव में प्े से विनिर्मित हो या उनको संशाधित किया आए या वह प्रव श्री कच्ची या स्वाभाविक अवस्था में हो !
- (35) "पंजीकरण—सह-सदस्यता प्रमाण-पत्न" का तात्वर्य प्रध्याय 13 ये गृत्रीबद्ध किसी निर्यात संवर्धन पर्यिष् द्वारा प्रवान की गई सदस्यता तथा पंजीकरण के अमाधन्यत से है।
- (36) 'श्रृतिरिक्त पुजों' का तात्पूर्व प्रतिस्थापन के लिए किसी उप-असेम्बली या ग्रसेम्बली के अर्थात् किसी सभान या एक ही तरह के भाग या उप-प्रसेम्बली या 'तोम्बली के स्थान पर रखे जाने वाले किसीभाग से है। श्रितिरिक्त पुजें में संघटक या सहायक उपकरण शामिज होते हैं।
- (37) "विनिर्दिष्ट" का तात्पर्य इस नीति के शक्ष्यानों द्वारा या के तहत विनिर्दिष्ट से है।

ग्रध्याय---नार

निर्वात एवं श्रायात से सम्बन्धित सामान्य प्रायधान

- 8. विनियमित होने की स्थिति के अतिरिक्त स्थापन रूप से निर्धात एवं शायात इस नीति के प्रावधानों प्रथत देश के प्रत्य सम्बद्ध कानूनों द्वारा विशेषतया विनियमित को छोड़कर समस्त निर्धात एवं शायात मुक्त होगा।
- 9. विनियमन का प्रकार:---केन्द्र सरकार लोकङ्गि में आयात श्रयवा निर्यात किए जाते वाले माल को श्रायात के लिए निर्येधारमक सूची प्रथवा निर्यात के लिए निर्येधात्मक सूची, जैमाकि मामला हो, के द्वारा बिनियंभित करेगी।
- 10. निर्पेधात्मक सूचित्रां:—निर्पेधात्मक सूचित्रों में ायात प्रथया निर्यात किए जाने वाला यह माल है जो लाइसेंसिय द्वारा अथया ग्रन्थथा रूप से अथवा सरणीवद्ध रूप से प्रतिअधित है। कालात की निर्पेधात्मक लूबी तथा निर्यात की निर्पेधात्मक सूची इस नीति में वी गई श्रनुसार होगी।
 - 11. निषिद्ध माल:---निषिद्ध माल का भाषात प्रधवा निर्योत नहीं किया जाएगा।
- 12. ताइसेंसिंग:--कोई भी माल जिसका नियांत अथवा आयात नाइसेंसिंग के द्वारा प्रतिबंधित किया नया है। इसके लिए आरी किए गए लाइसेंस के प्रतुसार ही नियति अथवा अथवा किया जा सकेगा।
 - 13. शर्तीः—लाइसेंस पर गर्ते लाइसेंसिंग प्राधिकारी द्वारा यथा विनिर्दिण्ट होगी तथा इसमें निम्नलिखित सम्मणित होगी —
 - (क) माल की माजा, विवरण एवं मूल्य;
 - (ख) यास्तविक उपमोक्ता गर्त, यदि कोई है;

- (ग) निर्यात भ्राभार, यदि कोई है;
- (च) प्राप्त किया जाने वाला मूल्य संयोजन, यदि कोई है;
- (ङ) न्यूनतम निर्यात मृत्य यदि, कोई है, और
- (च) उद्गम का देश अथवा भवीं का विवरण।
- 14 वैधता की अवधि —प्रत्येक लाइसेंस में विशिष्टीकृत अवधि तक होगा और यदि लाइसेंस में कोई अवधि नहीं दी गई है तो लाइसेंसिंग वर्ष के 31 मार्च तक वैध होगा।
- 15. लाइसेंस श्रधिकार नहीं:— कोई भी व्यक्ति लाइसेंस को अधिकार समझकर नहीं ले सकता तथा लाइसेंस प्राधिकारी लाइसेंस देने से इंकार करने का श्रधिकार रखता है।
- 16 प्रक्रिया:---मुख्य नियंत्रक, सायात-नियात किसी एक मामले में ग्रथना मामलों की श्रेणी में किसी भी ग्रायातक ग्रयना निर्यातक या श्रन्य लाइसेंसिंग सक्षम ग्राया श्रन्य प्राधिकारी इस श्रधिनियम के प्रावधानों, इसके श्रधीन बने ग्रादेश तथा इस नीति को लागू करने के उद्देश्य से कोई विशेष प्रक्रिया निर्धारित कर सकता है।
- 17. सरणीबद्ध:—कोई भी भद िस्पका द्यायात अथवा निर्यात सरणीबद्ध किया गया है, निवेधात्मक सूची में विशिष्टीकृत सरणीबद्ध प्रभिकरण द्वारा प्रायात अथवा निर्यात किया जाएगा। तथापि, केद्र सरकार सरणीबद्ध सद के लिए आयात अथवा निर्यात के लिए किया व्यक्ति को लाइसेंग वे सकती है।
- 13. त्रायातक-निर्वातक कोड नम्बर---इम नीति के किसी अन्य प्रत्यधान द्वारा विशेषतया प्राप्त छूट के स्रतिरिक्त श्रायातक-निर्वातक कोड नम्बर (आई.ई.मी.) के बिता कोई भी व्यक्ति निर्वात प्राप्ता नहीं कर सकेगा ।
- 19 कानून का श्रनुपालन:--प्रश्तिक निर्मातक या श्रायातक को शायात एवं निर्मात (नियंत्रण) श्रधिनियम, 1947, इसके स्वतर्गन बनाए गए श्रादेशों, इस नीति के शावत्रानों तथा उसको दिए गए लाइसेंस की शर्तों का श्रनुपालन करना होगा।
- 20' नीति का स्पष्टीकरण:—इस नीति में दिए गए किसी भी प्राथधान के स्पष्टीकरण के बारे में यदि किसी भी प्रकार का प्रका अथवा शंका उत्पन्न होती है तो ऐंग प्रका प्रथवा शंका को मुख्य नियंत्रक, श्रायात-निर्यात को भेजा जाएगा तथा उसका निर्णय अंतिम होगा।
- 21. नीति/प्रिकिया में ढील:—इस नीति अभवा प्रिकिया में ढील प्राप्त करने के अनुरोध की, आवेदक की वास्तविक कठिनाई अथवा नीति या प्रिकिया को कड़ाई से लागू करने पर ज्यापार पर प्रतिकृत प्रभाव पड़ने की संभावना पर, मुख्य नियंत्रक, आयात-निर्यात को आवश्यक ढील के लिए भेजा जाए तथा उन पर मुख्य नियंत्रक, आयात-निर्यात जैसा उचित समझे, ऐसा आदेश पारित कर सकते हैं।

ध्रध्याय---पांच

श्रायात

- 22. मुक्त श्रायात.—पूंजीयन मान, कच्चे माल, मध्यस्थीं, संघटकों, उपक्षीज्य पदार्थीं, श्रांतिरिक्त पूजीं, उपमाधित्रों, यन्त्रों और अन्य माल का श्रायात बिना किसी प्रतितन्थ है किया जा सकता है जब तक कि उनका श्रायान, श्रायान की निर्पेधात्मक सूची या इस नीति के किसी अन्य प्रावधान या उस मनय के लिए किसी श्रन्य लाग तानन द्वारा नियंतित न हो।
- 23. दास्तविक प्रयोक्ता गर्ते.—पंजीभन माल, कच्चा माल, मध्यन्थ, संघटक, उपभोज्य पदार्थ, श्रातिरिक्त पुर्चे, उपसाधिन्न, यन्त्र और श्रम्य सामान जिनके श्रायात पर प्रणिवन्ध नहीं है उनका श्रायान किसी भी व्यक्ति द्वारा किया जा सकता है चाहे वह वास्तविक प्रयोक्ता हो श्रथवा नहीं तथापि, यदि इपने श्रायात के निए लग्यतेन की जरूरत हो, तो वेदल वास्तविक प्रयोक्ता हो ऐसे माल का श्रायात तब तक कर सकता है जब तक कि लाइसेंस प्राधिकारी द्वारा वन्द न किया जाए।
- 24. पुराना माल.---पुराने पूंजीगल भाल और श्रन्य पुराने माल काशायात तब तक नहीं किया जा मकता है जब तक कि इस नीति हारा सन्भति न दी गई हो या उस ' सम्बन्ध में जारी किए गए लाइमेंम के श्रनसार न हो ।
- 25. पुरानी मशीनों का लाइमेंस रे बिना ायात.—निम्नलिखित क्षेत्रों में पुराती मणोगों का प्रातात विना किपी लाइमेंस के किया जा सकता है:---
 - (क) मूप्रण और संबद्ध प्रक्रियाएं।
 - (ख) नोशाक/होजरी/तैयार माल ।

- (ग) चर्म संसाधन/चर्म परिष्करण/चमक्रे के सामान का विनिर्माण/चर्म परिधान विनिर्माण ।
- (ष) रखड़ और कैनवास फुटवियर ।
- (क) खेल के सामान।
- (च) विख्तु लैम्प।
- (छ) पैकिंग और पैकिंग करने की सामग्री।
- (ज) गढ़े हुए हाथ के औजार।
- (झ) तेल क्षेत्र की सेवाएं।
- (ञा) लेखन यंत्र ।
- (ट) समुद्री खाद्य पदार्थ।
- (ठ) इस प्राणय के लिए जारी सार्वजनिक सूचना के द्वारा विशिष्टी इत कोई ग्रन्य क्षेत्र ।
- 26. लाइसेंस के पुराने माल का श्रायात.—किमी श्रन्य पृराने प्रेगीगत अथवा श्रन्य पुराने माल के श्रायात की अनुमित लाइसेंस के महें दी जा सकती हैं।
- 27. शावेदन पत : पुराने पूंजीगत माल के आयान के लिए लाइसोंस प्राधिकारी में आवेदन किया जा सकता है सथा आवेदन पत्र में निम्नलिखित शर्ते होंगी :—
 - (क) पुराने संयंत्र, मशीनरी, उपस्कर तथा उपसाधिकों का पूर्ण विणिष्टिकरण और कीमत (कच्चा बीजक) और यदि उपलब्ध हो सो उसके साथ पूंजीगत माल की भ्रालग-ग्रलग कीमत, उखाइने की लागन, भाड़े और बीमे का भी वर्णन हो ;
 - (ख) संभरक द्वारा प्रस्तुत की गई निष्पादन गारंटी ;
 - (ग) ऐसे श्रायात वें समर्थन में कारण और पृष्ठभूमि जिसमें वे लाभ भी शामिल हैं जो विनिर्माण किए जाने वाले एवं निर्यात किए जाने वाले प्रस्ताबित उत्पादों की पुंजी लागत, उत्पादन तथा कीमतों में होंगे; और
 - (घ) उक्त पूंजीगन माल की मियाद और अविभिष्ट जीवन-प्रविध को सत्यापित करते हुए किसी ब्यावमायिक निष्पक्ष सनदी इंजीनियर या जिस देश से पुराने पूंजीगत माल का भ्रायात किया गया हो उसके इंजीनियरों की किसी संस्था से निर्धारित प्रपक्ष में एक प्रमाणपक्ष ।
- 28. पुरानी मशीनरी के श्रायात की शर्ते —पुराने प्ंजीगत माल सात वर्षों से श्रधिक पुराने नहीं होंगे तथा उनकी न्यूनतम श्रविशष्ट जीवन श्रविध पांच वर्षों की होगी। सभी मामलों में पुराने पूंजीगत माल का श्रायात वास्तविक प्रयोक्ता गर्ते के श्रध्यधीन किया आएगा।
- 29. अन्य पुराना माल पूंजीगत माल को छोड़कर सभी पुराने माल का आयात केवल इस सम्बन्ध में जारी किए गए किसी लाइसेंस अथवा सार्वजनिक सूचना के अनुसार ही किया जासकता है।
- 30. पूनः निर्यात आधार पर आपात---निम्नलिखित पुंजीगत मार्च का आयान पुनः निर्यात आधार पर विना किसी लाईसेंस के किया जा सकता है:
 - (क) सीमाण्डलेक प्राधिकारियों की सन्तुष्टि के भ्रानुसार बन्धपद्म/बैंक गारन्टी देने पर मरम्मत के लिए पूंजीगत माल का भ्रायात ;
 - (ख) जिंग्स, फिक्सचर्स, ढाईज और पैटर्नेस(कन्टूर रोलर डाइज सहित), माउल्ड्स (डाई कास्टिंग के लिए मउल्ड्स सहित) और मुद्रूण औजार, और
 - (ग) निर्माण मशीनरी तथा ग्रन्य उपस्कर वशर्त कि सीमाशुल्क प्राधिकारियों की सन्तुप्टि से बन्ध-पत्न/बैक गारन्टी प्रस्तुत की गई हो ।
- 31. विदेश में मरम्मत कार्य और बिना लाइसेंस पुनः आयात.—श्रागतित पूंजीगत माल या उनके पुर्जे (उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं को छोड़कर) मरम्मत के लिए विदेश भेजे जा सकते हैं और श्रिना किसी लाइसेंस के पुनः श्रायात किए जा सकते हैं लेकिन शर्त वह है कि सीमागुल्क विभाग इस तथ्य से सन्तुष्ट हो कि पुनः श्रायातित माल वही है, जिसका निर्यात किया गया था।

- 32. लाइसैंस के श्रधीन.—देशी पूंजीगत माल जिसमें आयातित संघटक लगे हों यदि मरम्मत के लिए उन्हें विदेश भेजा जीना श्रावश्यक हो, तो उसे पुनः श्रायात के श्राधार पर मुख्य नियंत्रक, श्रायात-निर्यात से ऐसे निर्यात के लिए एक लाइसेंस श्राप्त करने के बाद भेजा जा सकता है।
- 33 प्रयुक्त मशीनरी और उपस्कर का श्रायात.—विदेश में परियोजनाओं के पूरा हो जाने के बाद परियोजना टैकेदार विदेशी परियोजना के लिए कय और इस्तेमाल का साक्ष्य प्रस्तुत करने के आधार पर बिना लाइसेंस के प्रयुक्त निर्माण उपस्कर मशीनरी संबंधित श्रितित्वत पूर्जे, श्रीजार तथा महायक करण श्रायात कर सकते हैं। विदेश में परियोजनाओं के पूरा होने के बाद प्रयुक्त कार्यालय उपस्कर तथा बाहन भी बिना लाइसेंस के श्रायात किए जा सकते हैं लेकिन गर्न यह होगी कि इनका कम से कम एक वर्ष तक इस्तेमाल किया जा चुका हो।
- 34 उन्होरों हे आवात की अनुमति असवाब निजनावणी के अनुसार दी जाएगी । किसी अन्य मामले में उपहारों के आयात के लिए ऐसे संस्थानों और प्रतिष्ठानों द्वारा सीमाणुल्क निकासी परिमिट (सीपीपी) अपेक्षित होंगे जो इस संबंध में विनिद्धिट किए जाए । आवेदन करने पर लाइमैंसिंग प्राधिकारी द्वारा मामले के गुणावगुण पर विचार करने के उपरान्त सीमाणुल्क निकासी परिमट जारी किया जा सकता है । तथापि इस प्रकार को आयात विदेश अंशदायी (विनियमन) अधिनियम, 1976 के अध्यक्षीन किया जाएगा।
- 35. खुले सागर में बिकी---भारत में श्रायात करने के लिए खुले सागरों में माल की बिकी इस नीति और कुछ समय के लिए प्रचलित किसी अन्य कानून के प्रधान दी जाएगी।
- 36. पड़ोसी देशों के साथ व्यापार.--पड़ोसी देशों के साथ व्यापार के रूपमले में मुख्य नियंक्षक द्रायात-निर्यात सम**य-**समय पर यथाद्रपेक्षित विशेष प्रनुदेश जारी करसकता है।

ग्रध्याय छः

नियति संबर्धन पूंजीगत माल स्कीम

- 37. स्कीम.---निर्वात सैवर्धन पूंजीगत माल (ईपीसीजी) स्कीम के अंतर्गत लाइसेंस से पूंजीगत माल का भायात किया जा सकक्ता है।
- 38. रियायती गुल्क पर श्रायात. पूंजीगत माल का आयात ऐसे सामान की लागत बीमा भाड़ा मूल्य के 25% या 16% सीमागुल्क की रियायती दर पर किया जा सकता है बगर्ते कि ऐसे आयातित माल के लागत-श्रीमा भाड़ा मूल्य के कमशः तीन गुने या चार गुने के बराबर निर्यात श्राभार को ऐसे आयातित माल की पहली खेप की सीमागुल्क निकासी की तिथि से कमशः चार या पांच वर्षों की अवधि में पूरा कर लिया जाए।
- 39. पान्नता.—िकसी विनिर्माता निर्यातक को इस स्कीम के तहत पूंजीगत माल का अध्यात करने का पान्न तभी माना जाएगा यदि वह कम से कम तीन वर्ष से निर्यात रूप से निर्यात कर रहा हो। फिर भी, इस स्कीम के तहत पूंजीगत माल का आयात करने की अनुमति अन्य विनिर्माता निर्यातकों को गुण-दोष के आधार पर दी जाएगी, जो तए निर्यातक हैं अध्या जिनका निर्यात निर्धात वर्ष से कम अविध का हो। इस स्कीम के अंतर्गत परीक्षण उपकरण, अनुसंधान एवं विकास उपकरण और पैकेजिंग मणीनरी तथा ऐसी अन्य मणीनरी या उपस्कर जैसा कि विनिर्दिष्ट किया जाए, का भी आयात किया जा सकता है।
- 40. पुरानी मशीनरी आबात करने के लिए गर्नी.—इस स्कीम के अंतर्गत नई और पुरानी दोनों प्रकार को मशीनरी आयात की जा सकती है। पुराने पूंजीगत माल का आयात करने के मामले में अध्याय-पांच में निहित सामान्य गर्ने लागू होंगी और लाइसेंमिंग प्राधिकारी कोई श्रन्य गर्ने भी लगा सकते हैं।
- 41. निर्यात आभार आयातक द्वारा पूरा किया जाने वाला निर्यात आभार उसके द्वारा किए गए किसी घन्य धाभार से अलग होगा और वह विगत तीन लाइमेंसिंग वर्षों के दौरान किए गए निर्यात के औसन स्तर के धितरिक्त होगा। इसके अतिरिक्त स्कीम के अंतर्गत निर्यात आभार आयात किए जाने हेतु अनुमति पूर्जागत माल के साथ विनिर्मित उत्पादों के सीधे निर्यातों के रूप में होंगे। इस प्रयोजन हेतु अभिग्रहीत निर्यातों तथा तीसरी पार्टी के निर्यातों को हिसाब में नहीं लिया जाएगा।
- 42. वास्तविक प्रयोक्ता शर्त स्कीम के अंतर्गत पूंजीगत माल का आयात वास्तविक प्रयोक्ता शर्त के अध्यधीन किया जाएगा । 852 G1/92---2

- 43. द्यावेदन की प्रक्रियाः—इस स्कीम के अंतरगत ताइमेंग की मंज्री हैं लिए ग्रावेदन इस संबंध में त्रिनिदिश्ट प्रक्रिया के श्रनुसार लाइसेंसिंग प्राधिकारी के पास किया जाएगा।
- 44. कम्प्यूटर सिम्टम का श्रायात.—कम्प्यूटर सिस्टम का श्रायात भी उपर्युक्त पैराग्राफ 37 से 42 द्वारा णासित होगा ।
- 45 बन्धपत और बैंक गारन्टी.—विनिर्माता निर्धातक के लिए लाइसेंस में उल्लिखित मूल्य और अवधि के लिए निर्धारित प्रपक्ष में तैंक गारन्टी के साथ लाइसेंसिंग प्राधिकारी के पास एक बंधपत्र निष्पादित करना ग्रावण्यक होगा।
- 46. संघटकों का आयात.—पूंजीगत माल आयात करने के लिए ई.पी.सी.जी. स्कीम के अंतर्गत कोई लाइसेंसधारी इसके आयात के बजाय पूंजीगत माल किसी घरेलू संभरक से ले सकता है। ऐसे स्रोत के लिए पार्टियों के बीच पक्का ठेका होने पर घरेलू संभरक ई.पी.सी.जी. लाइसेंसधारी के लिए उक्त पूंजीगत माल के वितिमणि एवं आपूर्ति के लिए इस योजना के अंतर्गत ऐसे संघटकों के लागत बीमा भाड़ा मूल्य के 15% के सीमाशुरूक की रियायती शुरूक दर पर संघटकों के आयात के लिए आयेदन कर सकता है। तथाणि, पूंजोगत माल के आयात से संबंधित निर्यात आभार ई पी.सी.जी. साइसेंसधारी द्वारा पूरे किए जाते रहेंगे।

श्रध्याय--सात

शुल्क मुक्त स्कीम

- 47. शुल्क मुक्त स्कीम.—शुल्क मुक्त स्कीम के अंतर्गत निर्यात उत्पादन के उद्देश्य के लिए शुल्क मुक्त कच्चे माल, संघटकों , मध्यस्थों, उपभोज्य, पुजों, स्रतिरिक्त पुजों और पैंकिंग सामग्रियों का श्रायात निम्नलिखित पांच श्रेणियों के लाइसेंस के श्रधीन सक्षम प्राधिकारी द्वारा शनुमित किए जायेंगे:
- 48. अग्रिम लाइसेंस.—कच्चे माल, संघटकों, मध्यस्थों, उपभोज्यों, पुजीं, श्रनिवार्य श्रतिरिक्त पुजीं सिहत श्रतिरिक्त पुजीं, पैंकिंग सामग्रियों का शुल्क गुक्त श्रायात करने के लिए अग्रिम लाइसेंस दिए जायेंगे। ऐसे लाइसेंस निर्धारित समयबद्ध निर्यात भ्राधार को पूरा करने तथा मूल्य संयोजन की शर्व जो भी निर्धारित की गई हो के अधीन न होंगे। श्रिम लाइसेंस मा तो मूल्य श्राधारित होंगे अथवा मात्रा पर अधारित होंगे। निर्धारिक मूल्य श्राधारित या मात्रा श्राधारित श्रीम लाइसेंस के लिए श्रावेदन कर सकता है।
 - 49. मूल्य श्राधारित श्रप्रिम लाइसेंस ---पूल्य श्राधारित श्रप्रिम लाइसेंस में निम्नलिखित विशिष्टीकृत होगा :---
 - (क) श्रायात श्रीर निर्यात की जाने वाली भदों के नाम श्रीर विवरण;
 - (ख) श्रायात का लागत बीमा भाड़ा मूल्य ;
 - (ग) निर्यात उत्पाद का जहाज पर्यान्त निःशुल्क मूल्य ; श्रौर
 - (घ) मार्वजनिक भूजना द्वारा प्रकाशित मानक निवेश-उत्पादन मानदण्ड के श्रनुसार मूल्य संयोजन या उन मदों के संबंध में जिनके तिए ऐसे नानदण्ड प्रकाशित नहीं किए गए हैं, उनका मूल्य संयोजन जैंसा कि सक्षम प्राधिकारी इतरा निर्धारित किया जाए। संवेदनशील मदों के बारे में, श्रथवा जहां सक्षम प्राधिकारी ऐसा करना श्रावश्यक समक्षे, श्रायत की जाने वाली प्रत्ये ह संवेदनशीन मद की माला एवं लागत-बीमा-भाषा मूल्य का उल्लेख भी लाइसेंस में निर्धारित किया जाएना।
 - 50. साला पर आधारित अग्रिम लाइसेंस.--मात्रा पर आधारित अग्रिम लाइसेंस में निम्नलिखित विणिष्टीकृत होगा :--
 - (क्) श्रामात एवं निर्धात किए जाने वाली मदों के नाम व विश्वरण
 - (ख) श्रायात किए जाने वाली प्रत्येक भद की मान्ना;
 - (ग) श्रायात ६३३ जाने वाली प्रत्येक मद का लागत-बीमा भाषा मूल्य;
 - (घ) निर्यात को मात्रा और जहाज पर्यन्त निःणुल्क मृत्य; श्रीर
 - (इ) मूल्य संयोजन ।
- 51. निवेश-उत्पाद मानदण्ड.---ऐसे लाइसेंसों में ममाबिष्ट किए जाने वाले मान्ना के मानदण्ड सार्वजनिक सूचना द्वारा प्रकाशित मानक निवेश-उत्पादन मानदण्ड के अनुसार होंगे या, उन मदों के संबंध में जिनके लिए ऐसे मानदण्ड प्रकाशित नहीं किए भए है, मान्ना के मानदण्ड सक्षम प्राधिकारी द्वारा नियन किए जायेंगे।

- 52. मानदण्डों में परिवर्तन.—मुख्यालय को श्रप्रिम लाइसेंसिंग समिति (ए एल सी) की संस्तुति पर मुख्य नियंत्रक, ग्रायात-निर्यात मानदण्डों में परिवर्तन या ग्रतिरिक्त मानदण्ड निर्धारित कर सकता है।
- 53. नम्य मूल्य संयोजन. मूल्य संयोजन प्राप्त फरने के लिए निर्यातक को नन्यता उपलब्ध कराने के लिए उसी क्षेत्र में निर्यात उत्पादों की श्रेणी या श्रेणियों के लिए मात्रा या मूल्य आधारित श्रियम लाइसेंस प्रदान किया जाए। लाइसेंस में श्राने वाली प्रत्येक ऐसी श्रेणी के लिए श्रायात श्रीर निर्यात के मूल्य को प्राप्त करने के लिए निर्यात श्रीभार एवं मूल्य संवर्धन को प्राप्त किया माना जाएगा। यह स्कीम फार्मास्युटीकल्ल सैक्टर श्रीर ऐसे अन्य सैक्टरों के संबंध में शामिल को जाएगी जैसा भी इस संबंध में मुख्य नियंत्रक, श्रायात-निर्यात द्वारा नियत किया जाए।
- 54. स्वतः घोषित, पास बुक स्कीम.—नियितिकों को कुछ श्रेणियों के लिए श्रिम लाइसेंस स्कोभ के श्रवीन स्वतः प्रमाणीकरण श्रीर स्वतः घोषणा की एक स्कीम श्रारम्भ की जा रही हैं।

स्टार व्यापार सदन, व्यापार सवन श्रीर निर्यात सदन श्रापस में इस स्कीम का उपयोग करने के पान होंने। मुख्य नियंन्नक श्रायात-निर्यात द्वारा इस बारे में विशिष्टिकृत किए जाने वाले श्रन्य उत्पादों के निर्यात कभी श्रापस में इस स्कीम का लाभ उठा सकते हैं।

इस स्कीम के भ्रधीन निर्यातक को आयात और निर्यात की जाने वाली गदीं का नाम भ्रीर ब्योरा तथा ऐसे निर्यात के माध्यम से प्राप्त किए जाने वाला मूल्य संयोजन बताने वाली पास बुक जारी की जाएगी। निर्यातक को पास बुक के आयात की तरफ आयात की जाने वाली मदों का ब्योरा श्रीर श्रायात का लागत बीमा भाड़ा मूल्य की प्रविष्ट करने की अनुमति होगी। वह प्रमाणित और घोषणा करेगा कि विषय वस्तु सही है। ऐसे स्वतः प्रमाणीकरण और स्वतः घोषणा के श्राधार पर सीमा गुल्क प्राधिकारी कच्चे माल, संघटकों, मध्यस्यों, उपभोज्यों, श्रात्वार्य प्रतिरिक्त पुजों सहित अतिरिक्त पुजों, खड़ों श्रीर पैंकिंग सामगी आदि के श्रायात की भनुमति वेगा। निर्यातक निर्यात किए जाने के बाद, पास बुक में निर्यात पक्ष भी और निर्यात की गई मदों का नाम और ब्योरा तथा प्राप्त मूल्य-संयोजन की प्रविष्टि करेगा। यह प्रमाणित और घोषणा करेगा कि विषय वस्तु सही है। स्वतः प्रमाणीकरण और स्वतः घोषणा के श्राधार पर सीमागुल्क प्राधिकारी किए जाने वाले निर्यात को प्रनुमति करेगा।

पासबुक एक वर्ष की अवधि के लिए वैंध होगी और समय-समय पर उसका नवीनीकरण करवाया जा सकता है।

पासबुक धारक द्वारा श्रायात के लागत बीमा भाड़ा मूल्य के बराबर बैक गारन्टी/विधिक वचनबद्धता (एल.यू.टी.) लाइसेंसिंग प्राधिकारी को प्रस्तुत की जाएगी। बैंक गारन्टी/विधिक बचतबद्धता आयात के लागत बीमा भाड़ा मूल्य के श्रनाधि राणि के लिए वैध रखी जाएगी। जिसके मद्दे श्रभी निर्यात किया जाना है।

- 55. ग्रिग्रम मध्यवर्ती लाइसेंस.—मध्यवर्ती उत्पादों के विनिर्मानाग्रों द्वारा सुनिश्चित समयबद्ध ग्रापूर्ति प्रबन्ध के ग्रंतर्गत गुल्क मुक्त स्कीम के लाइसेंस धारक ग्रन्ततः निर्यातक को सप्लाई करने के लिए शुल्क मुक्त कच्चे माल, संघटकों, मध्यस्थों, धपभोज्यों, पुजौं, ग्रितिरक्त पुजों ग्रीर पैकिंग सामग्री के शुल्क मुक्त ग्रायात के लिए ग्रिग्रम मध्यवर्ती लाइसेंस दिए जायेंगे मध्यवर्ती लाइसेंसधारी को यह विकल्प होगा कि वह शुल्क लाइसेंसधारी को ग्रापूर्ति को प्रथवा विभाष्टि से अविध में तथा विभाष्टि मूल्य संयोजन पर सीधे ही निर्यात कर ले। प्रग्रिम लाइसेंस के लिए लागू मूल्य तथा मांत्रिक मानवण्ड मध्यवर्ती अग्रिम लाइसेंसों पर भी लागू होंगे।
- 56. विशेष श्रग्रदाय लाइसेंस.—विशेष श्रग्रदाय लाइसेंस कच्चे माल, संघटकी, मध्यस्थी, उपमोज्यों, पुर्जी, श्रानिवार्य श्रातिरिक्त पुर्जी सहित श्रातिरिक्त पुर्जी पैकिंग सामग्रियों भौर श्रानिवार्य श्रातिरिक्त पुर्जी के स्वतंत्र श्रायात के लिए प्रमुख/उप-ठेकेदारों को निम्न मामलों में प्रधान किए जाते हैं:——
- (1) संयुक्त राष्ट्र संगठनों को या संयुक्त राष्ट्र और अन्य बहुराष्ट्रीय ग्रभिकरणों े सहायता कार्यक्रम के अंतर्गत की गई श्रापूर्ति तथा मुक्त विदेशी मुद्रा में किया गया भुगतान:
 - (2) निम्निलिखित बहुपक्षीय या द्विपक्षीय श्रिकिकरणों/निधियों या अंतर्राष्ट्रीय उपयोगी बोली के तहत या उन श्रिकिकरणों/ निधियों की प्रक्रियाओं के श्रनुसार सीमित निविदा पद्धति के तहत केन्द्र सरकार द्वारा श्रिधिसूचित किसी श्रन्य श्रिकिकरण/निधि द्वारा वित्तपोपित परियोजनाओं को माल का संभरणः----
 - (1) प्ररव प्रार्थिक विकास के लिए श्राबुधाबी फण्ड
 - (2) एशियाई विकास बैंक (ए. डी.बी.)
 - (3) के. एफ. डक्स्यू, के माध्यम से जर्मन सहायता
 - (4) अंतर्राष्ट्रीय पुनः निर्माण ओर विकास बैंक (म्राई. बी. म्रार. डी./म्राई.डी.ए.)।

- (5) कृषि विकास अंतर्राष्ट्रीय निधि (म्राई एफ ए डी)
- (6) ग्ररब ग्राथिक विकास के लिए कुनैती निधि
- (7) पैट्रोल निर्यातक देश संघनिधि (ओपेक)
- (8) सऊदी विकास निधि (एस एफ डी)
- (9) संयुक्त राज्य अंतर्राष्ट्रीय विकास अभिकरण (यू.एस.ए, ब्राई.डी.)
- (10) विदेश आर्थिक सहयोग निधि के माध्यम से मार्गीकृत येन केडिट (ओ.ई.सी.एफ.)
- (3) निर्यात संसाधन क्षेत्र यूनिटों तथा निर्यात ग्राभिमुख यूनिटों को इस सम्बन्ध में जारी सार्वजनिक सूचना द्वारा विनिद्धिष्ट ऐसे माल का या विशेष ग्रग्रदाय लाइसेंस में विनिद्धिष्ट किसी श्रम्य माल का संभरण।
- (4) तेल और प्राकृतिक गैस श्रायोग (ओ एन जी सी) श्रायल इंडिया लि. (ओ ग्राई एल) और भारतीय गैस प्राधिकरण (जी.ए.ग्राई.एल.) के श्रपती दोनों समुद्री एवं तटवर्ती श्रन्वेषण ट्रिलिंग उत्पादम संक्रियाओं के लिए कच्चे माल, संघटकों, मध्यस्थों, उपभोज्यों पुर्जों उपस्करों यंत्रों, सहायक उपकरणों, औजारों और ग्रतिरिक्त पुर्जों की श्रापूर्ति ;
- (5) भारतीय मुख्य ठैकेदारों द्वारा उर्वरक संयंक्षों के लिए पूंजीगत माल का संभरण यदि संभरणों श्रन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगी बोली के श्रधीन किया गया है।
- 57. विशेष श्रप्रदाय लाइसेंस मात्रा पर श्राधारित होंगे और निवेश उत्पादन मानदण्ड सक्षम**े प्राधिकारी द्वारा** नियत किए जायेंगे ।
- 58. अग्रिम सीमाशुल्क निकासी परिमट.—अग्रिम सीमाशुल्क निकासी परिमट (ए.सी.सी.पी.) कार्य प्रयोजन मरम्मत, सेवा, पुनः स्थापना, सुधार, नवीकरण और इनमें प्रतिरूप, प्रारेख, जिग्स, जीजार, फिक्स चर्स, मोल्डस, टैंकल्स नथा औजारों जोिक निर्यात श्रादेश से प्रत्यक्ष रूप में संबंधित हों और जिनकी श्रापूर्ति विदेशी केता द्वारा निःशुल्क की जाती है लेकिन जिनका निर्यात उत्पाद के साथ ही पुनः निर्यात किया जाना होता है के लिए शुल्क मुक्स माल के आयात के लिए विया जाता है। श्रायातित मोल्डों, प्रतिरूपों श्रादि के बनाए रखने के लिए किए गए आवेदनों पर निर्यात श्राभार पूरा होने के बाद और आयात की तिथि को लगने वाली सीमाशुल्क के भुगतान तथा सक्षम प्राधिकारी द्वारा लगाई गई अन्य शर्तों के पूरा करने पर श्रीम लाइसेंसिंग सिनिंस द्वारा श्रनुमित वी जा सकती है।
- 59. पाक्रता.—कोई व्यक्ति जो एक व्यापारी निर्यातक या विनिर्माता निर्यातक है, श्रायात-निर्यात कोड संख्याधारी हैं विशिष्टि निर्यात श्रावेण ∤प्रावेण साख-पक्ष धारक हैं और स्वयं के नाम पर निर्यात लाभ की वसूली की स्थिति में है यह गुरूक मुक्त लाइमेंसों के लिए ग्रावेदन कर सकता है।
- 60. मूल्य संयोजन इस सम्बन्ध में जारी सार्वजनिक सूचना के द्वारा ग्रयवा विनिर्दिष्ट मूल्य संयोजन मानदण्ड शुल्क मुक्त लाइसेंसों पर लागू होंगे। इन लाइसेंसों में सूचीबद्ध न होने वाले उत्पादों पर 33 प्रतिशत का न्यूनतम मूल्य संयोजन होगा। तथापि, श्रग्निम लाइसेंसिंग समिति, कम मूल्य संयोजन पर किन्तु 25 प्रतिशत से कम नहीं, लाइसेंस देने के भन्रोधों पर नकनीकी श्राधारों पर विचार कर सकती है।
- 61. रुपया भुगतान क्षेत्र देशों को निर्यात .---रुपया भुगतान क्षेत्र को निर्यात इस संबंध में समय-समय पर जारी होने वाली सार्वजनिक सूचनाओं द्वारा यथा निर्धारित मूल्य संयोजन के ब्रनुसार होगा।
- 62. उत्पादन कार्यक्रम के अंतर्गत लाइसेंस.—-निर्यातक खिना किसी निर्यात ग्रादेश के, विशेष ग्रग्रदाय लाइसेंस से फिल्न शुल्क मुक्त लाइसेंस के लिए आवेदन कर सकते हैं। निर्यात आदेश के बिना आवेदन के मामले में लाइसेंस का मूल्य गत तीन वर्षों के निर्यात निष्पादन के जहाज पर्यन्त नि:शुल्क मूल्य के औसत के बराबर से ग्रिधिक नहीं होगा।

विनिर्माता एवं व्यापारी जिनका गत तीन वित्तीय वर्षों के दौरान वार्षिक औसत कारोबार 5 करोड़ रुपये है वे बिना किसी निर्यात आदेश के निर्या उत्पादन की अपनी मांगों को पूरा करने के लिए विशेष श्रग्रदाय लाइसेंस से भिन्न शुल्क मुक्त लाइसेंसों के लिए श्रावेदन कर सकते हैं। ऐसे लाइसेंस का मूल्य वार्षिक औसत कारोबार के 25 प्रतिशन से शक्कि नहीं होना चाहिए। 63. निर्यात ग्राभार.--इस स्कीम के श्रधीन जारी किए गए लाइसेंस पर उपर्युक्त निर्यात आभार होगा जिसको निस्न लिखित निर्धारित श्रव्यधियों के श्रन्दर पूर्ण किया जाना जरूरी होगा -

क्रम सं. निर्यात उत्पाद	प्र यधि
1.´ परियोजना/टर्न-की परियोजना की मर्दे ।	निर्यात /संभरण की संविद्याँ प्रविधि तक
2. इंजीनियरिंग मर्दे [उपयु कत (1) में ग्राने वाली मदों के ग्रतिरिक्त]	12 महीने
 कम्प्यृंटर हाईवेयर्स पैरीफरल्स कैसेट्स (ग्राडियो या वीडियो) 	6 महीने
4. ग्रन्य	9 मही्ने

निर्यात आभार को पूरा करने की अवधि में वृद्धि के अनुरोध पर लाइसेंसिंग प्राधिकारी अथवा सक्षम प्राधिकारी द्वारा विचार किया जा सकता है।

- 64. प्रिमि रिलीज ग्रादेश:—-शुल्क मुक्त लाइसेसधारी को यह विकल्प है कि वह या तो सीधे लाइसेंस के प्रधीन ग्रनुमित मवों का श्रायात करे या विदेशी मुद्रा/भारतीय रुपयों में नामोदि्देण्ट श्रिमि रिलीज श्रादेश के मद्दे देशीय स्नोतों/सरणीक्षद्ध ग्रामिरणों में प्राप्त करें। ग्रिमि रिलीज श्रादेश श्रावेदन करने पर उस लाइसेंसिंग प्राधिकारी द्वारा जिसने शुल्क मुक्त लाइसेंस जारी किया है ग्रथवा इसके लिए प्राधिकात ग्रन्थ लाइसेंस प्राधिकारी द्वारा दिया जा सकता है।
- 65. स्त्रोत एवं निकासी:—-शुल्क मुक्त लाइसेंस धारकं पहले से श्रायातित तथा सीमा गोदाम में रखे माल को प्राप्त श्रयवा निकाल सकता है। शुल्क मुक्त लाइसेंसधारक निर्यात संसाधित क्षेत्र/यूनिटों अथवा शत-प्रतिशत निर्यात श्रिममुख यूनिटों में बिनिर्मित या संसाधित माल को प्राप्त अथवा निकाल सकते है। किसी मामले में शुल्क मुक्त लाइसेंस-धारक लाइसेंसिंग प्राधिकारों से श्रीयम रिलीज श्रादेश प्राप्त करने हेतु श्रावेदन करेगा और प्राप्त करेगा।
- 66. लाइसेंस की प्रत्यामा में निर्यात:—लाइसेंसिंग प्राधिकारी द्वारा इस स्कीम के श्रन्तर्गत आवेदन प्राप्त होने की तारीख से किया गया निर्यात/संभण निर्यात श्राभार अदा करने पर स्वीकार किया जा सकता है। सीमामुल्क प्राधिकारी द्वारा मुल्क मुक्त मिर्पिग बिलों से द्रावेक णिपिंग बिलों में परिवर्तन की श्रनुमित भी दी जा सकती है यदि लाइसेंसिंग प्राधिकारी द्वारा आवेदन श्रस्वीकृत या परिवर्तित कर दिया गया है।
- 67. अग्रिमं लाइसेंस को ट्रांसफर करना: निर्यात आभार पूर्ण होने, निर्यात वसूली पूरी कर ली हो और बैंक गारन्टी/विधिक वचनबञ्चता की विमुक्ति पर मूल्य और गुणवता पर भाधारित अग्रिम लाइसेंसों या उनके मद्दे श्रायातित सामग्री मुक्त रूप से स्था-नाम्तरणीय होगी। यह सुविधा उन मामलों में उपलब्ध नहीं होगी। जहां केन्द्रीय उत्पाद नियमों के नियम-191-ख के तहत मोडबेट/प्रोफार्मा ऋणसुविधा का उपयोग कर लिया गया है।
- 68. ग्रनिवार्य श्रितिरिक्त पुर्जे:---ऐसे मामलों में जहां इस स्कीम के अन्तर्गत अनिवार्य श्रितिरिक्त पुर्जों का आयात श्रनुमित कर दिया गया है वहां ऐसे श्रावश्यक श्रितिरिक्त पुर्जों का लाइसेंस के सूल्य के 5 प्रतिणत की श्रिधिकतम सीमा तक ऐसे ग्रनिवार्य प्रतिरिक्त पुर्जों के श्रायान की अनुमित दी जा सकती है।
 - 69. निपित मदें --इस स्कीम के अधीत आयात की निषेधात्मक सूची में दी गई वर्जित मदों का आयात निषिद्ध है।
- 70. शुल्ल वापसी/अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य पुनः श्रवायगी की स्वीकार्यताः—इस स्कीम के अन्तर्गत निर्यात किए गए उत्पादों पर कोई शुल्ल वापमी तथा अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य पुनः श्रवायगी (श्राई पी श्रार एसं) अनुभेय नहीं होगा ।
- 71. दण्ड:--इस स्कीम के अन्तर्गत िमसी लाइसेंसधारक के निर्यात श्राभार को पूरा करने में श्रसकल होने पर या किसी लाइसेंसिंग मर्त का उल्लंघन करने पर वह केन्द्रीय मरकार द्वारा इस श्राणय के लिए जारी किए गए श्रादेश के श्रन्तर्गत निर्धारित वंड का भागी होगा।
- 72. सोने और चांदी के आभूषणों तथा वस्तुग्रों के लिए श्रप्रिम लाइमेंस के लिए स्कीम:—-निम्न सोने श्रीर चांदी के श्राभूषणों व वस्तुश्रों के शुल्क मुक्त श्रायाल के लिए श्रप्रिम लाइसेंस दिया जा सकता है।
 - (1) गोल्ड माउन्टिंग्स साकेट्स फोम्स भीर 18 कैरेट तथा कम की फाइन्डिंग्स; श्रीर
 - (2) चांबी माजिन्टंग्स साकेटस फीम्स और फाइन्डिंग्स श्रादि ।

- 73. शर्ते:---यह स्कीम श्रपरियर्तनीय साखपद स्वीकृति के मद्दे दस्तावेज श्रौर/या मुपुर्दगी श्राधार पर नकद भुगतान की श्रवायगी में सर्मीयत निर्यातों पर सीमित होगी। सीमा शुल्क प्राधिकारियों द्वारा निर्दिष्ट विशिष्ट पत्तनों से ही श्रायात श्रनुमेय होगा।
- 74. निर्यात आधार:--निर्यात केवल पूर्व आयात के मद्दे अनुमित होना । निर्यात-आधार आयात की प्रथम परेषण की तिथि से आरम्भ होना और उसे जनत तिथि से 120 दिनों के अंदर पूर्ण किया जाना अभेक्षित होना ।
- 75. मूला संयोजन—मूल्य-संयोजन की गणना उस मूल्य पर की जा सकती है जिस पर सौना (छीजन सहित) और चांदी तत्व (बिना छीजन के) श्रायात किया गया है। भाजिन्दंग्स, फाइन्डिंग्स श्रादि के लागत-बीमा-भाष्ट्रा मूल्य को भी घ्यान में रखा जाएगा श्रीर उनका श्रायात/निर्यात बराबरी के श्राधार पर होगा। सोने/चांदी के आभूषणों श्रीर वस्तुश्रों के लिए न्यूनतम मूल्य संयोजन कमणः 15 प्रतिणत श्रीर 25 प्रतिशत है।

जा मकती है। सोने की माउन्टिंग्स/फाइंन्डिंग्स म्नादि पर भार में 3 प्रतिशत होने की छीजन अनुमित है। यदि निर्यात का जहाज 76. वेस्टेन या हानि---परिणिष्ट II की तालिका में यथानिर्दिष्ट अनुसार सोने की छोजन या विनिर्माण में हानि अनुमित की पर्यन्त निःशुल्क मूल्य निर्धारित निर्यात-प्राधार से अधिक है तो प्रक्रिया पुस्तक में निर्धारित फार्मूले के अनुसार प्राधिक्य मूल्य पर रत्न प्रतिपृत्ति लाइपेंस जारी किया जा सकता है।

77. इस श्रध्याय के प्रयोजन के लिए "मूल्य संयोजन" प्रतिशत के रूप में अभिव्यक्त होगी श्रौर उसकी गणना निम्नलिखित फार्मूले के श्रनुसार होगा :

बी ए मूल्य संयोजन है

ए----लाइसेंस में शामिल उत्पाद के निर्यात से वसूल किया गया जहाज पर्यन्त निःशुल्क मूल्य है ग्रौर बी----लाइसेंस में शामिल श्रायातित निवेश का लागत-बीमा-भाड़ा मृल्य है।

श्रध्याय-साठ

हीरे, रहन और जैवरात निर्यात संवर्धन स्कीम

78. रत्न श्रीर जेबरात के लिए स्कामः--रत्न श्रीर जेबरात निर्वातक इस सम्बन्ध में विनिर्विष्ट प्रक्रिया के श्रनुसार सक्ष प्राधिकारी में प्रतिपूर्ति लाइसेंस श्रीर हीरे/डी टी सी श्रग्रदाय श्रनुज्ञापत्र प्राप्त करके श्रपने निवेशों का श्रायात कर सकते हैं।

- 79. प्रतिपूर्ति ताइसेंस:—परिजिष्ट एक में सूचीजद रत्न भौर जेवरात उत्पादों के निर्यातक, अपने निवेशों के आयात भौर प्रतिपूर्ति के लिए उनत परिजिष्ट में उत्लिखित दर पर भीर उसमें दी गई मदों के लिए, प्रतिपूर्ति लाइसेंस प्रदान किए जाने के पात होंगे। इस प्रकार के लाइसेंस हस्तान्तरणीय होंगे। हीरे/डी टो सी अप्रदाय लाइसेंसों के मद्दे निर्यात आभार को पूर्ण करने के लिए विद्या गया निर्यात इस लाभ के लिए पात नहीं होगा।
- 80. हीरे और डी. टी. सी. अग्रदाय लाइसेंस --कटे हुए और पालिंग किए हुए हीरों के निर्यात के लिए, तथा अपरिष्कृ हीरों के श्रायात के लिए हीरा और डी टी सी अग्रदाय लाइसेंस अग्रिम रूप में जारी किए जा सकते हैं। ये लाइसेंस ग्रहस्तांतरणीय होते हैं। सथापि श्रायातित मन्न को संमाधित करने के लिए दूसरे व्यक्ति को हस्तान्तरित किए जा सकता है लेकिन निर्यात ग्राधार पूर्ण करने का दायित्व लाइसेंस आरी का ही होगा। ये लाइसेंस प्रतिपूर्ति के 65 प्रतिशत के विलोम श्रनुपात में निर्धारित निर्यात ग्राभार वहन करेंगे, अर्थात् यदि लाइसेंस 65 अमरीकी जानर के लागत बीमा भाड़ा मूल्य के लिए जारी किया जाता है तो निर्यात ग्राभार का जहाज पर्यंत्त निःशुल्क मूल्य 100 अमरीकी जानर होगा। छूट प्रदान करते समय लाइसेंसधारी की वास्तविक हकदारी की उक्त परिशिष्ट में दिए गए समान निर्यात उत्पादों के लिए अनुभित प्रतिपूर्ति दरों के संदर्भ में पुनः गणना की जा सकती है। इस प्रकार की पुनः गणना करने से, यदि लाइसेंसधारी जी हकदारी 65 श्रमरीकी डालर से अधिक बनती है (जैसा कि उपर्युक्त इदाहरण में दर्शाया गया है) तो लाइसेंसिंग प्रधिकारी अपरिष्कृत हीरों के आयात हेतु उस मूल्य के बराबर, जो भी 65 अमरीकी डालर से अधिक हो, प्रतिपूर्ति लाइसेंस जारी करेंगे।
 - 81. होरा अप्रदाय लाइमेंस:--कोई निर्यातक निम्निलिखित अनुसार लाइसेंस के लिए आवेदन कर सकता है।
 - (क) यदि उसने पिछले तीन वर्षों से कम समय में कटे हुए श्रीर पालिश किए हुए हीरों का निर्यात किया है तो स्वयं के नाम में वैध निर्यात संविदा के पहे; अथवा
 - (আ) यदि उसने कम से कम 3 बर्पों का निर्यात किया है तो पिछले तीन लाइससिंग वर्षों में सर्वोत्तम वर्षे के निर्यात িজনায়ন और নাম ही ভমক 25 সনিগন के মহুই।
- 82. निर्यात भागार:--निर्यात भागार की पूर्ति नीमाणुल्क के जरिए पहली खेप की निकासी की नारीख से सात महीनां के भावर की जाएगी।

- 83. डी. टी. सी. यग्रवाय लाइमेंस -- किमी भी नियमित डी. टी. सी. साइट होल्डर के लिए वार्षिक डी टी सी लाइसेंस अनुमित हो सकता है जो कि उसके द्वारा परवर्ती वर्ष में प्राप्त सभी डी टी यी गाईटों (प्रित्याति लाइसेंस : द्दे निष्पादित साइटों को छोड़कर) के समेकित मूल्य के डेढ़ गुणा के बराबर होगा । इसमें डेढ़ प्रतिशत तक बमीशन/दलाली श्रिधभार भी जोड़ा जा सकता है वर्शते कि निर्यात प्राक्षार में तद्तु जप बृद्धि की गई हो । नए साइट होल्डर डी टी सी लन्दन से साइट के प्रावंटन हो जाने पर मामिक श्राधार पर लाइसेंस के लिए भी श्रावंदन कर सकते है । ये लाइसेंस केवल डी टी सी लन्दन से श्रायात के लिए ही वैध होंगे । निर्यात श्राभार प्रथम परेषण के आयात की तिथि से 20 दिनों के अन्दर श्रीर प्रत्येक माइट के लिए लाइसेंस पर किए गए पृष्ठांकन के श्रनुसार, पूरा कर लिया जाएगा ।
- 84. प्रपरिष्कृत हीरों के लिए थोक लाइसेंम:→-प्रपरिष्कृत हीरों के लिए थोक लाइसेंस, वैंध प्रार ई पी/हीरा अग्रदाय लाइसेंसों के धारकों की मांगों को पूरा करने के लिए, मैंसमें हिन्दुस्तान डायमण्ड कम्पनी लि. (एच. डी. सी. एल.) बम्बई तथा खनिज एवं धातु व्यापार निगम (एम. एम. टी. सी.) लि., नई दिल्ली को जारी किए जा सकते हैं।
- 85. पुनः निर्यातः—श्रपरिष्कृत हीरों का पुनः निर्यात करने वाला कोई निर्यातक ऐसे पुनः निर्यात पर कमीणन सहित विदेशी मुद्रा लागत घटाकर शत-प्रतिशन लागत बीमा-भाड़ा मूल्य की दर से श्रायान प्रतिपूर्ति का पात हो सकेगा । डी. टी. ली. लन्दन श्रीर खानों से (खान के चालू रहने की दशा भें) श्रायातों के मामलों में श्रायिक हीरों के मूल्य अनगः 5 प्रतिशन श्रीर 10 प्रतिशत तक पुनः निर्यात श्रन्मित हो सकता है । किशो अन्य स्त्रोत से किए गए श्रायात के लिए पुनः निर्यात श्रायातित श्रायरिष्कृत हीरों के मूल्य के 5 प्रतिशत से श्रायिक नहीं होगा लेकिन यह सुविधा थोक लाइसेंसधारियों द्वारा किए गए श्रायातों पर नहीं मिलेगी।
- 86. सोने और चांदी के जेवरात के लिए स्कीमें:—सोने और चांदी के जेवरात के निर्यातक इस संबंध में निर्धारित प्रक्रिया-नुसार सक्षम लाइसेंसिंग प्राधिकारियों द्वारा प्रदत्त प्रायान लाइसेंसीं के माध्यम से मोना, चांदी माऊंटिंग्स, फाइडिंग्स, अपरिष्कृत रूल, कीमती और अर्द्ध-कीमती सिथेटिक पत्थर और श्रमंमाधित मोती श्रादि जैसे श्रपने श्रनियार्थ निवेशों का श्रायात कर सकते है।
 - 87. सोने/चांदी की अन्तर्वस्यु:--निर्यात किए जाने पर निम्नलिखित मदों को इन स्कीमों के अन्तर्गत सुविधा मिल सकेगी:
 - (क) 8 कैरेट या प्रधिक सोना तत्व वाले सोने के जेवरात तथा वस्तुएं (सिक्कों को छोड़कर) चाहे मादे हों या जड़े हुए; ग्रीर
 - (ख) भार में 50 प्रतिशत में प्रधिक चांदी वाले चांदी के जेवरात ग्रौर वस्तुएं (लिक्कों ग्रौर किन्हीं इंजीनियरी भाल को छोड़कर)।
 - 88. स्कीम:--सोने/चांदी के जेवरात श्रीर वस्तुश्रों का निर्यात निम्नलिखित स्कीमों के श्रस्तर्गत किया जा सजाता है :
 - क. विदेशी केता द्वारा संभरित सोने/चांदी के भद्दे सोने/चांदी के जेयरात और वस्तुओं के निर्यात के लिए योजनाः

इस योजना के अन्तर्गत विदेशी केना सोने या चांदी के जेवरान और उनसे वनने वाली वस्तुओं के दिनिर्माण और अंतिम निर्यात के लिए अग्निम रूप में नि:शुल्क सोने या चांदी का संभरण कर सकता है। यह इसी प्रकार चांदी के एलाय, फाइडिम्स, माउंटिम्स आदि और 18 कैरेट और कम के सोने का संभरण भी कर सकता है। निर्यात आदेश में निम्नलिखित की व्यवस्था होनी भाहिए।

- (1) वेस्टेज की ब्रनुमित के बाद अधेक्षित सोने श्रीर पांदी की माद्रा की सीमा तक मोने श्रीर चांदी का निःण्लक संभरण; श्रीर
- (2) ग्रपरिवर्तनीय साखपत्र के द्वारा विनिर्माण और श्रन्य लागतों का भुगतान श्रथवा सुपुर्देगी पर तकद भुगतान ग्रथवा विदेशी मुद्रा में अग्निम भृगतान खंग्रह श्राधार पर (स्त्रीकृति मिद्दे दस्तावेज) सोते के जेवरात का निर्यात भी किया जा सकता है। निर्यात श्रादेश केवल एक विदेशी केता से ही सम्बन्धित होना चाहिए। सोना, चांदी, जवाहरान और वस्तुओं के निर्यात के लिए बनी यह योजना हस्तिगल्य और हथकरघा निर्धात निर्मा (एच. एच. ई. मी.) (या वाणिज्य मंत्रालय द्वारा नामित किमी जन्य मार्त्रचनिक क्षेत्र के श्रीभकरण द्वारक प्राप्त निर्यात श्रादेशों के लिए लागू होगी। नामित श्रीभकरण प्रत्यक्ष रूप ने या सपती पाल संस्थाओं के माध्यम मे निर्यात कर सकती हो। निर्यात केवल हवाई भाड़े और बम्बई, कलकना, मद्राम, दिल्ली, जयपूर, बंगलीर और कोचिन स्थित मीमाणुल्क सदनों के जरिए ही श्रनुमित होगा।

प्रस्थेक माह के शुक्र में एच. एच. ई. सी. द्वारा घोषित सोते और चांदी के मूल्यों पर मोता तत्व (वेस्टेज समेत) और चांदी तत्व (वेस्टेज रहित) के मूल्य के संदर्भ में मूल्यसंयोजन की गणना की जा सकती है। माउन्टिम्स, फाइडिंग्स श्रादि के लिए मूल्यसंयोजन, नामित श्रिभिकरण द्वारा तम किये गरे श्रायानों के लागन-यीमा-प्राड़ा मूल्य पर श्राधारित होगा। सोना और चांदी जवाहरान वस्तुओं के लिए न्यूनतम मूल्य मंयोजन कमशः 15 प्रतिगत और 25 प्रतिगत है। माउन्टिम्स और फाउंडिंग्स श्रादि का श्रायात निर्मात निवल के लिए निवल के श्राधार पर होगा।

ख. श्रनुमोदित प्रदर्शनी में बिकी के लिये सोने और चांदी जवाहरात और वस्सुओं के निर्मात की स्कीम

इस स्कीम के श्रन्तर्गत हस्तिशन्य और हथकर्घा निर्यात निगम (एच. एच. ई. सी.) राज्य ब्यापार निगम (एस. टी. सी.)/भारतीय व्यापार संबर्धन संगठन (श्राई, टी. पी. ओ.)/खनिज एवं धानु ब्यापार निगम (एम एम. टी.सी.) और उनकी पात्र सहयोगी संस्थानों हारा किया गया निर्यात श्राता है।ये संगठन नामित श्रिभिकरणों के रूप में कार्य करते है। यदि वाणिज्य मंत्रालय श्रनुमोदन कर देता है, तो इस स्कीम के श्रन्तर्गत श्रन्य व्यक्ति को भी निर्यात की श्रनुमति है। श्रदर्णनी लगाने के लिए निर्यात परेपण श्राधार पर किये जायेंगे और यह निम्नलिखित गर्त के श्रध्यक्षीन होगा।

- (1) विदेश में न बिकी हुई मद प्रदर्शनी बंद होने के 45 दितों के ग्रन्दर ब्रायात कर ली जायेगी; और
- (2) विदेण में विक्री हुई मदों के लिए योना और चांदी तत्व प्रतिपूर्ति के रूप में प्रदर्शनी बंद होने के 60 दिनों के अन्दर, आयात कर तिये जायेंगे। नामित प्रभिकरण निर्यात अनुमित होने से पहें सीमाणुरक प्राधिकारियों के पास इस प्राणय के एक बंधपत प्रस्तुत करेगा। दूसरों द्वारा आयोजित प्रदर्शनियों में, भारतीय रिजर्व बैंक या सीमाणुरक प्राधिकारियों के नियमों के अन्तर्गत यथाअपेक्षित बंधपत्र या. वैंक गारंटी आयोजिक स्वयं ही प्रस्तुत करेंगे। प्रदर्शनी बंद होने के उपरांत निर्यातक भारतीय स्टेट बैंक या प्रदर्शनी बंद होने से पहले प्रदर्णनी के स्थान पर उनके एजेंटों की सहायता से या प्रदर्शनी बंद होने के 50 दिनों के भीतर भारतीय स्टेट बैंक की अधिकृत शाखाओं की महायता से प्रतिपूर्ति के उद्देण्य के लिए, बुकिंग करेगा।

मूल्य संशोधन की गणना, सोना तत्व (बेस्टेज ममेत) और चांबी के तत्व (बेस्टेज सिहत) उस मूल्य के ग्राधार पर की जायेगी जिस पर प्रतिपूर्ति श्रनुमित हो सकती है या उस मूल्य पर जिस पर निर्यात बीजक बताया गया, था, इतमें जो भी उच्चतर हो, की जायेगी। निर्यातक, निर्यात बीजक बनान समय एच. एच. ई. सी. द्वारा ग्रिधसूचित सोना चांबी के मासिक मानदण्ड मूल्य का प्रयोग कर सकते हैं। सोना/चांबी जवाहरात बस्तुओं के लिये न्यूनतम मूल्य संयोजन क्रमण: 15% और 25% है। है। श्रमेक्षित दस्तावेज प्रस्तुत करने पर लाइमेंसिंग प्राधिकारी द्वारा उपयुक्त रिलीज श्रादेश और रतन प्रतिपूर्ति लाइसेंस जारी किया जा सकता है।

ग. सोना और चांदी जेवरात और वस्तुओं की निर्यात संवर्धन और प्रतिपूर्ति रुकीम

यह स्कीम मोना/चांदी जेंबरात और बस्तुओं के नियंति के मद्दे भारतीय स्टेट बैंक की पदनामित शाखाओं अथवा वाणिज्य मंद्रालय हारा नामित किसी श्रन्य श्रीभकरण के जिएए मोना/चांदी की खरीदारी के पश्चात् भारतीय स्टेट बैंक श्रीभकरण हारा जारी किये गये प्रमाण पत्र में निर्दिट मूल्य पर सोना चांदी की प्रतिपृति की व्यवस्था करती है। यह स्कीम उन नियातों तक ही मीमित होगी जिनके समर्थन में श्रिपरवर्तनीय साखपत्र, डिलीबरी श्राधार पर नकद भुगतान या बिदेणी मुद्रा में अप्रिम भुगतान किया गया है। सोने जवाहरात के निर्यात की श्रनुमित संग्रह श्राधार स्वीकृति महे दस्ताबेज पर भी वी जा सकती है। निर्याक को अग्रिम क्प में भारतीय स्टेट बैंक से सोना/चांदी प्राप्त करने का विल्कप होता है। अग्रेक्षित दस्ताबेज प्रस्तुत करने पर लाइमैंस्ग प्राधिकारी हारा उपयुक्त रिलीज श्रादेण और रत्न प्रतिपूर्ति लाइमैंस् जारी किये जा सकते हैं।

मूल्य संयोजन की गणना/सोना तत्व (बेस्टेज सहित) और चांदी तत्व (बेस्टेज रहित) — के संन्दर्भ में उस मूल्य पर की जायेंगी जिस पर भारतीय स्टेट बैंक द्वारा सोने और चांदी को बुक किया जायें। सोना और चांदी जवाहरात/बस्तुओं के लिये न्यूनतम मूल्य संयोजन क्रमणः 15% और 25% होगा।

घ. सोने और चाँदी जवाहरात और वस्तुओं के लिये ध्रग्रिम लाइसेंस की स्कीम

ग्रध्याय सात में निहित ग्रग्निम लाइसेंस र_ोम के प्राथधान सोने और चांदी के जवाहरात और उनने विनी वस्तुओं के निर्यात पर लागू होंगे।

इ. निर्यात संसाधन क्षेत्रों (ई.पी. जैड.) और निर्यात श्रीभमुख यूनिट (ई.ओ. यू.) परिसरों सेसोते और चांदी के जबाहरात और वस्तुओं केनिर्यात कीस्कीम

निर्यात प्रशिमुख यूनिटें निर्यात स्राभिमुख यूनिटों की स्कीम के सामान्य प्रावधानों द्वारा शासित होती हैं और निर्यात संसाधन बात क्षेत्रों में स्थापित की गई यूनिटें ई. पी. जेड. स्कीम के समान्य प्रावधानों द्वारा शासित होती है। निम्निलिखित को छोड़कर।

- (1) रिजेक्ट्रस समेत किसी की भी बिकी भी ग्रनुमित घरेलू टैरिफ क्षेत्र (डी. टी. ए.) में नहीं सिलेगी और
- (2) यदि कोई यूनिट कार्य करना बन्द कर देती है तो सोना और दूसरी कीमती धातु एलाय, रतन और प्रत्य सामग्री जो जवाहरात के विनिर्माण के लिये उपलब्ध होगा वाणिज्य मंत्रालय द्वारा नामित किसी एजेंसी की उस एजेंसी द्वारा निर्धारित की गई कीमत पर सौप दिया जायेगा।

ये यूनिट स्वर्ण और श्रन्य बहुमूल्य धातुओं से विनिमित कचने माल, अनाय कैरेट, स्वर्ण, रंगीन स्वर्ण, कीमनी धातु जिनमें चांदी, प्लाटिनम और पलाडियम, फाइन्डिक्स, माउन्टिग्स, साकेट और फेम भी घामिल हैं का श्रायान कर सकती है। ये यूनिट हीरें, रंगीन रत्न और पत्थरों अर्थ मूल्यवान पत्थरों, अर्थ मूल्यवान पत्थरों, निन्धेटिक पत्थरों, मोतियों आदि का भी श्रायात कर सकती है। उसके श्रतिरिक्त इन यूनिटों को भारतीय स्टेट बैंक या वाणिज्य मंत्रालय द्वारा नामित किसी अन्य एजेंसी के जरिये 0.995 परिश्वद्धता वाले स्वर्ण भी उपलब्ध कराया जा सकता है। 0.995 परिश्वद्धता वाले स्वर्ण की आपूर्ति के लिये निर्धात संसाधन क्षेत्र के लिये विकास श्रायुक्त प्रथवा निर्धात-श्रिभुख यूनिट परिसर के प्रायोजित प्राधिकारी के जरिये आवेदन कर सकती है। इन यूनिटों को निर्धात अभिमुख यूनिट स्कीम और निर्धात संसाधन क्षेत्र स्कीम पर लागू प्रक्रिया के अनुसार पूंजीगत माल, प्रोटोटाईप्स, तकतीकी नमूनों, उत्रभोज्यों, श्रतिरिक्त पुजी और पैकेजिंग सामग्री के श्रायात की श्रनुमित दी जा सकती है तथापि, भारतीय रिजर्व बैंक को छोड़कर 0.995 श्रुद्धता वाले स्वर्ण के श्रायात की श्रनुमित नहीं होगी।

मूल्य संयोजन को उस मूल्य पर संगणित किया जाये जिम मूल्य पर स्वर्ण कन्टेंट (जिसमें वेस्टेज भी शामिल हैं) चाहे यह 0.995 परिशृद्धता ग्रथवा कोई ग्रन्य शृद्धता वाला स्वर्ण हो का ग्रायात किया गया हो। इसी प्रकार को प्रक्रिया ग्रायातित चांदी (बिना वेस्टेज के) पर भी लागू होगी। सादे और जिंदत स्वर्ण ग्राभूषणों जिनमें वस्तुएं भी शामिल हैं, के निर्यात के लिये न्यूनतम मूल्य संयोजन कमशः 10% और 15% होगा। चांदी के सादे/जिंदत ग्राभूषणों और वस्तुओं के लिए न्यूनतम मूल्य संशोधन 25 प्रतिशत होगा। एक निर्यातक को तराशें और पालिश किने गये होरों, बहुनूल्य ओर ग्राम् नूरावान पत्थरों, मोतियों और सिन्थेटिक पत्थरों जिनका उपयोग, स्टेटिक स के दन में किया गया हो, के मूल्य पर 5 प्रतिशत ग्रांतिरिकत मूल्य संयोजन प्राप्त करने की भी ग्रावश्यकता है। माउन्टिग्स, फाइन्डिग्स, ग्रादि के लागत-बीमा-माड़ा मूल्य का भी मूल्य संयोजन के लिए हिसाब में लिया जाय और उनका ग्रायात और निर्यात नेट के लिने नेट के ग्रावार नर कि । जानेना

कम तराशें और पालिश किये गये हीरों और बहुमूल्य धर्ध मूल्यवान पत्थरों का निर्यात करने वाली युनिटों के भामले में प्राप्त किये जाने वाले प्रावध्यक न्यूनतम मूल्य संयोजन को घरेलू टैरिक क्षेत्र से ऐसे निर्यातों के लिए उपलब्ध इसी श्रवधि की प्रतिपूर्ति दरों के भाधार पर संगणित किया जायेगा। स्वर्ण और वादी के श्राभूषणों और वस्तुओं से प्रलग, श्रन्य कीमती धातुओं से बने श्राभूषणों और वस्तुओं का विनिर्माण और निर्यात पूर्वोक्त निर्यात प्रसिनुख यूनिट परिसरों/ निर्यात संसाधन क्षेत्रों द्वारा किया जा सकता है। प्लेटिनम और पेलेडियम भादि के सम्बन्ध में मूल्य संयोजन और ग्रन्य भावस्यक-ताएं, मुख्य नियंत्रक भायात-निर्यात द्वारा सार्वजनिक सूचना के माध्यम से भाष्ट्रमुखित को जाएंगी।

अनुमित किये जाने वाले आभूषणों के नमूनों को उपर्युक्त पहचान के बाद पुनः निर्मात करते को अनुमति दो जा सकती है।

स्त्रणं की स्त्रैप बस्ट स्वीपिय्स निर्यात संसाधन क्षेत्र में स्थित यूनिटों से भारत सरकार टक्स आल को मेजने को प्रशुनित दी जा सकती और स्टैन्बर्ब स्वर्ण की छड़ों के रूप में उस क्षेत्र को सीमासुलक प्राधिकारियों द्वारा निर्यारित प्रक्रिया के प्रशुनार वापिस भेजी जा सकती है।

सम्बन्धित निर्यात संसाधन क्षेत्र/निर्यात श्रीभनुख यूनिट परिसर के विकास श्रापुक्तों द्वारा इस श्रश्याय के पैरा 8.5 के श्रनुसार श्रपरिष्कृत हीरों के पुनः निर्यात की श्रनुमति श्रायातित श्रपरिष्कृत हीरों के मूल्य के 5 प्रतिशत तक वी जाएगी।

निर्यात अभिमुख यूनिटें/निर्यात संसाधन क्षेत्र की यूनिटें सरकार द्वारा अनुनोदित प्रदर्शतियों में जा ले सकतो हैं। देश में लगाई जाने वाली प्रदर्शनियों में बिक्री की अनुमति नहीं होगी। आभूषणों के इन क्षेत्रीं/परिसरों से ले जाने और वापस लाने सम्बन्धी ढुलाई की प्रक्रिया सीमाशृक्क प्राधिकारियों द्वारा निर्धारित की जायेगी।

भ्रांशिक रूप से संसाधित श्राभूषणीं का निर्यात भी निर्धारित न्यूनतम भूल्य संयोजन की भवित्राप्ति के भ्रव्यवीन भ्रमुमित होगा।

भारतीय खनिज और धातु घ्यापार निगम लि. समय-समय पर संशोधित निर्शारित प्रक्रिया के प्रानुतार इस योजना के प्रन्तर्गत स्थापित स्वीकृत स्वर्ण ग्राभूषण विनिर्माण करने वालो निर्यात यूनिटों को स्वर्ग ग्राताय, कैटंट सर्ग, फाइन्ड्रिस समेत जिनमें 0.999 परिशुद्धता वाला स्वर्ण ग्रामिल नहीं है, स्वर्ण, स्वर्ण मध्यस्यों और संघटकों को भी ग्रापूर्ति करेगा। 852GI/92--3 च. घरेलृ टैरिफ क्षेत्र में स्थित यृतिष्टों द्वारा प्रतिपूर्ति के ग्रन्तर्गत 18 कैरट मे ऊपर के स्वर्ण का सीक्षे श्रायात करने हेतू योजना।

सादे स्टर्ण द्वाभूषणों के निर्यात के मद्दे जहां निर्यात प्रायात निर्नृक्त विदेशी मृद्रा में पूर्णतः ग्रिक्षिप्राप्त की जा चुकी हो, सक्षम प्राधिकारी (1) 0.0995 परिशुद्धता वाले, स्वर्ण, और (2) 0.920 परिशुद्धता, वाली फाइण्डिस्स/माउन्टिस्स, जो लाइसेंस के मृत्य का 10 प्रतिशत तक होगी जो लाईसेंस के समूचे मूल्य के ग्रन्तगंत होगी, के सीबे ग्रायात के लिए निर्यात के जहाज पर्यन्त निशुक्क मूल्य के 87 प्रतिशत की दर से ग्रहस्तान्तरणीय प्रतिपूर्ति लाइसेंस जारी कर सकता है।

जड़ित स्वर्ण आभवणों के निर्वात के लिए जहां निर्वात आय विदेशी मुद्रा में पूर्णतः अधिप्राप्त हो चुको हो, संबंधित प्राधिकारी निम्मलिखित के सीधे आयात के लिये निर्यातों के जहाज पर्यन्त मूल्य के 80 प्रतिशत की दर से अहस्तान्तरणीय प्रतिपूर्ति लाइसैंस जारी कर सकता है:---

- (1) 0.995 परिशुद्धता वाला स्वर्ण, जिसकी कीमत निर्यातित स्वर्ण जिंहत आभूषणों में उपयोग में लाए गए शुद्ध स्वर्ण (0.999 परिशुद्धता), की मात्रा, जैसी कि सीमाशुल्क प्राधिकारी द्वारा प्रमाणीकृत की गई हो, को हिसाब में लेकर निर्यात की तारीख को शुद्ध स्वर्ण (0.999 परिशुद्धता) के अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य द्वारा गुणा करके, भारतीय स्टेट वैंक की पदनामित शाखाओं द्वारा प्रमाणित किया गया हो, स्टिंडग्स के अविशिष्ट प्रतिपूर्ति मूल्य का 20 प्रतिशत जमा करके निर्धारित की जायेगी।
- (2) लाइसेंस के मूल्ल के 10 प्रतिशत तक तथा लाइसेंस के समुचे मूल्य के धन्तर्गत 0.920 परिशुद्धता की स्वर्ण फाइन्डिंग्स/माउन्टिंग्स, और
- (3) प्रपरिष्कृत हीरे, ग्रपरिष्कृत रंगीन रत्न, पत्थर और शेष मूल्य के लिए ग्रपेक्षित/बिना सेट किए हुए रीयल ग्रथवा कलचर्ड मोती ।

प्रतिपृति लाइसेंस इसके जारी फिए जाने की तारीख से 90 दिनों की प्रवधि के लिने वैध होंगे।

छ. स्वर्ण श्रग्नदाय लाइसेंस के श्रन्तर्गत घरेलू टैरिफ क्षेत्र में स्थित यूनिटों द्वारा निर्पात उत्पादन के लिए निर्पात पूर्व आधार पर 18 कैरट से ऊपर के स्वर्ण के श्रायात की योजना

पूर्ववर्ती तीन लाइसेंसिंग वर्षों के दौरान तीन करोड़ और इसंत श्रधिक के सादे और जड़ित स्वर्ग ग्रांतूयगों के औसत निर्मात निष्पादन करने वाला निर्मातक प्रयमे स्वर्ण के नाम में वैश्व निर्मात ठैके के महे स्वर्ण ग्राग्रहाय लाइसेंस का पान होगा। यह लाइसेंस उसके सर्वोत्तम तीन वर्षों जमा उस पर 25 प्रतिशत के बराबर मूख्य के लिए जारी किया जा सकता है। उपकी सपूची पान्नता के प्रन्तर्गत निर्मातक सादे और जड़ित स्वर्ग ग्राम्यणों के निर्मात के लिये अलग से स्वर्ण ध्राम्यय लाइसेंस के लिए ग्रामेदन कर सकता है। लाइसेंस में निम्नलिखित शर्ते विहित होंगी:——

- (1) नीचे निर्दिष्ट तरीके से निर्यात श्राभार;
- (2) लाइसेंस मूल्य की शतों में होगा और यह 0.995 परिणुद्धता वाले स्वर्ण के निर्यात के लिए वैध होगा;
- (3) लाइसेंस अहस्तान्तरणीय होगा;
- (4) लाइसेंस के मद्दे स्वर्ण का भायात किये जाने के बाद निर्यात किये जाएंगे;
- (5) लाइसेंस इसके जारी होने की तारीख से छः माह के लिये दैध होगा ।

सादे स्वर्ण धाभूषणों के निर्यात के लिए जारी किए गए स्वर्ण अग्रदाय लाइसेंस के लिए 87 प्रतिशत के वितरीत धानुपात में निर्यात ग्राभार होगा ग्रध्यात् यदि स्वर्ण ध्रग्रदाय लाइसेंस 87 ग्रमरीकी डालर के लागत-बीमा-भाड़ा मूल्य के लिए जारी किया जाता है तो निर्यात प्राभार 100 ग्रमरीकी डालर होगा । स्वर्ण जड़ित ग्राभूषणों पर निर्यात ध्राभार 80 प्रतिशत के विपरीत ध्रानुपात में निर्धारित किया जाएगा ग्रधीत् यदि स्वर्ण ध्रग्रदाय लाइसेंस 80 ग्रमरीकी डालर के लागत बीमा-भाड़ा मूल्य के लिए जारी किया जाता है तो निर्यात ध्राभार 100 ग्रमरीकी उालर होगा । निर्यात ग्राभार स्वर्ण की प्रत्येक प्रेपण की निकासी की तारीख से 120 दिनों के भीतर पूरे किए जाएंगे तथा निर्यातक इन निर्यातों पर प्रतिपूर्ति के लाभ का दावा किसी ग्रन्य स्कीम के भन्तर्गत निर्यात आभार की उसके द्वारा तोडी गई सीमा तक नहीं करेंगे।

8 9. प्रन्य प्रावधान.---

निर्यातक को अपर 78 (च) और 78 (छ) में दी गई योजनाओं को छोड़कर निर्यात के जहाज पर्यान्त निःशुस्क मृत्य के 3 प्रतिभात तक एजेन्सी कमीशन का भुगतान करने की धनुमित है। जहां कहीं ऐजन्सी कमीशन का भुगतान किया जला, वहां ऐजन्सी कमीशन की प्रतिशातता द्वारा न्यूननम मूल्य संयोजन में तद्नुरूप वृद्धि की जाएगी।

90. पैरा 88 (क) से (ङ) तक उल्लिखित योजनाओं के ध्रन्तर्गत निर्यातकों को प्रक्रिया पुस्तक में निहित अनुसार स्थर्ण बेस्टेज संगवा विनिर्माण घाटे की अनुमति होगी।

- 91. ऐसे मामले में जहां निर्यातक न्यूनतम निर्धिरत मूल्य संयोजन प्राप्त करें, वहां सादे स्वर्ण/नादों के प्राभू-पणों के निर्यात पर पैरा 78 (क) से (च) तक में उल्लिखित योजना के प्रन्तर्गत रतन प्रतिपूर्ति लाइसेंस जारी किए जासकते हैं। ऐसे लाइसेंस का मूल्य न्यूनतम मूल्य संयोजन की प्रतिरिक्त प्रधिप्राप्ति के सदर्भ में निर्धारित किया जाएगा। जटित स्वर्ण/नादी के प्राभूवणों और वस्तुओं के निर्यातक रतन प्रतिपूर्ति लाइसेंस के पात्र होंगे जिने वेस्टेज सिंहत सोन पर मूल्य संयोजन के लिए गणना के बाद निर्यात की गई मदों में उपयोग में लाई गई स्टिंडिंग्स के पूल्य को ध्यान में रखकर दिया जाएगा। लाइसेंसिंग के प्रयोजन के लिए स्टिंडिंग्स को चार वर्गी में बांटा जाएगा नामगः :
 - (क) हीरे
 - (ख) बहुमूल्य पत्थर
 - (ग) श्रद्धं भूहवान और सिन्थटिक पत्थर और
 - (ध) मोती

प्रतिपूर्ति का पैमाना प्रक्रिया पुस्तक में दिया गत्रा है। ये लाइसेंस बिता श्रापरिष्कृत हीरों बहुमूल्य पत्यरों, श्रर्श्व मूल्यवान पत्यरों, सिन्धेटिक पत्थरों और मोतियों के श्रायात के लिए बैंब होंगे। इसके श्रातिरिक्त लाइसेंस के मूल्य के 1 प्रतिशत तक खाली श्राभूषणों के श्रायात के लिए बैंब होगा।

92. बीजक.---

सभी स्थानों के प्रन्तर्गत प्रायात और निर्यात के बीअक प्रमरीकी डालर में होंगे।

ग्रध्याय-नौ

निर्यात प्रशिमुख यूनिटें और निर्यात संसाधन क्षेत्रों की यूनिटें पातता 93. ---

अपने सारे उत्पादन को निर्यात करने का दायित्व लेने वाली यूनिटें निर्मात श्रिभ ज यूनिट (ई. ओ. यू) या निर्यात संसाधन क्षेत्र (ई.पी जैंड.) रक्तीय के अंतर्गत स्थापित की जा सकती हैं। ऐसी यूनिटें साफ्टवैयर, बागवानी, कृषि, जलचर पालन, पशुपालन या इस प्रकार के विनिर्माण या उत्पादन में लगी हो सकती हैं। मेत्रा कार्किनाओं में लगी युनिटों परभी गुणावगुण के आधार पर विचार किया जा सकता है।

94. माल का प्रायात ---

यूनिट उत्पादन के लिए आवश्यक निम्नतिखित माल बिना **गुल्क दिए आ**यात **कर सकती** हैं, वशर्ते कि वे आयातों की निषेधात्मक सू**ची** में वर्जित मर्दे न हों :

- (क) क्षैप्टिव विश्वुत संयंत्रों सहित पूंजीगत माल;
- (ख) कच्चा माल, संघटफ, मध्यस्थ, श्रर्झतैय।र माल, प्रतिरिक्त पृजें भाग तथा उपभोज्य ;
- (ग) प्रोटोटाइप्स, कार्यालय उपस्कर और कार्यालय उपस्कर के लिए उपभोज्य; और
- (घ) फोर्कलिफ्ट, ओनर हेंड क्रेन आदि जैसे माल उठाने-रखने वाले उपकरण ।
- 95. पुराना पुंजीगत माल :- पुराना रूंजीगत भाल का भ्रायात भी भ्रध्याय-पांच दिए गए प्रावधानों के श्रनुसार किया जा सकता है।
- 96. पूंजीगत माल का पट्टा करना.—पार्टियों के बीच में हुए पक्के ठेके के श्राधार पर कोई निर्यात श्राभमुख यूनिट/निर्यात संसाधन क्षेत्र की यूगिट घरेलू घट्टे वाली कम्पनी से पूंजीगत माल उठ सकती है। ऐसे मामने में, घरेलू पट्टे वाली कम्पनी शुल्क मुक्त पूंजीगत माल प्रायात करने की पान होगी तथा निर्यात अभिमुख यूनिट/निर्यात संसधान क्षेत्र की यूनिटों को इसकी आपूर्ति ऐसी मनों पर करेगी जो दोनों पार्टियों में श्रापसी सहमित निर्धारित को जाए। तथापि, जब तक कि यूनिट द्वारा निर्यात आमार पूरा नहीं किया जाता है, तब तक पूंजीगत माल निर्यात श्रीभमुख यूनिट/निर्यात संसाधन क्षेत्रों की यूनिटों की पूंजीगत परिसम्पत्ति के एक भाग के इप में बना रहेगा और उन्हें किसी अन्य उपयोग में नहीं लाया जाएगा।
- 97. मृत्य संयोजन.—यृनिट कम से कथ 20 प्रतिशत का मूल्य वर्धन प्राप्त करेगी किन्तु परिशिष्ट -दो में विनिर्दिष्ट उद्योगों में लगी हुई यूनिटे उत्तमें निर्दिष्ट मूल्य वर्धन मानवण्डों को पूरा करेगी।
- 98. विधिक धवन बद्धता ----यूनिट संबंधित विकास ग्रायुक्त को एक यन्धपत्न /विधिक वचन बद्धता प्रस्तुन करेगी और श्रनुमोदन/ ग्रामय-पत्न में निर्धारित ग्राभारों को पूरा न करने पर विफलता के सामते में वह उस बंध पत्न/विधिक वचनबद्धता या कुछ समय के लिए लागू किसी श्रन्य काकून के श्रधीन दण्ड की भागी होगी ।

- 99. मूब्रा सन्तुलन:—रिपया भुगतान क्षेत्र (आर०पी०ए०) को निर्यात के लिए सामान्य मूब्रा क्षेत्र (जी०सी०ए०) से आयात वाले किसी प्रस्ताव पर विवार किया जा सकता है वशर्तों कि विदेशी मुद्रा का बहुर्गमन एवं अंतर्वाह संतुलित हो। यह पहले ही दिए गए प्रनुमोदनों में मुधार या परिवर्तन के प्रस्तावों पर भी लागू होगा।
- 100 स्वत अनुमोदन:—परियोजना म्रावेदन पत्नों पर जो उद्योग मंत्रालय के प्रेस नोट संख्या 3(1991 सिरिज) के पैरा 3 में निर्दिष्ट शतौं को पूरा करते हैं, संबंधित निर्यात संसाधन केंद्र के विकास भ्रायुक्त द्वारा 15 दिन के भ्रन्थर-भ्रन्थर स्वतः भ्रनुमोदन किया जा सकता है। निर्यात भ्रभिमुख यूनिटों के मामले में ऐसा श्रनुमोदन औद्योगिक भ्रनुमोदन सचिवालय (एस. आई. ए) द्वारा दिया जाएगा।
 - 101. ग्रन्य मामले:--- अन्य मामलीं में श्रनुमोदन इस प्रयोजन के लिए गठित किए गए बोर्डी द्वारा दिया जा सकता है।
- 102 डी. टी. ए. बिक्री (घरेलू टैरिफ क्षेत्र में विक्री).—निर्यात भ्रभिमुख यूनिटों/निर्यात संसधान क्षेत्र की यूनिटों का सकल उत्पादन मिम्नलिखित को छांड्कर निर्यात किया जाएगा:—
 - (क) 5 प्रतिशत तक रिजेक्ट्स प्रथवा श्रनुमोदन बोर्ड द्वारा यथानिर्धारित प्रतिशत तक रिजेक्ट्स को घरेलू क्षेत्र में बेचा जा सकता है बगर्ते कि उपयुक्त करों का भुगतान कर दिया गया हो।
 - (ख) मुल्य के अनुमार देशी आयात 30 प्रतिशत से अधिक होने पर इसके अंतर्गत उत्पादन का 25 प्रतिशत घरेलू टैरिफ क्षेत्र में गेचा जा सकता है । जब ऐसे निवंः 30 प्रतिशत से कम हो तो डी. टी.ए. बिक्री, मूल्य के अनुसार 15 प्रतिशत से अधिक नहीं की जा मकेंगी। डी. टी.ए. बिक्री न्यूनतम मूल्य वर्धन तथा निर्यात आभार की पूर्ति के अधीन होंगे। आभूषणों, हीरों, बहुमूल्य और अर्ध बहुमूल्य पत्थरों/रत्नों, मोटर कारों, रिकांडिड विडियो तथा आडियो कैसेट एवं सिल्बर बुलियन के संबंध में डी. टी. ए. में बिक्री की अनुमति नहीं होगी।
 - 103 नियति आभार -- नियति शाभार पूरा अरने में निग्नलिखित आपूर्तियों को हिसाब में लिया जाएगा:--
 - (क) विश्व टैंडर मर्तों के श्रधीन घरेलू टैरिफ क्षेत्र में की गई श्रापूर्ति;
 - (ख) विदेशी मुद्रा में भुगतान के मुद्दे धरेल् टैरिफ क्षेत्र में की गई ग्रापूर्ति ;
 - (ग) श्रमिम लाइसेंसों तथा ग्रायात लाइसेंसों के मुद्दे ग्रापूर्ति
 - (घ) विकास श्रायुक्त की श्रनुमति से श्रन्य निर्यात ग्रिभिमुख यूनिटों/निर्यात संसाधन क्षेत्र की यूनिटों के लिए श्रापूर्ति ।
- 104. निर्यात सदन/व्यापार सवन/स्टार व्यापार सदन के जिर्ये निर्यात.— कोई निर्यात श्रीभमुख थूसिट/ निर्यात संसधान क्षेत्र की यूनिट ग्रंपने विनिर्मित माल का निर्यात इस नीति के श्रन्तर्गत मान्यता प्राप्त किसी निर्यात सदन/ व्यापार सदन / स्टार व्यातार सदन के जिरए कर सकती है। यह अनुमित केवल निर्यात सवन/व्यापार सदन/स्टार व्यापार सदन द्वारा माल के विषणन तक ही सीमित है। माल का विनिर्माण निर्यात अभिभुख यूनिट/निर्यात संसाधन क्षेत्र की यूनिटों में किया जाएगा मूल्य ववंन तथा निर्यात श्राभार और साथ ही ग्रायात एवं निर्यात संबंधी कोई ग्रन्य ग्राभार निर्यात उन्मुख यूनिट/निर्यात संसाधन क्षेत्र की यूनिट द्वारा पूरे किए जाते रहेंगे।
 - 105. विकास भ्रायुक्त निम्नलिखित की भी ग्रनुमित दे सकता है:---
 - (क) निर्यात ग्रभिमुख यूनिटों/निर्यात संसाधन क्षेत्र की यूनिटों द्वारा उत्पादित माल के समृचित मात्रा में, नमूनों की झापूर्ति या बिकी जो लगाए जाने बाले शुल्क का भुगतान करने पर प्रदर्शनी या प्रचार ग्रादेशों के लिए हो। ऐसे माल को लौटाने का समृचित ग्राश्वासन देने पर ऐसे नमूनों को यूनिटों से हटाने की ग्रनुमित दी जा सकती हैं।
 - (ख) डी. टी. ए. में बिक्री किए गए परन्तु ब्रुटिपूर्ण पाए गए माल को मरम्मत विस्थापन हेतु वापिस लाना। ऐसा माल यूनिट से हटाया जा सकता है बश**तें कि माल की पह**चान हेतु सीमा शुरूक प्राधिकारी संतुष्ट हों।
 - (ग) मरम्मा/परीक्षण प्रथवा व्याससमापन हेतु डी.टी.ए. के माल का स्थानांतरण वशर्ते कि निर्यात ग्रिभिमुख यूनिट के मामले में इसकी सीमा-शुल्क प्राधिकारियों द्वारा दी जाए।

- 106. डी.टी.ए. से आपूर्ति के लाभ .-- घरेलू टैरिफ क्षेत्र से निर्यात प्रभिमुख यूनिटों /निर्यात संसाधन क्षेत्र की यूनिटों को आपूर्ति अभिग्रहीत निर्यात समझी जाएगी और निम्नलिखित लाभों की पात्र होगी:---
 - (क) सीमाकर उत्पाद शुस्क, केन्द्रीय विक्री कर तथा सीमाशुस्क ड्राबैक की वापसी ।
 - (ख) इस पैराग्राफ के श्रधीन की गई श्रापूर्ति बादे पंजीगत माल ,संघटकों तथा कच्चे माश पर ইন্দ্রीय उत्पाद णुरुक के भुगतान से छूट।
 - (ग) संभरक पर निर्यात शाभार यदि कोई हो, का निष्पादन ।
 - 107 प्रार्ते पैराग्राफ 106 के श्रन्तर्गत बताएं गए लाभ उपलब्ध होंगे बणतें कि ग्रापूर्ति किया गया माल देश में निर्मित किया गया हो और घ्रापूर्ति विकास श्रायुक्त हारा जारी किए गए प्राधिकार पस्न के महे की गई हो।
 - 108 निर्यात संसाधन क्षेत्र/निर्यात ग्राभिमुख यूनिटों के लिये लाभ :---रियायती किरावा

निर्यात संसाधन क्षेत्र में स्थापित यूनिटें तीन वर्षों के लिए श्राबंटित आँद्योगिक प्लाट तथा मानक डिजाइन फैक्टरी (एस.डी.एफ.) भवन/शैंड के पट्टे के लिए प्रथम निम्नलिखित दरों पर रियायती किराए के लिए पान्न होंगी:—

प्लाटों के लिए —यदि पहले अथवा दूसरे वर्ष में उत्पादन प्रारम्भ हो गया हो तो यह रियायत पहले वर्ष के लिए 75 प्रतिशत दूसरे वर्ष के शिए 50 प्रतिशत तथा तीसरे वर्ष के लिए 25 प्रतिशत होगी। यदि उत्पादन दूसरे वर्ष के श्रन्त तक प्रारम्भ नहीं हुआ हो तो तीसरे वर्ष के लिए रियारत नहीं दी जाएगी।

मानक डिजाइन फैक्टरी भवन/बीड के लिये: यदि उत्पादन पहले वर्ष में प्रारम्भ हो गया हो तो पहले वर्ष के के लिए रियायन 50 प्रतिशत सथा दूसरे वर्ष के लिए 40 प्रतिशत होगी। यदि उत्पादन पहले वर्ष में प्रारम्भ हो गया हो तो तीसरे वर्ष के लिए 25 प्रतिशत मिलेगी वह रियायत उपलब्ध नहीं होगी यदि पहले ही वर्ष के अन्त तक उत्पादन प्रारम्भ हुमा न हो।

कर छूट : निर्यात श्रभिम्ख यूनिटों और निर्यात संसाधन क्षेत्र की यूनिटों को कार्य प्रारम्भ करने के प्रथम 8 वर्षों में 5 वर्षों के ब्लाक के दौरान निगमित कर के भुगतान से छूट होगी ।

आई पी श्रार एस निर्यात : ग्रश्भिमुख यूनिटों और निर्यात संसाधन क्षेत्र की यूनिटों को सीहा एवं इस्पात का संभरण करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य प्रतिपूर्ति स्कीम उपलब्ध होगी।

शत-प्रतिशत विदेशी इक्विटी:——निर्यात ग्रिभिमुख यूनिटों और निर्यात संसाधन क्षेत्र की यूनिटों के मामले में शत-प्रतिशत तक की विदेशी इक्विटी ग्रानुमेय हैं।

109. घरतः यूनिट स्थानान्तरण :—

विकास श्रायुक्त एक निर्यात संसाधन क्षेत्र यूनिट से दूसरी निर्यात संसाधन क्षेत्र यूनिट, एक निर्यात संसाधन क्षेत्र से एक निर्यात ग्रभिमुख यूनिट, निर्यात ग्रभिमुख यूनिट से एक निर्यात संसाधन यूनिट या निर्यात ग्रभिमुख यूनिट से दूसरी निर्यात ग्रभिमुख यूनिट को विनिर्मित माल के स्थानान्तरण की ग्रनुसति दे सकता है।

- 110. निर्यात ग्रभिमुख यूनिट/निर्यात संसाधन क्षेत्र की यूनिटों द्वारा ग्रायातित माल को विकास ग्रायुक्त की ग्रनुमित से ग्रन्य निर्यात ग्रभिमुख यूनिट/निर्यात संसाधन क्षेत्र की यूनिट को उधार पर दिया जा सकता है ग्रथवा स्थानान्तरित किया जा सकता है।
- 111. उप संविदा करना :- निर्यात अभिमुख यूनिट/निर्यात संसाधन यूनिटों को अपने उत्पादन के भाग को घरेलू टैरिफ क्षेत्र की यूनिटों को फुटकर काम के लिए उप संविदा करने की अनुमति प्रत्येक मामले के आधार पर दी जा सकती हैं। इस मामले में प्राप्त अनुरोध पर संबद्ध सीमाशुल्क प्राधिकारियों द्वारा कतिपय कारकों के आधार पर विचार किया जा सकता है उसि कि खाण्ड भरने का औचित्य, निवेश एवं उत्पादन मानवण्डों का निर्धारण तथा संबद्ध यूनिटों द्वारा वचन/बन्धपत्र प्रस्तुत करना।
- 112. श्रायातित माल की बिकी:— यदि कोई निर्यात ग्राधिमुख यूनिट/निर्यात संसाधन क्षेत्र की यूनिट वैंध कारणों से ग्रायातित माल का उपयोग करने में श्रसमर्थ रहती है, तो वह विकास ग्रायुक्त की श्रनुमित से पुनः निर्यात कर सकती है, बशर्ते कि मूल्यांकन ग्रादि के संदर्भ म सीमाशुल्क प्राधिकारियों ने ग्रनुमित देवी है। ये शुल्कों की श्रदायगी पर विकास ग्रायुक्त की श्रनुमित से भरेल टैरिफ क्षेत्र के किसी वास्तविक उपयोक्ता को भी ऐसे माल का स्थानान्तरण किया जा सकता है।

- 113. श्रायातित मशीनरी/पूंजीगत माल जो पुराना हो गया हो, को उसके घटे हुए मूल्य पर सीमाशुल्क का भुगतान करने के श्रष्ट्यधीन निपटाया जा सकता है।
- 114. रही माल का निपटान :--- इसके लिए अनुमोदम बोर्ड द्वारा निर्धारित दिशा-निर्देशों के अध्यधीन विकास आयुक्त लागू शुल्कों और करों का भुगतान करने पर उत्पादन प्रक्रिया से उत्पन्न रही/उपिषठ उत्पाद/अवशेष की बिकी घरेलू टैंरिफ क्षेत्र में करने की अनुमति दे सकता है। परिशिष्ट दो में विनिदिष्ट मानदण्डों को ध्यान में रखते हुए बोर्ड द्वारा ऐसी रही/अपिषट उत्पाद/अवशेष का प्रतिशत निर्धारित किया जाएगा।
- 115. मिजी बंधिस माल गोदाम :— निम्नलिखित शर्तों के ग्रध्यधीन निर्यात श्रीभमुख यूनिटों तथा निर्यात संसाधन क्षेत्र की यूनिटों के लिए शुल्क मुक्त कच्चे माल, संघटक श्रादि के स्टाक एवं बिकी के लिए निर्यात संसाधन क्षेत्रों के भीतर बिकी के लिए निर्यास संसाधन क्षेत्रों के भीतर निजी माल गोदाम स्थापित करने की श्रनुमति दी जा सकती है:—
 - (क) निजी बंधित माल गोदाम निर्यात संसाधन क्षेत्र के श्रन्वर स्थित होंगे ;
 - (ख) ऐसे निजी बंधित माल गोदाम के लिए श्रायातों की श्रनुमित विशिष्ट लाइसेसीं के महे थी जाएगी ; ऐसी मदों के ग्रायास के लिए कोई श्रनुमित नहीं थी जाएगी जो उपभोक्ता यूनिटों द्वारा श्रवेक्षित न हों ; ग्रौर
 - (ग) निजी माल गोदाम द्वारा भ्रायातित मदों को घरेलू टैरिफ क्षेत्र में बिकी की भ्रनुमित नहीं दी जाएगी।
- 116. बन्धपत्न की लागू श्रवधि: निर्यात श्रिभमुख स्कीम के अन्तर्गत यूनिटों के लिए बंधपत्न की लागू श्रविध 10 वर्ष होगी। तीत्र प्रोधीिंगकी परिवर्तन करने वाले उत्पावों के मामले में यह श्रविध श्रनुमोदन बोर्ड (बी. श्रो. ए.) द्वारा घटाकर 5 वर्ष की जा सकती है। बन्धपत्न की लागू श्रविध पूरी होने पर यह यूनिट की इच्छा पर निर्भर होगा कि वह, इसे जारी रखें या स्कीम में कोई विकास्प ढुंडे। तथापि, बन्धपत्न से इस प्रकार की मुक्ति विकारप देते समय लागू श्रीद्योगिक नीति के अध्यक्षीन वी जाएगी।
- 117. बन्धपल से विमुक्ति :— निर्यात श्रिभमुख यूनिट/निर्यात संसाधन क्षेत्र की यूनिटों को निर्यात श्राभार, मूल्यवर्धन या अन्य अपेक्षांश्रों की पूर्ति में श्रसमर्थ होने पर अनुमोदन बोर्ड की संसुष्टि पर बाण्ड रहित निया जा सकता है। इस प्रकार बन्धपल से वंचित करने में ऐसे वण्ड दिए जाएंगें जिल्ले निम्नलिखित करों के श्राधार पर लगाया जा सकता है:—
 - (क) घटे हुए मूल्य पर लेकिन आयात के लिए समय अचिलत वरों पर पूंजीगन माल पर सीमा शुल्क ;
 - (ख) ग्रायात के समय मूल्य पर तथा निकासी के समय चालू दरों पर भ्रप्रयुक्त कच्छे माल ग्रीर संघटकों पर सीमाशुल्क।
- 118. परिवर्तन :-- मौजूदा की. टी. ए. यूनिटें किसी निर्यात अभिमुख यूनिट में परिवर्तन के लि**ए ग्रावेदन कर स**कती है लेकिन पहले से प्रक्षिण्ठापित संयंत्र, मशीनरी ग्रौर उपस्कार के लिए योजना के ग्रन्तर्गत शुल्कों ग्रौर करों में कोई छूट नहीं वी जाएगी।
- 119. इस श्रध्याय के लिए "मूल्य संयोजन" प्रतिशतता के रूप में व्यक्त किया जाएगा भीर निम्नलिखित सूत्र के भनुसार संगणित किया जाएगा :---

जहां की . ए . = मूल्य संयोजन है

ए = निर्यात श्रीभनुष्य यूनिट/निर्यात संसाधन क्षेत्र की यूनिट द्वारा रिलीज किया गया जहाज पर्यस्त निःशुल्क मूल्य है, श्रीर बी. = सभी श्रायातित निर्वेशों के लागत बीमा भाड़ा मूल्य का कुल योग, कमीशन, रायस्टी, फीस या किसी श्रन्य प्रिकार के माध्यम के विदेशी मुद्रा में किए गए सभी भुगतानों का मूल्य श्रीर निर्यात श्रीभमुख यूनिट/निर्यात संसाधन केत यूनिट द्वारा खरीदे गए सभी देशीय निवेशों का मूल्य है। निवेशों का श्रर्थ है—कश्वा माल, मध्यवर्ती, संघटक, करुय्मेबिल्स पार्टस श्रीर पैंकिंग सामग्री।

श्रद्याय दस

श्रभिग्रहीत मियति

120. परिभाषा:--- "ग्रिभिप्रहीस निर्यात" का ग्रर्थ उस लेन देन से है जिसमें संभरित किया गया माल देश से बाहर महीं जाता है और संभरक द्वारा माल के लिए भुगतान भारतीय रुपयों में प्राप्त किन्तु संभरण से देश के लिए विदेशी मुद्रा की ग्राय ग्रथमा बचस होती है।

- 121. संभरण की श्रेणियां :-- इस नीति के तहत निम्नलिखित श्रेणियों के माल का संभरण "ग्रभिग्रहीत निर्यात" के रूप में माना जाएगा बगर्ते कि माल भारत में विनिर्मित है श्रीर भुगतान भारतीय रुपयों में प्राप्त हुआ है :
 - (क) शुल्क मुक्त स्कीम के तहत जारी "शुल्क मुक्त लाइससीं" के मद्दे माल का संभरण।
 - (ख) विदेशी समुद्री जहाजों ग्रीर विदेशी हनाई सेवाश्रों को भारत में माल का संभरण।
 - (ग) निर्यात संसाधन क्षेत्रों (ई. पी. औष्ठ.) या निर्यात श्रमिमुख यूनिटों (ई. श्रो. यू.) में स्थित यूमिटों को माल का संभरण।
 - (घ) निर्यात संवर्धन पूंजीगत माल स्कीम (ई. पी. सी. जी.) के तहत लाइसस धारकों को पूंजीगत माल का संभरण।
 - (इ) तेल एवं प्राकृतिक गैस भायोग (भ्रो. एन. जी. सी.) श्रायल इंडिया लि. (भ्रो. ग्राई. एल.) श्रौर भारतीय गैस प्राधिकरण लिमिटेड (जी. ए. श्राई. एल.) को उनके श्रपतटीय भौर तटीय धनुसंधान, ड्रीलिंग श्रीर उत्पादन प्रक्रियाओं के लिए पूंजीगत माल, संधटकों, पुजों, कक्षे माल, उपभोज्यों, उपकरणों, उपसाधित्रों, श्रौजारों श्रौर श्रीतरिक्त पुजों का संभरण।
 - (च) निम्निलिखित वहुपक्षीय या द्विपक्षीय श्रीभक्तरणों/निधियों या श्रन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगी बोली के तहत या उन श्रीभक्तरणों/ निधियों की प्रक्रियाओं के श्रनुयार सीमित निविदा पद्धति के तहत केर्द्र सरकार द्वारा श्रीधसूचित िती श्रम्य श्रीभक्तरण/निधि द्वारा वित्त पोषित परियोजनाश्रों को माल का संभरण :---
 - (1) अरब आर्थिक विकास के लिए आब्धाबी फण्ड।
 - (2) एशियाई विकास बैंक (ए. डी. बी.)
 - (3) अन्तर्राष्ट्रीय पुनः निर्माण और विकास वैक (विश्व वैंकं)
 - (4, कृषि विकास अम्लर्राष्ट्रीय निधि।
 - (5) के. एफ. डब्स्यू.।
 - (6) ग्ररव ग्रायिक विकास के लिए कुवैती निधि।
 - (7) पेट्रोल निर्यासका देश संघ निधि (श्रोपेका)
 - (8) सऊवी विकास निधि (एस. एफ. डी.)
 - (१) संयुक्त राज्य अन्तर्राष्ट्रीय विकास अभिकापण (यू. एस. ए. श्राई. डी.)।
 - (10) विवेश श्रार्थिक सहयोग निधि के माध्यम से मार्गीकृत येन कैडिट (श्रो. ई. सी. एफ.)।
 - (छ) उर्बरक संयंत्रों को भारतीय मुख्य ठेकेवारों द्वारा पूंजीगत भाल का संभरण, यदि संभरण श्रन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगी बोली की प्रक्रिया के अधीन किया गया हो।
- 122. प्रभिष्महीत निर्यात के लिए लाभ :── श्रभिग्रहीत निर्यात के रूप में पाझता करने वाले माल के विनिर्माण श्रौर श्राप्ति के संदर्भ में श्रभिग्रहीत निर्यात पर निम्नलिखित लाभ विए जायगे :──
 - (1) ग्रध्याय सात के ग्रधीन शुरुत मुक्त स्कीम।
 - (2) शुल्क वापसी स्कीम।
 - (3) टर्मिनल उत्पाद मुल्ल की घापसी।
 - (4) आयात की निषेधारमक सूची में शामिल ऐसी मदों के आयात के लिए ऐसे मूल्य या अभिग्रहील निर्यात के मूल्य के ऐसे अनुपात के लिए इस संबंध में अधिसूचित की जाने वाली स्कीम के अनुसार विशेष आयात लाइमेंस।

अध्याय-ग्यारह

नियति

- 123. सुक्त निर्यात—सभी निर्यात बिना किसी प्रतिबन्ध के होंगे लेकिन यह वहीं तक सीमित एहेगा अहां सक्त कि बै निर्यात की निषेधात्मक सूची या इस नीति के प्रावधानों द्वारा या कुछ समय के लिए लागू किसी ग्रन्य कानून द्वारा विनियमित होते हों।
- 124. पंजीकरण सह-सवस्थता प्रमाण-पत (धार.सी.एम.सी.)-;कोई भी व्यक्ति जो, ग्रायात या निर्यात लाइसेंस के लिए ग्रायवा इस नीति के ग्रन्तर्गत लाभ या माफी के लिए ग्रायवा करता है उसे निर्यात संवर्धन परिषद् (ई.पी.सी.) जिसका वह सवस्य है, से पंजीकरण-सह-सवस्यता प्रमाणपत्र प्रस्तुत करना होगा।

- 125. परियोजना निर्यात:—विशिष्ट रूप से विनियमित न की गई मदों का निर्यात विदेश में परियोजनाधों के लिए किया जा सकता है। निर्यात की निर्येधारमक सूची में सम्मिलित मदों के निर्यात की श्रनुमित सक्षम प्राधिकारी द्वारा दी जा सकती है।
- 126. संविदाओं को अनामांकित करना:— सभी निर्यात संविदाएं मुक्त परिवर्तनीय मुद्रा में ग्रनामांकित की जा सकेंगी। उन संविदाओं के मामले में जिनका भुगतान एसियन क्लीयरिंग यूनियन (ए.सी.यू.) के माध्यम से प्राप्त हुन्ना है तो उसे ग्रायातक ग्रयवा निर्यातक देश में ग्रयवा मुक्त परिवर्तनीय मुद्रा में ग्रनामांकित किया जा सकता है। तथा इस प्रकार प्राप्त हुए सारे भुगतान को परिवर्तनीय मुद्रा में प्राप्त हुन्ना माना जाएगा।
- 127. रुपया भुगतान क्षेत्र के देशों के साथ निर्यात संविदायें:—रुपये भुगतान वाले देशों)पूर्ववर्ती रुपये भुगतान वाले देशों के लिए निर्यातों की श्रनुमित इन देशों के साथ हस्ताक्षरित व्यापार करार/नयाचार की शतों के श्रन्तर्गत दी जा सकती है। तथापि, गैर-परिवर्तनीय भारतीय रुपयों में भुगतानों के महे ऐसे देशों के लिए निर्यात को ऐसे प्राधिकारी के पास पंजीकरण होना ग्रमेक्षित है जो इस ग्राशय के लिए विनिर्दिष्ट किया गया हो।
- 128. पुनः निर्यात:—इस नीि के प्रधीन सामान्य मुद्रा क्षेत्र (जी.सी.ए.) में स्थित किसी देश ग्रायातित भाल की उसी ग्रयवा कुछ बदली हुई स्थिति में रुपया भुगतान क्षेत्र के किसी देश की बिना लाइसेंस के निर्यात नहीं किया जा सकेगा।
- 129. निजी श्रसबाब का निर्यात: बाहर जाने वाले भारतीय याद्रियों के वास्तविक निजी श्रसबाब को या तौ याद्रियों के के साथ ही या यदि साथ न ले जाना हो तो भारत से याखी के प्रस्थान के पहले या बाद में एक वर्ष के श्रन्दर ले जाने की श्रनुमित है। निर्यात की निषेधात्मक सूची में सम्मिलित मदों के लिये प्रति व्यक्ति 100 किलोग्राम की सीलिंग तक की खाद्य मदों को छोड़कर सक्षम प्राधिकरी से एक लाइसेंस लेना जरूरी होगा।
- 130. जहाज भण्डागार.—निषेधात्मक सूची में ग्राने वाली मवों को छोड़कर सभी मदों को नौ परिब्रहन पोतों के कर्मीदल तथा यात्री जहाज भण्डार के तौर पर बिना लाइसेंस के ले आ सकते हैं। निर्यात की निषेधात्मक सूची में सम्मिलित मदों के लिये प्रतिबंधित मदों को छोड़कर भारत सरकार के जल भूतल परिवहन मंत्रालय द्वारा ग्रिधिसूचित मदों के लिये लाइसेंस लेना जरूरी नहीं है।
- 131. उपहारों का निर्यात:—3,000/- रुपये से ग्रधिक मूल्य के किसी भी माल का निर्यात उपहार स्वरूप महीं किया जा सकता। केवल 3,000/- रुपये तक मूल्य की खाद्य सामग्री को छोड़कर निर्यात निवेधारमक सूची में मदों को उपहार के तीर पर बिना लाइसेंस के निर्यात नहीं किया जा सकता।
- 132. वेशीय श्रितिरक्त पुर्जों का निर्यात: उपस्कर मशीनरी, ग्राटोमोबाइल के वारण्टी ग्रितिरक्त पुर्जों ग्रीर श्रम्य मबों का निर्यात मुख्य उपस्कर के साथ ही साथ या बाद में ग्रपनी वारण्टी/निष्पादम गारण्टी के दौरान विगत लाइसेंसिंग ग्रविश्व के निर्यातों के कुल जहाज पर्यन्त निश्लक मूल्य 2% तक दिया जा सकता है। इस प्रकार के निर्यातों की घौषणा निर्यातक के बीजक पोत परिवहन बिल ग्रौर जी ग्रार फार्म में सीमाशुल्क प्राधिक।रियों से ग्रवश्य की जानी चाहिये। जहाज पर्यान्त निश्लक मूल्य के 2% से ग्रविक मूल्य के ग्रातिरक्त पुर्जों को गुण दोष के ग्राधार पर निर्यात लाइसेंसिंग समिति (ई.एल.सी.) द्वारा श्रनुमित किया जायेगा।
- 133. पारगमन मुविधा:—भारत के समीपवर्ती देशों, जिनका ग्रापना स्वयं का कोई समुद्री स्थल न हो, के साथ स्थल से माल भेजने की ग्रनुमति है बशर्ते कि पारगमन ट्रैफिक को विनियमित करने की प्रक्रिया के ग्रनुसार वे माल उस देश में ही खपत के लिये हों।
- 134. ग्रन्सवंतीं प्रबन्ध: —यदि ग्रन्यथा रूप में मुख्य नियंत्रक ग्रायात निर्यात द्वारा निर्दिष्ट नहीं किया गया है, इस नीति का कोई संशोधन इसमें व्यवधान उत्पन्न करता है या संशोधन से पूर्व पूर्ण भुगतान ग्रग्रिम प्राप्त होने की स्थिति में ग्रपराकाम्य साख-पत्न द्वारा समर्थितं होने पर यदि निर्यात का किसी ग्रनुबन्ध इस प्रकार तैयार करना चाहिए जैसे कि यह संशोधन उसके भामले में लागू नहीं होता है।

अध्याय न।रह

मियात सदम, व्यापार सदन और स्टार व्यापार सदन

135. परिभाषा:—31 मार्च, 1992 तक समय-समय पर निर्धारित किये गये मानदण्ड के प्रस्तर्गत व्यापारी और विनिर्माता निर्यातका और व्यापारिक कम्पनियों इनमें विदेशी इक्विटी रखने वाली सहित निर्यात प्रभिमुख यूनिटों (ई.ओ.यू.) और निर्यात संसाधन क्षेत्रों (ई.पी. जैंड.) में स्थित यूनिटों को निर्यात सबन, व्यापार सदन या स्टार व्यापार सदन के रूप में मान्यता दी गई है। सभी निर्यात सदम, व्यापार सदम और स्टार व्यापार सदम और स्टार व्यापार सदम उनको स्वीकृत समय के लिये उस स्थिति को बनाये रखेंगे।

136. नवीनीकरण के लिये मानवण्ड—तथापि, जब कोई निर्यात सदन, व्यापार सदन या स्टार व्यापार सदन पूर्वोक्त समया-विधि की समाप्ति पर निर्यात सदन, व्यापार सदन या स्टार व्यापार सदन, जैसा भी मामला हो, के रूप में मिली मान्यता के नवीनी-करण के लिये बावेदन करता है तो ऐसी मान्यता निर्धारित मानवण्ड के धन्तर्गत दी जायेगी।

137. मान्यता के लिये मानदण्ड--निर्यात सदन, व्यापार सदन या स्टार व्यापार सदन के रूप में मान्यता के लिये 1 अप्रैल, 1992 से गत तीन लाइसेंसिंग वर्षों में अजित नियल निदेशी मुद्रा अथवा गत वर्ष में अजित नियल निदेशी मुद्रा, जो भी पूरा करता हो, निम्नामुसार मानदण्ड होगा:--

नर्ग	आधारभूत भविश्व प्रयात् गत तीन लाइसेंसिंग वर्षों के दौरान आजित निवल विवेशी मुद्रा का वार्षिक औसत रुपयों में	म्राधारभूत मनिध श्रर्थात् गत लाइसेंसिंग वर्ष में नमाई गई निवल विदेशी मुद्रा (एन.एफ. ई.) रुपयों में।
नियात सवन	6 करोड़	12 करोड़
म्यापार वदन	30 करोड़	60 करोड़
स्टार स्थापार सदन	125 करोड़	150 करोड़

138. निवल विदेशी मुद्रा की गणना—इस मानवण्ड के उद्देश्य के लिए विदेशी निवल मुद्रा (एन.एफ.ई.) की गणना नियांतक द्वारा किए गए नियांतों के जहाज पर्यन्त निःशुल्क मूल्य को शामिल करके और उसमें से निम्नलिखित को घटाकर की जाएगी:—

- (क) उसके द्वारा भावातित सम्पूर्ण माल (पूंजीगत गाल से भिन्न) का लागत बीमा भाड़ा मूल्य, किसी सहयोगी या समर्थित विनिर्माता में नाम में या उसके माध्यम से भ्रायातित (पूंजीगत माल से भिन्न) संपूज माल का लागत-बीमा-भाड़ा मूल्य, और
- (ग) निर्यात द्वारा कमीशन, रायल्टी गुल्क प्रयक्षा किसी प्रन्य प्रभार के रूप में मुद्रा के रूप में किया गया भुगतान ।
- 139. ग्रगर कोई निर्यातक उपर्युक्त पैरा 137 के ग्रन्तगैत निर्यान सचन, व्यापार सचन या स्टार व्यापार सचन के रूप में मान्यता प्राप्त करने के लिए 1 ग्रप्रैल, 1992 को या इसके बाद श्रावेदन करता है तो 1989-90, 1990-91 ग्रीर 1991-92 के वर्षों के दौरान ग्राजित निदल विदेशी मुद्रा की गणना उपर्युक्त पैरा 138 के ग्रनुसार की जाएगी।
- 140. लघु उद्योगों (एस.एस.चाई.)/हस्तिभिल्प क्षेत्रों को छितिरिक्त लाभ वैधता भौर ग्रवधि:- लघु उद्योगों और हस्तिभिल्प क्षेत्रों द्वारा विनिमित उत्पादों के निर्यात से र्षाजत निवल विदेशी मुद्रा का कमशः द्विगुना और तीन गुना अतिरिक्त लाभ दिया जाएगा। हस्तिभित्य उत्पादों में रेशम उत्पाद भी शामिल होंगे।
- 141. निर्यात सदन/व्यापार सदन/स्टार व्यापार सदन प्रमाण-पद्म, जब तक अन्यथा उल्लिखित न हो, लाइसेंसिंग वर्ष के 31 मार्च को समाप्त होने वाले तीन वर्षों की अविध के लिए वैद्य होंगे। पहने प्रमाणन की अविध समाप्त होने पर ऐसे सदनों को आविदन करने और नवीन प्रमाण-पद्म प्राप्त करने के लिए छः माह की रियायती अविध अनुमित होगी।
- 142. लाभः इस संबंध में ग्रधिसूचित की जाने वाली एक स्कीम के श्रतुसार निर्यात सदन/व्यापार सदन/स्टार व्यापार सदन ग्रायातों की निर्येधारमक सूची में शामिल ऐसी मदों के ग्रायात के लिए पूर्ववर्ती लाइसेंसिंग वर्ष में श्रीजत किए गए ऐसे मूल्य या कुल विदेशी मुद्रा मूल्य से ऐसा ग्रनुपात रखने वाले पूल्य के विशेष ग्रायात लाइसेंसों को प्राप्त करने के हकदार होंगे।

अध्याय-ते रह

निर्यात संबंधन परिपदें

- 143. निर्यात संबर्धन परिषदें इस समय 19 निर्यात संवर्धन परिषदें हैं जिनका मूल उद्देश्य देश के निर्यात का संबर्धन एवं विकास करना है। प्रत्येक परिषद किसी एक विशिष्ट उत्पादों के समूह, परियोजनाओं तथा सेवाओं के संवर्धन के लिए उत्तरदायी है। निर्यात संवर्धन परिषदें नीचे दी गई हैं:--
 - (1) इंजीनियरी निर्यात संवर्धन परिषद्, कलकत्ता।
- (2) ओवरसीज कन्सद्रकशन कोंसिल ऑफ इंडिया, सम्बर्ध। 852 GI/92---8

- (3) इलैक्ट्रॉनिक्स एवं कम्प्यूटर सापटवेयर निर्यात संवर्धन परिषद्, नई दिल्लो ।
- (4) प्लास्टिक एवं लिनोलियम निर्यात संवर्धन परिषद्, बम्बई।
- (5) मूल रसायन, भेषज तथा प्रसाधन सामग्री निर्यात संवर्धन परिषद्, बम्बई ।
- (6) रसायन एवं सम्बद्ध उम्पाव निर्यान संवर्धन परिषद, कलकता ।
- (7) रत्न एवं ग्राभूषण निर्यात संवर्धन परिषद्, बम्बई ।
- (8) चमड़ा निर्यात परिषद, मद्रास ।
- (9) खेल कृद सामग्री नियात संसर्धन परिवद, नई दिल्ली ।
- (10) काजू निर्यात संवर्धन परिषद्, कोचीन ।
- (11) चमड़ा निर्यात संबर्धन परिषद्, कलकत्ता ।
- (12) परिश्वान निर्यात संबर्धन परिषद्, नई दिल्ली ।
- (13) सिन्थेटिक एवं रेयन वस्त्र निर्याप्त संवर्धन, परिवर्ष, बम्बई।
- (14) भारतीय रेशम निर्यात संवर्धन परिषद, बम्बई।
- (15) कालीन निर्यात संवर्धन परिषद, मई दिल्ली ।
- (16) ह्यकरंका निर्मीत संबर्धन परिषद्, नई दिल्ली।
- (17) ऊन तथा ऊनी वस्त्र नियति संवर्धन परिषद्, मई दिल्ली ।
- (18) सूती वस्त्र निर्यात संवर्धन परिषद्, बम्बई
- (19) हस्तिशिल्प निर्यात संबर्धन परिषद, मद्रास ।
- 144 लाभ न कमाने वाले संगठन :—निर्यात संबर्धन परिषदें कम्पनी ग्रधिनियम ग्रथवा समितियां पंजीकरण अधिनियम जैसा भी मामला हो, के ग्रन्तर्गत लाभ न कमाने वाले संगठन हैं। इन्हें केन्द्र सरकार द्वारा वित्तीय सहायता दी जाती है।
- 145. भूमिका— निर्यात संवर्धन परिषदों की मुख्य भूमिका उच्च स्तर के माल के विश्वसनीय सज्लाईकर्ती और सेवाओं के देने के रूप में भारत के जिल्ल को प्रस्तुत करना है। विशेषतः निर्यात संवर्धन परिषदें, निर्यातकों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मानहों एवं विशिष्टयों के संवर्धन तथा मानीटरिंग के प्रेक्षणों का कार्य करेंगी। उन्हें माल और सेवाओं के लिए अंतर्राष्ट्रीय माकिटों में प्रवसरों और रखों पर नजर रखनी होगी और निर्यातों के विस्तार तथा विविधता लाने के उद्देश्य से रेंग प्रवसरों का लाभ उठाने में प्रभने सबस्यों की सहायता करेंगी।
 - 146. कर्लाध्य---निर्यात संवर्धन परिषदों के मुख्य कार्य निस्न प्रकार हैं :--
 - (क) अपने सदस्यों की उनके निर्यातों में विस्तार तथा वृद्धि करने में सहायता करना तथा वाणिज्यिक लाभकारी सूचनाएँ उपलब्ध कराना।
 - (ख) भ्रपने सदस्यों को भौग्रोगिकी प्रोन्नति, गुणवसा तथा डिजाइन मुद्धार मानकों तथा विशिष्टियों, उत्पाद-विकास नवीन प्रिक्रिया और भ्रन्य ऐसे मामलों में व्यावसाधिक परामर्श देना।
 - ं(ग) विदेशी बाजार का श्रष्ट्ययन करने के लिए विदेशों में आनंते सदस्यों के प्रतिनिधिनंडलों के दौरों की अविभिन्न करना।
 - (घ) भारत तथा विदेशों में व्यापार मेलों, प्रदर्गनियों तथा खरीद-फरोब्त की गोष्टियों में भाग लेने के प्रबंध करना।
 - (छ.) केन्द्र एवं राज्य दोनों स्तरों पर निर्यातकः समुदाय एवं सरकार के बीव पारस्थरिकः। की बढ़ाना ।
 - (च) देश के निर्यातों एवं प्रायातों, श्रवने सदस्यों के निर्वातों एवं श्रायातों के साथ-साथ सम्बद्ध अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संबंधी श्रामहों की व्यवस्था करना तथा सांख्यिकीय श्राधार का निर्माण करना।
- 147. सदस्यता—कोई भी निर्यातक/ग्रायातक निर्यात संवर्धन परिषद् का सदस्य बनने के लिए ग्रावेदन कर सकता है और निर्यात संवर्धन परिषद् के नियमों एवं विनियमों के अनुसार एक महीने के अंदर ऐसे ग्रावेदन पर विचार एवं उसका निपटान किया जाएगा। सदस्यता प्राप्त होने पर प्रावेदक को एकदम एक पंजीकरण-सह-सदस्यता प्रमाग-पद्म (ग्राप्तीएमसो) दिया जाएगा।

- 148. व्यावसाधिक संस्था—निर्यातों में वृद्धि करने के लिए ग्राने उत्तरदाधित को निर्माने के उद्देग्य से यह महत्वपूर्ण है कि निर्यात संवर्धन परिवर्दे व्यावताधिक संस्थाओं के रूप में कार्य करें। इस उद्देश्य के लिए ऐसे कार्यकारी ग्रिकिशियों को जिन्हें व्यावसाधिक ज्ञान एवं उद्योग, वाणिज्य तथा अंतर्राष्ट्रीय मार्किटिंग में प्रतुमन हो, निर्यात संवर्धन परिपदों में लाया जाना चाहिए।
- 149. स्वायत्ता—निर्यात संवर्धन परिषदें स्वायत्त्रगासी होंगी और श्रपने कामों को स्वयं विनियमित करेंगी। उन्हें बिकी दलों श्रयवा प्रतिनिधियों को मेलों/प्रदेशनियों छादि में भाग लेने के लिए विदेशों में भेजने हेतु सरकार को मंतूरी लेना श्रोक्षित नहीं होगा। सरकार केवल निर्यात संवर्धन परिषदों की वार्षिक योजनाओं एवं बजट को ही हती देगी तथा उनके कार्य निष्पादन का प्रबोधन एवं मूल्यांकन करेगी। वाणिज्य/वस्त्र मंद्रालय में दो बार, प्रथमतः वार्षिक योजना एवं बजट की स्वीकृति के लिए और दूसरी बार वर्ष के बीच में समीक्षा करने के लिए सम्बन्धित परिवद् की प्रबंध समिति के साथ परस्वर कार्यवाही करेंगे।
- 150. समर्थन के लिए पार्त---नियोत संवर्धन परिषदों को सरकार द्वारा दिया गया समर्थन धनराणि के रूप में प्रयुवा प्रत्य किसी प्रकार का निम्न पर निर्भर करेगा :---
 - (1) उनको सौंपे गए कार्यों का प्रभावी तरीके से निष्पादन ।
 - (2) निर्यात संवर्धन परिषदों की सदस्यता का लोकतांत्रिकरण।
 - ('3) नियमित प्रन्तराली पर लोकनांत्रिक रूप मे निर्यात संवर्धन परिषद् के पदाधिकारियों का चुनाव करना, और
 - (4) निर्यात संबर्धन परिषद् के लेखों की समय-समय पर लेखा परीक्षा कराना।

अध्याय-चौदह

गुणवत्ता

- 151. गुणवत्ता के प्रति जागरूक ग्रभियान—भारत सरकार की नीति भ्रपने उत्पादों के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृतं गुणवत्ता के मानदण्डों को प्राप्त करने के लिए विनिर्माताओं और निर्मातकों को प्रोत्साहित करने की है। भारत सरकार गुणवत्ता जागरूकता पर एक राष्ट्रक्यापी कार्यक्रम बनाने और कुल गुणवत्ता प्रबंध के विचार को बढ़ावा देने के लिए उद्योग और व्यापार संस्थानों के लिए सुविधा और ममर्थन में बढ़ोत्तरी करेगी।
- 152. राज्य स्तरीय का किम केन्द्र सरकार अपने-अपने राज्य में विशेषकर छोटे पैमाने और हस्तिशल्प क्षेत्रों में इसी तरह के कार्यक्रम बनाने के लिए राज्य सरकारों को भी प्रोत्साहन और मुविधा प्रधान करेगी।
- 153. पुरस्कार और लाभ—केन्द्र सरकार ग्राईएसओ 9000 (सीरिज) ग्रथवा बी ग्राई एस 14000 (सीरिज) ग्रथवा अंतर्राव्द्रीय स्तर पर स्वीकृत कोई श्रन्य समकक्ष गुणवत्ता प्रमाणपत्र प्राप्त करके विनिर्माताओं को मान्यता प्रदान करने और उप्युक्त रूप से पुरस्कृत करने के लिए एक पीजना प्रारम्भ करेगी। इस मंबंध में, ग्रधिमूचित की जाने वाली योजना में उल्लेख किए जाने वाले श्रावातों की नियेधात्मक सूची में ग्रामिल मदों के आयात के लिए ऐसे विनिर्माता मून्य या ग्रपने ग्रायातों के मूल्य से ऐसे श्रनुवात रखने वाले मूल्य के लिए पिगेष ग्रायात लाइसेंसों की प्रान्त करने के लिए पात्र होंगे।
- 154. परीक्षण गृह—केन्द्र सरकार परीक्षण गृहों और प्रयोगशालाओं को अंतर्राष्ट्रीय स्तर का बनाने के लिए उनके आधु-तिकीकरण और स्तर ऊंचा करने में महायता करेगी ताकि ऐसे परीक्षण गृहों और प्रयोगशालाओं द्वारा किएं गए प्रमाणन को देश और बिदेश में मान्यता मिल सके।

अध्याय-पग्द्रह

आयात की निवेधारमक सूर्या

155. प्रतिबन्धित मदें

भाग-एक

कम सं.	, मदों का सिवरण	प्रतिबन्ध का स्थरूप
1	2	3
-	खित महित किसी पण् मूल का टैलो, फैंट और/या रेंडरड, धनरेंडरड प्रत्यका ऑयल :	भावात भनुमेय नहीं है।
•	ाई स्टीरीन, ओलिया स्टी <mark>रीन, टैलो स्टीरीन, लाई औयल, ओलियो ऑयल</mark> तथा टैलो ऑयल जी किसी भी प्रकार ने एम्स्सीइफॉड या मिक्सड या तैयार र किया थेया हो।	

1

2

3

- (2) नीट्स फूट ऑयल तथा बोन ग्रयवा वेस्ट से फैट।
- (3) पोल्ट्री, फैट्स, रेन्डरड भ्रयना सोल्वैंट एक्सटरैक्टिड ।
- (4) मछली के फैट और तेल/मैरिन ओरिजन चाहे रिफाइण्ड हो ग्रथवा नहीं कॉड, लीवर ऑयल को छोड़कर (फार्माकोशोग्नाइएल ग्रेड) तथा ग्राइकोसपेंटी नोइक एसिड एवं डी-कोसाहिक्सीनोइक एसिड वाला फिश लिपिड ऑयल।
- (5) मरगारिन, इभिटेशन लार्ड तथा पशु मूल के खाद्य फैट्स से सैयार किया गया।
- 2. पश् रैनेट।
- 3. बिना निर्मित हाथी दांत ।

156. प्रतिबंधित गर्वे

माग-दो

क. उपभोज्य

माल

ऋम सं. मद का विवरण

प्रतिबन्ध का स्वस्प

1

2

3

सभी उपभोज्य माल, तथापि निर्निदिष्ट, औद्योगिक, कृषि संबंधी, खनिज संबंधी प्रथवा पशुमूल, चाहे एस. के. डी./सी. के. डी. हालत में हो प्रथवा सैंट एकत करने हेतु तत्पर हो प्रथवा तैयार रूप में हो।

शंका के समाधान हेतु एतद्वारा घोषणा की जाती है कि उप-भोज्य माल में निम्नलिखित भी सम्मिलत होगा:---

- उपभोज्य इलैक्ट्रानिक माल, उपकरण और सिस्टम जो किसी भी रूप में विणित हो।
- 2 उपभोज्य दूर संचार उपस्कर
- एस. के. डी./सी. के. डी. में घड़ियां प्रयवा निर्मित हालत में तथा गति (मैकेनिकल), घड़ी के केस, घड़ी के डॉयल।
- 4. सूती, ऊनी, रेशमी, मानव-निर्मित तथा सूती टैरी टॉवल, फैबरिक सहित बलैंडिड फैबरिक्स ।
- 5. ग्रल्कोहलिकमविरा के सांव्रण ।
- 6. मदिरा (टॉनिक शयबा मेडिकेटिड)
- 7. केसर
- 8. लौंग, दालचीनी तथा तेजपता
- 9. खेलकृद सामग्री/उपकरण

लाइसेंस के मद्दे अथवा इस आशय के लिए जारी सार्व-जिनक सूचना के अनुरूप की छोड़कर आयात अनुमेय नहीं हैं।

लाइसेंस के मद्दे भायात भनुमेय होगा वर्णातें कि भायात के यूल्य के वोगुणे मूल्य का निर्यात भाभार होगा । निर्यात भाभार के लिए श्रहेंक भाल यंगाविनिर्विष्ट होगा ।

लाइसेंस के मद्दे आयात अनुमय होगा । केन्द्रीय अथवा राज्य सरकारों के संगठन जो खेलकूद, शैक्तिक संस्थानों, विश्वविद्यालयों, खिलाड़ियों के संघों, स्पोर्टस क्लब तथा विख्यात खिलाड़ियों भादि से व्यवहार कर रहे हैं, उन्हें केन्द्रीय अथवा राज्य सरकारों के संबंधित विभागों की संस्तुति पर आयात की अनुमति दी आए । L

2

3

10. कैमरा

11. उपमोज्य माल का उपहार

तयापि,

निम्नलिखित मदौँ को उपभोक्ता माल नहीं माना जाएगा:---

- 1 सभी प्रकार के लंकड़ी के लट्डे
- 2. वासें
- 3. रुब्राक्ष के दाने
- 4. कच्चा काजू
- 5. (1) सब्जियों, फूलों और घीधों के बीज, फूलों के कन्द और मक्करन्द
 - (2) फुलों की कटिंग, बालपौध, कलिकाएं भ्रादि ।
- बादाम और खज़र सहित सुखे मेत्रे ।
- 7. होमियो पैथिक तवाएं और ओषधियां
- 8. आयुर्वेदिक तथा यूनानी दवाएं बनाने के लिए अपेक्षित अगोधित औषधियां संगयशब (अड), मोतियों और प्रकलों के आयात की अनुमति केवल चूर्ण रूप में तथा गैर आभूषण वाले रूप में ही होगी।
- 9. जीवन रक्षक तथा दृष्टि रक्षक औषधियां दवाएं और उपस्कर जिन्हें मुख्य नियंत्रक, आंयात-निर्योत द्वारा अधिसूचित किया जाए।
- 10. हींग
- 11. सेंघा नमक
- 12. बध्यापन के सहायक उपकरण जिसमें निम्मलिखित शामिल है:-
 - (1 माइको फिल्म, माइकोफीचेज और पाठक-सह-मुद्रक
 - (2) गैक्षिक प्रकृति के फिल्म स्ट्रिप्स/स्लाइड्स, प्राडियों कैसेट, विडियों टेप्स और विडियो डि॰क
- 13. शिक्षण सहायक उपकरण जैसे भाषा अभिलेख, कैसेट और विडियो
- 14. ब्रेल ाइपराइटरों सहित अंधों द्वारा प्रयेक्षित यंत्र एवं उपस्कर
- 15. प्रीक्षिक, वैशानिक तथा तकनीकी पुस्तकों, प्रतिकाएं, समाचार पहिकाएं, और समाचार पन्न।
- 18. श्रवण-दृश्य समाचार या श्रवण-दृश्य विचार सामग्री जिसमें समाचार के क्लिपिंग भी शामिल हैं।

लाइसेंस के महे भ्रायात भनुमेय होगा । फोटोग्रॉफिक स्टूडियो तथा भ्रविकृत कैमरामैन, विदेशो प्रसारण या टेलीविजन संगठनों के श्रविकृत संवादवाताओं, विदेशी समाचार एजेंसियों भ्रयता विदेशी समाचार पत्नों को विशिष्ट गतौं के भ्रवीन भ्रायात भनुमेय किया जा सकेगा।

धर्म। थं, धार्मिक अथवा शैक्षिक संस्थानों तथा केन्द्र सरकाएं द्वारा विशिष्टीकृत श्रयंवा श्रन्यंवा श्रनुमित व्यक्तियों को विशिष्ट कर्तों के श्रधीन श्रायात की श्रनुमित दी जा सकती है। 1

.

2

3

- 17. बच्चों की फिल्में (बिडिया फिल्मों सहित) जी फिल्म प्रमाणन बोर्ड द्वारा "बच्चों की फिल्म" है के रूप में सत्यापित हीं।
 - 18. पाजिटिव सिनेमेट्रोग्नः फिल कंलर की फिल्मों (ध्रनिभदींगत) के फिल्म्ड रॉल

ग्राफिक फिल्म (रंगीन)

- 20. 120 और 620 म्राकार के रॉलीं की छोड़कर अन्य फीटोग्राफिक फिल्में (क्याम-क्षेत)
- 21. कम्प्यूटर साफ्टवेयर
- कटों, सहायक उपकरणों, यंत्रों, मतिरिक्त पुजों और संघटकों सहित भ्रमेटियर रेडियों संचार उपस्कर
- 23. सभी प्रकार के गर्भ-निरोधक
- 24. आर्ट और कोम कागज/गसा
- 25. प्रतिकृति मशीन
- 26. ड्राईंग के कागज
- 27. सभी प्रकार के बस और ट्रक के टायर
- ख. मुख्यवान, मर्ध-मूख्यवान और म्रन्य पत्थर
 - 1. क्युविक जिरकोनिया
 - 2. पत्थर
 - (क) भपरिष्कृत हीरे
 - (ख) परिष्कृत तथा बिना काम किए गए सिथेटिक पत्थर (बिना काम किए गए सिथेटिक रूबी को छोएकर)
 - (ग) पन्ना/रूबी और नीलम, ग्रर्ड-मूल्यवान और मूल्यवान पत्थर और मोतियों (वास्तविक या संविधित)
 - 3. ग्रेनाइट पोरिफरी बैसाल्ट बालूका पत्थर और स्मारकीय या इमारती श्रन्य पत्थर चाहे मोटे तौर पर ब्लाकों या स्लैबों में काटकर या धन्यथा, तराशे हुए हों या न हों या केवल कटे: हुए हों।
- 4. 2.5 या पश्चिक धाभासी विशिष्ट गुरूल का संगमरभर ट्रैबर-टाइन, एकामाइन धन्य कल्केक्स स्मारकीय या इमारती पत्थर चाहे मोटे तौर पर ब्लाको या स्लैबी में झाटकर या धन्यथा तरागे हुए हों या न हों या केबल कटे हुए हों।
- 5. सुलमानी (भ्रानिक्स)
- ग. बचाय सुरक्षा और संबंधित मदें
- मुरक्षा मुद्रण के लिए करेंसी पेपर, स्टाम्य पेपर और अन्य बिशेष प्रकार के पेपर
- 2. सभी बोर/साइओं के खाली/चलाए हुए कारसूस
- 3. भाग्नेयास्त्र

लाइसेंस के मध्दे निर्यात के लिए भायात अनुमित है।

---वही---

---वही---

--- agi ---

---वहो----

—- बढ़ी ---

----वही---

लाइसेंस के मद्दे या इस संबंध में जारी सार्वजनिक सूचना के प्रतुसार, को छोड़कर भाषात की प्रतुमति नहीं है।

---बड़ी---

भारत सरकार के युवा मामलों और खेल विभाग की संस्तुति पर विख्यात शूटमें/राइफल क्लबों द्वारा लाइसेंस के मद्दे उनके स्वयं उपयोग के लिए, को छोड़कर भायात की भनुमति नहीं है।

1 2 3

4. गोला-बारूव

- 5. विस्फोटक
- 6. क्लोरो पल्रो हाइड्रोकार्बेम्स (फिओन गौसिज)
- ण. बीज, पौधे और पण्
 - 1. पश्, पक्षी और रेंगने वाले जन्तु

- 2. स्टालिओन्स और बुडमेमर्स
- पशुधन (अध्वीय को छोड़कर) क्योरलाइन स्टाक्स, बङ्सं, एग्म, फ्रोजन सीमेन/एम्ब्रेयो ग्रान्ड पेरेस्ट स्टाक (पोल्ट्री)
- 4. पौधे, बीज और भ्रन्य पौधा सामग्री
- इ. इन्सेक्टिसाइड्स और पेस्टिसाइड्स
 - 1. कोई भी पेस्टिसाइड, इन्सेन्टिसाइड, वीडिसाइड, हरिबसाइड, रोडनटिसाइड और मिटिसाइड जिसका पंजीकरण नहीं हुआ है अथवा जो कीटनाशी अधिनियम, 1969 और उसके फोरमूलेशन के अन्तर्गत आयात के लिए निषेध कर दिया गया है।
 - 2. ही, ही, टी, टेमिनकल 25 इंक्ट्य ही, भी,
- च. इलेक्ट्रामिक मदें
 - निम्नलिखित केथोड रे ट्यूम्स:—
 20" और 21" के भाकार की रंगीन टी. की. पिक्चर ट्यूब जनके उप-साधित और रंगीन टी. वी. धिक्चर ट्यूब वाले उपसाधित

माइसेंस के मद्दे आयात की अनुमति निम्नलिखिल को है:

- (1) भारत सरकार के युवा मामलों और खेल विभाग की संस्तुति पर विख्यात लिभानेवाज/राइफल क्लबों को उनके स्वयं उपयोग के लिए ।
- (2) विशिष्ट प्रकार के गोला-बारूद के लिए लाइसेंसघारी ग्राम्स डीलरों को ऐसी शतों के ग्रधीन जैसा कि उन्हें निर्दिष्ट किया जाए ।
- भारत सरकार के विस्फोटक नियंक्षक की संस्तुति पर सरकारी विभागों और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की प्रायात की अनुमति दी जाए ।

लाइसेंस के मद्दे या इस सम्बन्ध में जारी सार्वजनिक सूचना के घनुसार, को छोड़कर घायात की घनुमति नहीं है ।

इन्टरनेशनल ट्रेड इन एनडेन्जर्ड स्पेसीज आफ वाइस्ड फीना और फ्लोरा (सी. प्रार्ड टी. ई. एस.) पर सम्मेलन के प्रावधानों की शर्त के ध्रधीन राज्य सरकार के मुख्य वन्य जीव वाईन की संस्तुति पर चिडियाघरों और प्राणी विज्ञान उद्यानों, मान्यताप्राप्त बैज्ञानिक/प्रानु-संधान संस्थाओं/सर्कस कम्पनियों/व्यक्ति विशेषों को लाइसेंस के मद्दे आयात की प्रानुमति हैं।

राज्य सरकार के पशुपालन और पशु चिकित्सा सेवाओं के निदेशक की संस्तुति पर लाइसेंस के महे भाषात की अनुमति है।

भारत सरकार के कृषि एवं सहकारिता विभाग की संस्तुति पर लाइसेंस के महे ग्रायात की ग्रन्मित है।

श्रायात (क) पौधे, फल और बीज (भारत में श्रायात का विनियमन) श्रादेण, 1984 के प्रावधानों की शर्त के श्रधीन भारत सरकार के कृषि एवं सहकारिता विभाग की संस्तुति पर लाइसेंस के मद्दे और (ख) इस सम्बन्ध में जारी सार्वजनिक सूचना के श्रनुसार श्रन्मति हैं।

थायात की श्रमुमति नहीं है.।

लाइसेंस के मद्दे आयान् की अनुमृति है।

्लाइनोंस के मद्दे श्रायात की श्रमुमंति 🐉 ।

32	THE GAZETTE OF INDIA	EXTRAORDINARY	[PART]
1	2	3	
2	. दीबार घड़ियों और घलार्म घड़ियों के लिए इस्टीग्रेटिक सरकि डिबाइसिस और चिप्स	ट ्र	
3	. पोपुलेटड, लोडिड या स्टफ्ड प्रिन्टेड सरकिट बोर्ड्स		
4	4. सिंगल सा इडिड प्रिस्टेड सरिकट डो र्ड ्स		
5	 प्लेटिड थ्रू होल सहित या रहित डवल साइडिड प्रिन्टेड सर बोर्ड्स 	िकट	
(35 मि.मी. और 16 मि.मी. स्थोक्टड टेप्स को छोड़कर सभी प्रकार के ऑडियो मेग्नेटिक टेप्स 		
	 हब्स और रील्स, रॉक्स, पेनकेक्स, जस्बो रोल्स में सभी प्रव के बीकियो सेग्नेटिक टैप्स 	गर	
1	 फन्ट और टाप लोडिंग कैसेट मेकेनिज्म और उसकी सब्झसे लियों समेत बीडियो टेप डेक मेकेनिज्म 	म्ब-	
£	 रुपए 6 लाख से कम के लागत-बीमा-भाड़ा मूल्य के कम्प्यूट सिस्टम जिनमें व्यक्तिगत कम्प्ययूटर भी शामिल है 	ंर	
ਚ.	औषध [्] और भेषज		
1	. सभी प्रकार की पेन्सिलीन	लाइसेंस के मद्दे आयात की अनुमति है	ı
2	. ६ए पी.ए.		
4	. टेट्रासाइक्लिन/ओक्सीटेट्रासाइक्लिन और उनके लवण		
4	. जेन्टामाइसिन सल्फेट		
5	इ. स्ट्रेप्टोमा इ सिन		
6	. रिफेम्पिसिन		
7	. रिफेम्पिसिन के मध्यवर्सी, नामशः		
	(1) 3 फारमाइल रिफा एस. बी.		
	(2) रिफा एस/रिफा एस सोडियम		
	(3) 1-एमिनो-4 मेथिल पिपरेजाइन		
8	. बिटामिन बी-1, विटामिन बी-2 और उनके लवण		
9	. विटामिन भी-12		
ज.	रसायन और सम्बद्ध मव		
1	. म्रलाइल भाइसोथियोसियानोट	लाइसेंस के मद्दे श्रायात की श्रनुमति	है ।
2	. केपेसिटर पलूड्सपी. सी. बी. टाइप	 बही	
H ,	लघुक्षेत्र से सम्बन्धित मर्दे		
1	. कापर ग्राक्सिक्लोराइड	लाइसेंस के मद्दे श्रायात की श्रनुमति है	ţ I
2.	डिमिथायल सल्फेट	व ही	
3.	. डी एन पी टी (डिनाइट्रोसी पेस्टामें चिलीन ट्रेंट्रामाइन)	 वही	
4.	. सुगन्धित सत्त—सभी किस्में (जो मदिरा के लिए हैं उनके सहित)	वही	
5.	नियासिन/निकोटिनिक एसिड/मियासिनेमाइड/गिकोटिनेमा६ड/ ए सिडामाइड	—वही	

1	2	3
6.	सुगन्धित द्रव्यों के मिश्रण/रेजिनायड्स के मिश्रण	लाइसेंस के मद्दे धायात की ग्रनुमित है।
7.	प् ष लेट प्लास्टिसा इ जर	—वही
8.	सुगस्धित यौगिक/सिन्थैटिक सूगन्ध तेल	वही
9.	सीसा तथा रूल कटर्स	—-वह ी —-
10.	मार्जेटिंग टेबल	वहीं
11.	सभी मापों के कागज काटने वाले चाकू	—-वही
12.	कागज काटन की मशीनें जिनमें यन्त्रों सहिल मशीनें जैसे कि धाटोमैटिक प्रोग्राम कटिंग ग्रथना ध्री नाइफ ट्रिम्बर्स शामिल महीं हैं।	—व ही-—
1 3.	वायर स्टिचिंग मंगीन सिंगल हैंडिंड	प्रही
14.	ब्रार्टंग के सथा गणितीय यस्त्र	वही
15.	फोटो कोर्पिग इक्यूपमेंट (सावे और रंगीन)	वही
16	. घरेलू बाटर मीटर	—-वही
17.	डम्पी लेवल्स/इंजीनियरों के लेबल्स/मजन निर्माताओं के लेबल्स, (घाटोमेंटिक नहीं) की सभी किस्में और निवक सैट लेबल्स, समतल सकिलों सहित प्रथवा रहित	
	. सभी प्रकार के प्रयोगशाला माइकीस्कोप विविध मर्वे	वरी
1.	वायुयान और हेलिकोप्टर	प्रायात की धनुमति केबल लाइसेंस के मद्दे या इस सम्बन्ध में जारी की गई सार्वजनिक सूचना के आधार पर है इसके प्रतिरिक्त प्रनुमति नहीं है ।
2.	पोत, ट्रावलर, बोट और अन्य जल परिवहन यान	—-वही
3.	वाणिज्यिक और याद्री भ्राटोमोबाइल वाहन जिनमें दुपहिया और तिपहिया औद्योगिक लोकोमोटिय और निजी किस्मों के वाहन शामिल हैं।	वही
4.	तरल स्वर्ण सहित किसी भी रूप में स्वर्ण	—- बही
5.	नारियल जटा (रेशा/धागा/कपदा)	 वही
6.	ग्रखवारी कागज	वही
7.	कच्छी कपास और कपास गार्न	 वही
8.	कच्चा रेगम	यहा
9.	्पालिएस्टर स्टेपल फाइबर/टो	−वही -
10.	प्राकृतिक रबड़	 बही
11.	1500 किलोबाट के डीजल जेनरेटिंग सेट (नोबब्रेक सिस्टम वाले डी जी सेटों को छोडकर)	वही
12.	3.5 के बी ए तक के सुवाहुय विद्युतीय जनरेटर	 बही
	रेडियो ऐक्टिव सामग्री	परमाणु ऊर्जा विभाग की सिफारिश पर झायास किए जाने की झनुमित है ।
14.	रेयर भ्रयं भाक्साइड जिसमें स्टाइल सैण्ड शामि	वही

34 THE GAZETTE OF INDIA : EXTRAORDINARY [PART 1--SEC. 1] 1 3 15. सिनेमेटोग्राफ फीबर फिल्म और वीडियो फिल्म म्रायात की म्रन्मति 🕆 (क) दूरदर्शन, ग्राकाणवाणी, भारतीय राष्ट्रीय फिल्म श्रभिलेखाकार और भारतीय दूरदर्शन संस्थान तथा भारतीय बाल फिल्म सोसाइटी, द्वारा (ख) अन्यों द्वारा ऐसी शतीं के श्रध्यधीन जो इस सम्बन्ध में विनिर्दिष्ट किए जाएं, दी जाएगी। ट. विशेष वर्ग होटलों, रेस्तराओं, यात्रा एजेन्टों और पर्यटन भ्रापरेटरों के लिए श्रायात की श्रनुमति महानिषेशक पर्यटन, भारत सरकार की भ्रावश्यक विशेष मर्वे । सिफारिश पर लाइसेंस के मद्दे दी जाएगी। धायात के लिए पान मर्वे और ऐसे ग्रायातों के लिए गर्वे इस सम्बन्ध में जारी मार्बजनिक सूचना में किए गए उल्लेख के अनुसार होंगी। 2. खेल और मनोरंजन निकायों के लिए अपेक्षित विशेष मदें। मनिवार्य भागात भ्रवेकाओ को पूरा करने के लिए लाइसेंस के मद्दे श्रायात की श्रनुमति है। श्रायान के लिए पात मदें और ऐसे भ्रायातों के लिए शर्ते इस सम्बन्ध में जारी की जाने वाली सार्वेजनिक सूचना में दिए गए उल्लेख के भ्रम्सार होंगी। भाग---शीन 157. सारणीबंद मंदे:--प्रतिबन्ध का स्वरूप मद भा विवरण ऋगसं. 3 भारतीय नेल निगम लिसिटेश 1. पेट्रोलियम उत्नाव (ख) कम्चा तेल (ग) केरोसीन एविएिशन टर्बाइन प्यूल (घ) लिक्किफायड पैट्रोलियम गैस (एल. पी. जी.) (इ) मोटर स्प्रिट (घ) फर्नेस धायल बिट्मेन (एस्फाल्ट) पेविंग ग्रेड (छ) नेप्पा भारतीय खनिज एवं धातु व्यापार निगम लिमिटेड 2. सभी प्रकार के उर्वरक 3. भौषधियां भारतीय राज्य व्यापार निगम

4. तेल (गोले का तेल, मूंग्फली का तेल, कुसुम्भ तेल, ताड़ तेल, भारतीय राज्य व्यापार निगम लिमिटेड तथा हिन्दुस्तान (श्रन्य प्रकार के जिसमें पालमोलिन तथा अन्य खण्ड) रेपसीड वनस्वति तेल नियम लिमिटेड

तेल, सुरजमुखी तेल, सोयाबीन तेल, बिनौले का तेल)

विटामिन-ए और विटामिन-ए परिमिक्सज

35. [भाग I——वांक 1] भारत का राज्यनः भनाक्षारण बीज (गोला, मूंगफली, ताइ, रेंपसीड कुत्मम, सोयाबीन सूरज-मुखी कारास) 6. भ्रन्य सभी तेल भ्रयवा बीज या भ्रन्य जित्म जिससे तेल निकाला ⊸-तवैव----जा सकता है (चाहे जाने वाला या बिना खाने वाला) वन-स्पति गुर्छे सहित जो इस नीति में ऊपर भ्रयवा भ्रन्यत न दिया गया हो (परन्तु तंगु तेल/चाइना लकड़ी का तेल नथा प्राकृतिक भनियायं तेल रहित) 7. चरबीदार एसिड एवं एसिड तेल (ताड़ गिरी तेल, ताड़ स्टीय-भारतीय व्यापार निगम लिमिटेड राइन ताड़ ग्रमाइन्सं, हाइड्डीजनेटिड चरबीदार ग्रमाइन्स, ग्रोलि-यस अमाइन्स तथा स्टीयराइल अमाइन्स जिसमें प्रारम्भिक, बुसरा तीसरा तथा चौथा ग्रंश सम्मिलित है)। भारतीय खाद्य निगम 8. धनाजः श्र**ध्याय**---सोलह निर्यात की निषेधारमक सूची भाग--एक निषिक्य मदें 1. सभी प्रकार के जंगली औव जिसमें उनके भाग श्रीर उत्पाद भी शामिल 👂। 2. विदेशी पक्षी 3. संकटानम्र प्रजातियों की प्रन्तर्राष्ट्रीय व्यापार कंटराधेंसन के परिशिष्ट-1 में शामिल जंगती वनस्पति की सभी मदे। 9. गोमांस मानव प्रस्थिपंजर मळली नेम को छोड़कर किसी पण्मूल का टैली बसा घौर/घयवा तेल 7. लट्ठे, टिम्बर, स्टम्भ, जड़ों, छालों, चित, चूर्ण, पपड़ियों, डस्ट, पत्प और चारकोल के रूप में लकड़ी और लकड़ी के उत्पाद। भाग-दो लाइसमिंग के भ्रष्टययधीन निर्यात मदों का विवरण जन्म सं.

- 3 इंच में कम शाकार के बीच-डी-मेर।
- 2. बेरिल जिसमें रहन मिस्म का बेरिल शामिल है।
- 3. ग्रस्थि चुर्ण
- 4. मवेशी
- ऊंट

1

- 6. छिलका रहित सम्पूर्ण नारियल को छोड़कर नारियल श्रौर गिरी, नारियल प्रोट्रीन, नारियल शहद, नारियल का भाटा भौर सुखाया हुआ नारियल।
- 7. कियोसोट तेल (हल्का ग्रौर भारी) कोलतार ग्रौर ऐसे मिश्रण जिसमें कोलनार हो।

2

- 8. (1) सुगरफास्फेट सिंहत सभी प्रकार के रासायनिक उर्वरंक (2) उर्वरक नियंत्रण श्रावेश 1985 के भाग (व) की भनु-सूबी-I में विनिर्विष्ट मदों को छोड़कर माइकदोन्यूट्रिएन्ट उर्वरक तथा एन पी के वाले उनके मिश्रण शामिल है।
- 9. क्लोरोक्विन फास्फेट जिसमें क्लोरोक्विन फास्फेट से विनिर्मित फारमुलेशंस शाभिल है।
- 10. डायोसजेनिन भौर डायोसकोरिया की जहें।
- 11. पवित्र कुरान की आयतों पर उद्धरणों के छापै वाली परिधान सामग्री/सिले सिलाए पोशाक फेब्रिका/बस्त की मदें।
- 12. तेल रिहत मूंगफली की खली जिसमें 1 प्रतिशत से ज्यादा तेल हो।
- 13. गधे
- 19. मूंगफली के तेल की खली सिहत लेकिन बिनौले के बीज की एक्सपेलर खली को छोड़कर सभी तरह की एक्सपेलर खली।
- 15. 50 प्रतिशत से कम प्रोट्रोन की माना वाली खाद्य मछलियां।
- 16. मिल स्केल स्केप को छोड़कर फैरस स्क्रेप।
- 17. तृतिकोरिन, मद्रास, विशाखापतनम, काकीनाष्ठा, पारादीप भीर कलकता के पत्तनों से 200 ग्राम से कम भार की श्रीरदूसरे सभी पत्तनों से 300 ग्राम से कम भार की ताजी श्रीर जमी हुई सिल्बर फास्फेट।
- 18. मेमनों के लोम चर्म को छोड़कर पालतू पशुग्रों के लोम चर्म।
- 19. सजावटी भौर प्रखाश घास से भिन्न घास।
- 20. हाथ से बने रेशम के धागे।
- 21. निम्नलिखित खालें और चर्मः --
 - (1) एनिमल ग्ल्यू जिलेटिन के निर्माण में कञ्चे माल के रूप में प्रयुक्त खालों भीर चर्म के कटिंग भीर पलैंशिंग।
 - (2) मेमनों के लोम चर्म को छोड़कर सभी प्रकार की कच्ची खाल ग्रौर चर्म।
 - (3) ई. माई. टैन्ड मौर वेट नीली खालें भौर पपड़ीदार चर्म भौर चमड़े सिहत भर्ध संसाधित खालों भौर चर्म की सभी श्रीणयां।
 - (4) क्लोबिंग लैबर-फर स्वेब/हेयर हेयर-म्रोन स्वेद/शियरिंग स्वेद लैंबर्स ।
 - (5) फर लैदर्स।
 - (6) ग्रीबोगिभ लैवर्स, नामश:
 - (1) साईका सैडल लैदर्स
 - (2) हाईष्ट्रालिन/पैक्तिग/बस्टिग/हरिने/वागर/लैबर
 - (3) विकालिंग वैन्ड लैधरी
 - (4) स्ट्रैंप/कोम्बिंग लैंबर्स
 - (7) लाइमिंग लैदर्स, नामशः
 - (1) गाय भीर बैल की खालों भीर बछड़े के चर्म से
 - (क) रंगीन लाइमिंग सैंदर
 - (ख) लाइनिंग स्वेव
 - (8) लगेक लैदर्स-केस हाइड या साइड/सूट केस/हैण्ड वैग,लगेज/केश बैग लैदर

3

1

1

- (9) विविध चगहे, नामशः
 - (1) बुक बाइन्डिंग लैदर्स
 - (2) सिस्वर लैंदर्स
 - (3) ट्रान्सिस्टर केस/कैमरा केस लैंदर
- (10) शू ग्रयर लैंदरी नामशः
 - (1) बुम्यर लैंदर
 - (2) षाटाई स्लीपर/ज्सैडल लेवर
- (11) सील सैंदर-क्रीम टेन्ड सील सैंदर
- 22. घोड़े-काठिवाडी, मारवाडी और मणीप्री प्रजातियां, खच्चर
- 23. जंगल से प्राप्त कुथ (कोस्टम लप्पा सिन० सौसूरिया लप्पा सी० बी० सी० घाई० एस्टररेसिया) बन्य घाचिस
- 24. निम्नलिखित धातुएं और उनके कम्पाउन्ड:--
 - (1) बेरिलियम और इसके कम्पाउण्ड
 - (2) लिथियियम और इसके कम्पाउण्ड
 - (3) नेपभूतियम और इसके कम्पाउण्ड
 - (4) प्णूटोनियम और इसके कम्पाउण्ड
 - (5) रेडियम और इसके कम्पाउण्ड
 - (6) ध्योरियम और इसके कम्पाउण्ड
 - (0) 411411 412 241 1 1100
 - (7) यूरेनियम और इसके कम्पाउण्ड(8) जिरकोनियम और इसके कम्पाउण्ड
 - (9) इरिडियम इरिडोस्माइन और ओसमीरीडियम
 - (10) सेलिनियम
 - (11) इयेटेरियम कम्पाउण्ड
 - (12) रैयर मर्थ धातुएं
 - (13) स्केडियम और यिवयम (चाहे इन्टरलीक्ड हो या इंटर एलायड/क्रिक्सड हो या न हों)
 - (14) भावताइड और पेरोक्ताइड भाफ स्ट्रोंसियम
 - (15) लिथियम भाषताइड और हाइड्रोक्साइड
 - (16) परक्लोरेट ग्राफ सोजियम
 - (17) क्लोमियम
 - (18) जरमेनियम
 - (19) गैलियम
 - (20) हाफनियम
 - (21) इण्डियम
 - (22) नियोबियम
 - (23) हीनियम
 - ·(24) यैलियम
 - (25) उपर्युक्त क्रम सं० (17) से लेकार (24) में उल्लिखित रही और स्क्रेप सहित धातुओं की बनी वस्तुएँ

1

3

2

- (26) प्रतिक्रिया प्रवर्तक, प्रतिक्रिया त्वरित तथा सिक्रिय तत्व के रूप में निकिल युक्त उत्प्रेरक तैयार माल या निकिल के यौगिक
- (27) प्रतिक्रिया श्रभिकारक, प्रतिक्रिया स्वरित तथा उत्प्रेरक तैयार माल, जो ग्रन्यत विनिर्दिष्ट या णामिल न हो, सिक्रिय तस्व भे रूप में मूल्यवान धातु के यौगिकों से युक्त ।
- 25. निम्नलिखित खनिज, प्रयस्क और सांद्रण:---
 - (1) रेडियम श्रयस्थ और सांद्रण
 - (2) यूरेनियम भ्रयस्क और साम्बर्ण
 - (3) क्रोम ध्रयस्क और सान्त्रण, उनको छोड़कर जो भागः 4 में उल्लिखित हैं
 - (4) बेनोडियम धयस्क और सान्द्रण
 - (5) बेनोडियम घारित लीह भयस्क जिसमें 0.2 प्रतिशत से अधिक यी₃ औ₅ की माला हो
 - (6) टंगस्टन (बालफाम)/ग्रयस्क और सान्त्रण
 - (7) भ्रन्डेल् साइट
 - (8) सभी श्रेणियों के केनाइट
 - (9) सिलिमेनाइट की सभी किस्में (ग्रेनुलर तिलिमेनाइट को छोड़कर)
 - (10) 7.5 प्रतिशत से कम सिलिका की माल्रा के साथ केल्साइड मेन्तेसाइट और बुझाया हुआ मेन्नेसाइड
 - (11) सभी धाकारों और श्रेणियों के एस्बेसटोत की क्रिसोंटाइल क्रोसिडोलाइट और समोक्याइट किस्में
 - (12) 46 प्रतिशत से ग्रधिक मैगनीज वाली लम्पी ब्लेडिड मैगनीज ग्रयस्क
 - (13) कच्चा मैंगनेसाइट और प्यूज्ड मैंग्नेसाइट
- 26. मलबरी छिद्रित कोकून
- 27. वुग्ध, शिश्-वुग्ध और स्टरलाइण्ड लिक्बिड वुग्ध
- 28. मिलिट्री स्टोर्स
- 29. नेप्थालीन
- 30. बोलियो रेजिन्स एक्स-पिनस लांजिकोलिया
- 31. पैराफिन मोम, टाइप-3 को छोड़कर
- 32. पसेचा और जीवित कीट स्टिकलाक, बुडलाक से युक्त कोई लाख
- 33. ढलवां सोहा
- 34. मसूर, चना, सेम तथा उनसे बने घाटे सहित सभी प्रकार की दालें
- 35. किसी निर्यात अभिमुख यूनिट/निर्यात संसाधन क्षेत्र के यूनिट द्वारा गुरूक मुक्ति स्कीम के श्रन्तगैत श्राक्तित दालों से बनी हुई। से भिन्न संसाधित दालें।
- 36. धान (छिलके सहित चावस)
- 37. रेशम नायल धार्गे सहित शुद्ध रेशम का धागा
- 38. घपरिष्कृत (बिना तरागे हुए और बिना सेट किए हुए) मृत्यवान पत्थर और रॉक किस्टल क्वार्टफ
- 39. मच्ची और उभली हुई चावल की भूसी
- 40. रांक फास्फेट
- 41. कच्चा रेशम
- 42. बीज और पादप सामग्री, नामणः

श्चरण्डी के बीज, विनौते के बीज, काजू के बीज और पीधे, मिश्र की बनमेथी (वसीम)—दिकोलियम एलाक्सटम बीज, चाक्र की फसल के बीज, हरी खाब के बीज, निस्मलिखित को छोड़कर

ढैंचा, गुम्रार वीज (सम्पूर्ण), पटसन बीज, मलसी नीव् घास के बीज और जड़, लुपन (मल्फाफा) मेडिकागो सितवा, सरसों के बीज, मेस्ना बीज, नक्स वामिका वीज/छाल/पत्ते/जड़ें और उनके चूर्ण प्याज के बीज सजावटी पौधों (जंगली किस्म) के बीज, धान के बीज, (जंगली किस्म), पोपर कटिंग या पीपर की जड़ की कटिंग, फारस की बनमेपी (स्नाफटेल ट्रिफोलियम-रेसुपीने-टम) बीज, तोरिया का बीज, लाल सेन्डर्स बीज (तीरो कारपस सेन्टालिनस) रखड़ के बीज, रूसा घास के बीज और ट्फ्ट्स, सभी बन्य प्रजातियों के बीज, सभी तेलवीओं और दालों के बीज, सूरजमुखी के बीज, सोयाबीन के बीज, खंदन के बीज (सन्टालम एलबम), केशर के बीज या काम्सी (केशर के लिए पौध लगाने की सामग्री) गेहूं के बीज (जंगली किस्म)।

- 43. समुद्री गैल, इस प्रथ्याय के भाग-पाच में निर्दिष्ट को छोड़कर।
- 44. सभी प्रकार की समुद्री घासे जिसमें जी-इडलिश गामिल हैं लेकिन इस प्रध्याय है भाग तीन में उल्लिखित संसाधित रूप वाली तिमलनाडु सट मूल की भूरी समुद्री घानें और श्रगरोफाइट्स शामिल नहीं हैं।
- 45. रेशम के कीड़े, रेशम की रही, रेशम कीट के बीज और रेशम कीट के काकून जिनमें रीलिंग कोकून भी शामिल हैं।
- 46. मत्स्य हड्डियों को छोड़कर बिना पिशी हुई हड्डिया।
- 47 वनस्पति तेल, नामशः निर्मातिल, कार्न श्रायल, भूंगफली का तेल, कदी का तेल, श्रनसी का तेल, सरसों का तेल, रामतिल का तेल पाम की गिरी का तेल, नोरिया के बीज का तेल, चावल की भूसी का तेल, सलाव का तेल, सूर्यमुख्यो का तेल, तिल का तेल, सीयाबीन का तेल।
- 48. विन्देज मोटरकार और मोटर माइकिल और उनके माग तथा संबदक ग्रथित् 1-1-1960 से पहले के विनिधित मोटर कार्रे और मोटर माइकिलें।
- 49. विस्कीम स्टेपल फाइबर (नियमित), ग्रधिक कार्य निष्पादन वाले विस्कीस स्टेपल फाइबर को छोड़कर।
- 50 सम्पूर्ण मानव रक्त प्लाज्मा और मानव रक्त के लिए गए सभी उत्पाद जिसमें मानव प्लेंसेंटा और मानव प्लेसेंटल रक्त से विनिर्मित गामा ग्लोबुलिन और मानव सीरम श्राल्बुमिन शामिल नहीं हैं।
- 51 रही कागज।

भाग-सीन

मात्त्रात्मक सीलिंगों के अध्यक्षीम अनुमित निर्यात

कम सं०

मदों का विवरण

- संसाधित रूप में तमिलनाडु तट मृल के जी इडुलिस को छोड़कर भूरी समुद्री घास और अगरोफाइट्स
- 2. विनौला एक्सपेलर खली
- निकुष्ट जीवित भेड़ और बकरी (वसस्क)
- 7.5 प्रतिमत और प्रधिक सिलिका की मात्रा वाली कैलसाइण्ड मैंग्नेसाइट
- सैपफायर्स तथा रूबी के अतिरिक्त कारूण्डम
- मोर की पूछ के पंखों की बनी हस्तिशिल्प और वस्तुएं
- 7. श्रायोडिनयुक्त नमक (मानव उपभोग रे लिए प्रयुक्त होने बाले)
- प्राकृतिक रवड, आर एम ए IV अथवा तृत्य ग्रेड की
- 9. पाइरोफिलाइट
- 10. सैफ्लाबर का बीज (कर्दी का बीज)
- 11. गेहूं पुद्राल (भूसा)

भाग-चार

सरणीकृत एअसियों के माध्यम से घनुमेय निर्यात

कालम 3 में उद्धृत सरणीकृत एजेंसियां नीति के प्रावधानों के ग्रन्तगैत निम्नलिखित तालिका मैं दिए गए मदों का निर्यात किसी भी देश को कर सकती हैं:---

क्रम सं	मद	सरणीकृत एजेंसी का नाम एवं पता
1	2	3
1.	पैट्रोलियम उत्पाद, नामश:	
	(1) एक्सिएसन टर्बाइन प्यूल	
	(2) बिट्मैन	
	(3) ऋपूड घॉयल	
	(4) फरनेस ग्रॉयल	
	(5) मिट्टी का तेल	
	(6) लिक्बीफाइड पैट्रोलियम गैस (एल. पी. जी.)	भारतीय तेल निगम लिमिटेड
	(7) मोटर स्पीरिट	
	(८) मापथा	
	(9) हाई स्पीड डीजॅल	
	(10) कच्चा पैट्रोलियम कीक	
2.	मक्खन	राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एन डी डी वी), ग्रानम्ब, गुजात
3.	गोंद कराया	भारतीय जनजाति सहकारी विपणम् परिसंघ लि. (ट्रोक्डेड), नई दिल्ली ।
4.	गोंद रेसिन	भारतीय जनजाति सहकारी विपणन् परिसंघ लि. (ट्रीफेड) तथा राज्य जनजाति निगम ।
5.	माइका जैस्ट (फैक्टरी कॉटंग सहित) तथा स्क्रीप जो माइका संसाधित करते समय प्राप्त किया जाना है तथा संसाधित ग्रन्थक की विशिष्टता से कम साइज ग्रीर रंग माना जाना है।	भारतीय खनिज एवं धातु व्यापार निगम जि. (एम एम टी सी), नई दिल्ली । भारतीय ग्रभाक व्यापार निगम लि., बिहार।
6.	खनिज भ्रयस्क एवं सांब्र, नामशः	
	(1) थोरियम घोरँस तथा उसके कसैंट्रैट तथा उसके कम्याउंड	भारतीय रेयर धर्षेस लि., बम्बई ।
	(2) रेयर श्रर्च ग्रीर (व्रियम सहित) कर्संट्रेट तया उसके कम्पाउंड	
	(3) एसेसरी इनग्रेडियेंट्स के रूप में निम्नलिखित सबस्टेंस वाले मन्य खनिजों को मिलाकर :—	भारतीय रेयर ग्रर्भेस लि., बम्बई ।
	(क) कालॅमबाइट	तया
	(स्र) मोनाजॉइट	केरल खनिज एवं धातु लि.,
	(ग) समेरस्काइट	<u> कु इलॉन</u>

==_---

2

- (घ) यूरेनीफेरियस अलानाइट:
 - (1) रेडियम ग्रयस्क तथा सांद्र
 - (2) थोरियम श्रयस्क तथा सांद्र
 - (3) यूरेनियम अयस्क तथा सांद्र
 - (4) कॉपर ग्रयवा स्वर्ण की एक्सट्रैक्शन के बाद ग्रयस्क से बन्ने हुए हैलिंग वाले यूरेनियम ।
 - (5) जिरकॉन श्रयस्क तथा सांद्र
 - (6) टिटेनियम श्रयस्क तथा सांद्र (इलमेनाइट, रयटाइल लूकोक्सीन श्रादि)
- (4) भारतीय रेयर श्रर्थ लिमिटेड तथा केरल खनिज एवं धातु लि. द्वारा उत्पादित ग्रेनुलर सिलिमेनाइट ।
- (5) सभी बाजारों को निर्यात किया जाने वाला रेडी मूल का लौह अग्रम्क तथा जापान, दक्षिणी कोरिया और ताइवान सहित यूरोप अथवा चीन को निर्यात किया जाने वाला गोग्रा मूल के लौह अग्रस्क को छोड़कर ।
- (6) (क) सी. ग्रार₂ओ₃ महित क्रोम अयस्क लम्पस जो 38 प्रतिशत से श्रधिक न हो
 - (ख) सी भार अो असिहत लो सिलिका फाइएवल/फाइल अयस्क तथा 4 प्रतिशत से अधिक सिलिका ।
- (7) सभी कोटियों के बाक्साइट, कैलसिनड बाक्साइट तथा लो ग्रेड बाक्साइट ए 1, ओ, अलुमिना अंटेंट सहित, जो पश्चिमी तट मूल के 54 प्रतिगत से कम हों।
- (8) निम्नलिखित को छोड़कर मैंगानीज ग्रयस्क: 46 प्रतिशत मैंगानिज से ग्रधिक लम्पी बलैंडि मैंगानीज ग्रयस्क।
- (9) कुन्द्रेमुख लौह ग्रयस्क कम्पनी लिमिटेड द्वारा उत्पादित बैनिफिकेशन द्वारा तैयार किया गया लौह श्रयस्क कन्सेन्ट्रेट और/या 40 प्रतिशत या इसमे कम लो ग्रेड कन्सेंट्रेशन ग्रयस्क।
- (10) कुद्रेमुख लीह श्रयस्क कम्पनी लि. द्वारा उत्पादित कंसेंट्रेट से विनिर्मित लीह श्रयस्क पीलैंट्स ।

भारतीय रेयर भर्षस लि., बम्बई तथा केरल खनिज एवं धातु लि., कुइलॉन खनिज एवं धातु व्यापार निगम लि. नई दिल्ली

3

__तर्वव---

—–तदैव—–

कुद्रेमुख लौह भ्रयस्क कम्पनी लि., बंगलीर।

---तदैव-**-**-

निषेधात्मक सूची भाग चार—जारी

7. रामतिल के बीज

- (1) भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारिता विषणन परिसंघ लिमिटेड (नेफेड), नई दिल्ली ।
- (2) भारतीय जनजातिय सहकारी विषणन विकास परिसंघ लि. (ट्राइफेड), नई दिल्ली ।

भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारिता विपणन परिसंघ लि. (नेफेड), नई दिल्ली ।

राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड, गुजरात ।

 दूध का पाउडर (स्कीम्ड अथवा पूर्ण मलाई युक्त) पूर्ण अध्यवा बाल दूग्ध भोजन ।

10. शुद्ध दूध, घी

---तदैव---

8. प्याज

भाग--पांच

वे मदें जिनका निर्यात लाइसंस के बिना,परन्तु इस सम्बन्ध में विनिर्दिष्ट शर्तों के श्रधीन किया जा सकता है ।

निम्नलिखित मदों का निर्मात लाइसेंस के बिना किया जा सकता है । तथापि निर्मातक को प्रत्येक मद ग्रथवा मदों की श्रेणी के लिए विनिर्दिष्ट सर्तों को पूरा करना होगा। सर्ते प्रक्रिया पुस्तक में उल्लिखित हैं:---

क्रमांक

मदें

- 1. (1) हथियार श्रीर गोलाबारूब श्रयात् मञ्जल लोडिंग हथियार तथा क्रीच लोडिंग या बोल्ट एक्शन हथियार जैसे शॉट गन, रिवाल्वर, पिस्तौल श्रीर जनकी गोलीबारूब ।
 - (2) प्राचीन हथियारों की प्रतिकृतियां।
- 2. (1) पेड़ों, बाइ लगाने की झाड़ियों, सजावट पौधों, फूलों और ग्लीरिसा सुपर्वा (लिलियासिया) सभी के बीज ।
- 3. प्याज के बीज से भिन्न वनस्पतियों के बीज ।
- 4. वापसी के माधार पर भारतीय एवं विदेशी दोनों एयरलाइनों द्वारा वायुयान श्रौर उनके म्रतिरिक्त पुर्जे ग्रौर उपसाधित्र जिनमें वे भी शामिल हैं जो मरम्मत ग्रौर मोवर हार्लिंग के लिए हैं।
- 5. श्रोरिषड् की सभी परिशोधित किस्में।
- 6. बासमती चावल।
- 7. काली मिर्च (ग्रस्ता किस्म एम जी-जी-1)।
- कार्बेनीकृत लिग्नाइट ब्रिकेटस (एल ई सी धो) ।
- 9. ब्रायातित बल्क ड्रग (क्लोरोक्विन फास्फेट) से विनिर्मित क्लोरोक्विन फास्फेट घौर फार्मुलेशन्स ।
- 10. (1) कूनीन भीर विवनीडाइन तथा उनके साल्ट निकाले हुए सिनकोना मिश्रित एल्कालाइड भीर सिनकोना साल्ट ।
 - (2) क्विनीडाइन सल्फेट ।
 - (3) कुनीन भौर कुनीन उत्पाद।
- १६ ४ वेदरकात प्रीट गरियक बंदा अल्याद ।
- 12. टावर रज्जू धार्ग सहित सूती धारा।
- 13. तेल रहित मुगफली की खली (निस्सारण) ।
- 14. तेल रहित चावल की भूसी (चावल की भूसी का निस्सारण) ।
- 15. ताप प्रभिसाधित वर्जीनिया तम्बाक्, धूप प्रभिसाधित वीजिनिया तम्बाक्, नाटू (देशी) तम्बाक् ग्रीर धूप ग्रभिसाधित जूटी तम्बाक्।
- 16. सभी प्रकार का परिष्कृत चमड़ा।
- 18. गुवार के गोंद के स्पिलिट ।
- 19. निम्नलिखित घनाज श्रौर श्राटा:---
 - (1) गैर बासमती भावल
 - (2) गेह
 - (3) गेह उत्पाद मर्थात् रवा, परिणामी माटा, गेहूं की भूसी ।
 - (4) मैदा सूजी और होल-मिल भ्राटा (गेहूं का भ्राटा जो 95% निस्सारण से कम का न हो)।
 - (5) जौ
 - (6) मक्का
 - (7) बाजरा
 - (8) ज्वार
 - (9) मोटा धनाज

- 19. हाथ से बने ऊनी/सिन्थेटिक/रेशमी कालीन, जिसमें ध्रन्य फर्श कर्वारंग जैसे ऊनी वरिया ड्रज्जेट्स, चैंन स्टिच्ड, गलीचे नीडल पेस्ट गलीचे, गम्बास ग्रीर नमदा भी शामिल है।
- 20. एच पी एस मूंगफली (छिलका भौर गिरी दोनों में)
- 21. चन्दन की लकड़ी की बनी हस्तिशिल्य की वस्तुएं
 - (1) मणीन से परिष्कृत चंदन की लकड़ी के निम्नलिखित उत्पाद:--
 - (क) विजिटिंग कार्ड:
 - (ख) महिला दस्ती पंखों के क्लेड
 - (ग) घड़ी के बाहरी खोल तथा डायल
 - (घ) इसी तरह के कोई भी प्रत्य उत्पाद जो उपर्युक्त विशिष्टियों तथा मृल्यवर्धन मानदण्डों को पूरा करते हों।
 - (2) समुद्री सीपी से बनी हस्तिशिल्प की वस्तुएं।
- 22. जंगजी किस्म के कुथ से भिन्न कुथ (कोस्टस लप्पा सिन सोसारिया लप्पा सी बी सी म्राई एस्टररेशिया) जो निजी जमीनों में उत्पादित और इससे ब्युरपन्न हो।
- 23. लेटेराइट
- 24. मेमने की लोमधर्म
- 25. पश्चिमी तट मूल के 54 प्रतिशत से कम एल एल₂ प्रो₃ ध्रत्युमीनियम तत्व वाला निम्न श्रेणी का बाक्साईट ।
- 26. (1) भैस (तर श्रौर मादा दोनों)का मांस जिसमें विल, जिगर, फेफड़े, मस्तिष्क, जीभ, गुर्दे, छिछड़े श्रौर घन्य ग्रंग शामिल है।
 - (2) भारतीय भेड़ का मांस, जिसमें दिल, जिगर, फेफड़े, मस्तिष्क, जीभ, गुर्दे ग्रीर ग्रन्य ग्रंग गामिल 🖁 ।
 - (3) भारतीय बकरे का मांस जिसमें दिल, जिगर, फेफड़े, मस्तिष्क, जीभ, गुर्दे झौर झन्य झंग गामिल है।
- 27. धातु कर्मीय अवगेष अर्थात् ड्रोसिस, स्किमिंग, स्लेग्स, एश, स्लिम्स और फल्यू डस्ट (सोने और चांदी वालों को छोड़कर) जिसमें की धातु की माता 15 प्रतिशत से कम हो।
- 28. मलबरी × डुनियन फैंब्रिक्स (मत प्रतिमत प्राकृतिक रेशम) ।
- 29. मेघालय का कोयला।
- 30. वर्गीकृत सब्जियों के भाग के रूप में प्याज।
- 31. केंबल णुल्क छूट स्कीम के तहत ग्रथवा स्वीकृत निर्यात-ग्रभिमुख यूनिट/निर्यात संसाधन क्षेत्र में स्थित यूनिट द्वारा ग्रायातिल दालों से बनी हुई संसाधित दाले ।
- 32. (1) प्रभ्नक वेस्ट/फैक्टरी कटिंग्स ग्रौर ग्रभ्नक स्क्रींप को छोड़कर ग्रभ्नक ब्लाक्स,ग्रभ्नक फिल्म्स ग्रौर सभी वर्गों ग्रौर सभी किस्मों के स्पलिटिंग्स सिंहत संसाधित ग्रभ्नक
 - (2) संसाधित प्रभ्रक की मदें रजितत ग्रभ्रक कैं,ासिटर प्लेट्स, फैंबिकेटिड ग्रभ्रक, ग्रभ्रक फ्लेक्स/पाउडर
- 33. (1) फास्फोरस ग्राक्सीक्लोराइड
 - (2) फास्फोरस दिक्लोराइड
 - (3) थिनाइस क्लोराइड ।
 - (9) एसेटिक एनहाइड्राइड ।
- 34. पौधे भ्रौर पौधे के भाग एवं व्युत्पाद, जो जंगल से लिए गए हों।
- 35. कच्ची कपास:---
 - (1) बंगाली देशी।
 - (2) ग्रमम कोमिलास ।
 - (3) स्टेपल काटन ।
 - (4) ग्राग/पानी के कारण क्षतिग्रस्त हुई बदरंग काटन ।
 - (5) जुड़ो एण्ड स्वीपिग्स ।

- (6) येलो पिकिंग्स ।
- (7) ग्रन्य
- 36. शिख के बीज ।
- 37. रेशमी कालीन को छोड़कर रेशम का माल।
- 38. साफ्ट काटन वेस्ट/हार्ड काटन वेस्ट ।
- 39. जुलनशील निष्कर्षित बिनौल/खली (छिलके रहित छिलके सहित) ।
- 40. सोयाबीन निस्सारण ।
- 41. चीनी
- 42. चमडा ग्रीर लाख की सभी किस्में, उनको छोड़कर जो इस ग्रध्याय के भाग-दो में उल्लिखित हों।
- 43. भारत-ग्रास्ट्रिया या कनाडा या यूरोपीय ग्राधिक समुदाय या फिनलैंग्ड या नार्वे या स्वीडन या ग्रमरीका के बीच समझौता ज्ञापन/करारों के ग्रंतर्गत सूती, ऊनी तथा मानव-निर्मित फाईवर तथा उनके मिश्रणों के क्रतिनय कपड़ा उत्पादों का निर्यात ।
- 44. चन्दन की लकड़ी ग्रीर सैन्डल्स वुड सहित सभी किस्म की संसाधित इमारती लकड़ी।
- 45. ममूने :

निर्यात की निषेधात्मक सूची के भाग 2, 3, 4 ग्रीर 5 में माल के नम्ने।

46 प्रदर्शन:

निर्यात की निर्वेधात्मक सूची के भाग 2 3, 4 ग्रीर 5 में शामिल प्रदशन माल ।

परिभिष्ट 1 रत्न और काभूषणों के लिएं ग्रायात प्रतिपूर्ति

सामान्य टिप्पणी:—(1) तराणे हुए और पालिश किए हुए बहुमूल्य |म्रश्चं बहुमूल्य रत्नों|पालिश किए हुए और संसाधित मोतियों के डोरी या धारों में डाले हुए नेकले स नीचे की संबंधित प्रविष्टियों में शामिल होंगे और तदुनुमार प्रतिपूर्ति की श्रनुमति दी जाएगी बशर्ते कि घातु जुड़ड़नारों श्रर्थात् क्लिप्स, क्लारप्स पिन्स, हुक्स श्रादि का मूल्य नगण्य हो और वह मूल्य इसमें शामिल न किया गया हो।

(2) रत्न और ग्राभुषण मदों का निर्यात रुपये में भुगतान क्षेश को निर्यात करने से केवल रुपयों में भुगतान क्षेत्र से ही ग्रायात के लिए वैध ग्रायात प्रतिपूर्ति लाइसेंस प्राप्त करने के लिए पावता होगी।

ऋय संख्या	निर्यात उत्पाद	जहाज पर्यन्त निः मूल्य का ग्रायात प्रतिपूर्ति का	मु ल्कः	ग्रनुमेय सामग्री	दिप्पणी
		,,	प्रतिशत		
(1)	(2)	(3)		(4)	(5)
1.	पालिश किए हुए, संसाधित मोती (श्रसली या परिष्कृट)	65.00	01 श्रसली मोती किए हुए /बिना छे हुए .		
2.1	तराशे हुए और पालिश किए हुए हीरे (260 ग्रमेरिकी डार जहाज पर्यन्त निःशुल्क मूल्य तक प्रति कैरेट की मूल्य	6 5 .00 तर	01 बिना सेट औ होरे	र बिना तराशे	
	तक त्रात चरण पर पूर्ण वसूली के साथ		02 रत्न और श्र प्रयुक्त विशेष श्रासंजक गों कृत्रिम हो (1.00)	औद्योगिक · इ/घोल और	f

कैरेट तथा इससे उपर था।

(1)(2) (3) (5) (4)2.2 तराशे हुए और पालिश किए 01 बिना सेट किए हुए और 70.00 हुए हीरे (260 भ्रमेरिकी विना तराणे हीरे 02 रत्न और म्राभुषण उद्योग डालर से-म्रधिक और 350 अमेरिकी डालर जहाज पर्यन्त में प्रयुक्त विशेष औद्योगिक में प्रयुक्त विशेष औद्योगिक निःगुल्क मूल्य तक की प्रति कैरेट मुल्य वसूली सहित) ग्रासंजक/गोंद घाल और कृत्निम होरे का चुर्ण (1.00)2.3 तराणे और पालिश किए हुए 75.00 01 बिना सेट किए हुए और हीरे (350 श्रमेरिका डालः विनां तराशे हुए भ्रधिक और 400 भ्रमेरिको 02रत्न और श्राभुषण उद्योग डालर जहाज पर्यन्त निःशुल्क प्रयुक्त विशेष औद्योगिक श्रासंजक/गोंद/घोल और शुल्य तक की प्रति कैरट मुल्य कृत्रिम हीरे का चुर्ण वसूली सहित) (1.00 प्रतिशत) तराशे हुए और पालिश किए 01 बिना सेट किए हुए और 82.5 2. बिना तरामे हुए हीरे हुए हीरे (400 अमेरिकी डालर 02 रत्न और ग्राभूषण उद्योग से म्रधिक तक की प्रति कैरेट मृल्य वसूली सहित) में प्रयुक्त विशेष औद्योगिक श्रासंजक/गोंद/घोल और कृत्रिम होरे का चुर्ण (1.00 प्रतिशत 01. बिना सैट और किए हुवे (1) तरासे किए हुए और पालिश नरामे हुए और पालिस किए 2.5 90.00 और बिना तराशे हुए हीरे हुए होरे (600 भ्रमेरीका डालर किए हुए होरों के निर्यात जहाज पर्यन्त नि:शुल्क मूल्य 02. रत्न और म्राभुषण उद्योग पर 90 प्रतिपूर्तिकी दरसे श्रधिक की वसूली प्रति कैरेट में प्रयुक्त विशेष औद्योगिक प्रतिशत श्रनुमेय भ्रायात सहित बशर्ते प्रति स्टोन न्यून-**प्रासंजक/गोद /घोल और कृत्रिम** होगी बशर्तें सीमा शुल्क तम 0.2 करेट हो) होरे का पूर्ण (1.00 प्रतिगत) प्राधिकारियों द्वारा पित बीजक में निर्यातक घोषणां की हो निर्यात किए गए प्रत्येक का साइज

1 2	3	4	5
3.1 तराघो हुए और पाघिल किए हुए मराल्ड रूबीज/सेफायर्स जो प्रति कैरेट 350 भ्रमेरिकी डालर और जहाज पर्यन्त नि:घुल्क मूल्य 600 श्रमेरिकी डालर हो	80.00	 01. बिना सेट किए हुए बिना तराशे एमराल्ड 02. बिना सेट और बिना तराशे रूबीज 03. बिना नराशे और बिना सेट किए सेफायर्स 0.4 बहुम्स्य रत्न बिना सैट किए हुए जिनमें भग्न /टूटे हुए/चीरे हुए नुक्स वाले रूप में शामिल हैं। 	
3.2 (1) प्रति करेंट जहाज पर्यन्त निःशुल्क 350 ग्रमेरिका डालर से कम के क्रम संख्या पी. 3.1 के अंतर्गत न ग्राने वाले, भग्न/ टुटे हुए फॉक किए हुए नुक्स वाले खुवरे ग्रर्ध बहुमूल्य स्टोन में से तराशे हुए और पालिण किए हुए ग्रर्ध बहुमूल्य स्टोन सहित तराशे हुए और पालिण किए हुए बहुमूल्य और अर्ध बहुमूल्य स्टोन ।	60.00	 01. बिना सैट किए हुए और विना तराशे हुए बहुम्ल्य या श्रर्ख बहुम्ल्य रत्न 02. भग्न/टूटे हुए फॉक किए हुए नुक्स वाले, खुरदरे श्रर्ख बहुम्ल्य रत्न । 	
(2) तराशे हुए और पाणिल किए किए मूंगे ।	65.00	किसी भी आकार या माप में न कटा हुन्ना म्निमित मूंगा या मूंगे की इस्टिक	
(3) तराये हुए और पालिश किए बहुमूल्य स्टोन (जहां प्रति कैरेट जहाज पर्यन्त निःशुरूक मूल्य 600 ग्रमेरिका डालर तथा इससे ग्रधिक हो)	90.00	 01. बिना तराशे हुए और बिना सेट किए हुए एमराल्ड 02. बिना तराशे और बिना सेट किए रबीज 03. बिना तराशे और बिना सेंट किए हुए सेफायर्स 04. भग्न/टूटे हुए, फॉक किए हुए नुक्स वाले बिना सेट किए हुए, बहुमूल्य स्टोन 	
 तराग्ने हुए और पालिश किए हुए ओनिक्स 	50.00	01. फॉक किए हुए ओनिक्स	
4. जेवरात जिनमें प्लेटिनम या पैलेडियम और हीरे बहुमूल्य या श्रधं बहुमूल्य रत्न श्रमली या कलचर्ड मोती कृत्विम/निकलो रत्नों जड़ित हों/माल में जड़ित हों बणतें कि कृत्विम/नकली पत्थरों का मूल्य धातु के मूल्य को छोड़कर जेवरात के जहाज पर्यन्त नि:शुल्क मूल्य के 10 प्रतिशत से श्रधिक न हों।	65.00	 01. बिना तराणे हुए और बिना (1 सेट किए हुए हीरे 02. बिना कराणे हुए और बिना सेट किए हुए बहुमूल्य और प्रधं बहुमूल्य रतन 03. बिना सेट किए हुए बिना छिद्र किए हुए प्रसली या कलचर्ड मोती 	1) हीरों बहुमूल्य ऋघं बहु- मूल्य रत्नों और मोतियों के साथ-साथ यदि जेव- रातों में कृष्ट्रिम या नकली रत्न जुड़े हों/पिरोए गए हों और जितना मूल्य धाषु के मूल्य को निकाल कर जेव- रात के मूल्य के 10 प्रति

(1)

(2)

(3)

(4)

(5)

04. भग्न/टुटे/चीरे हुए, नक्स वाले, खुदरदरे ग्रर्ध बहुमृल्य स्टोन 05. श्राभूषणों के बक्से (1.00

प्रतिगत)

शत से अधिक हो तो ये इस निर्यात उत्पाद में शामिल नहीं होगे।

- (2) कालम 2 में यथा वर्णित बहुमूल्य घातु के जैवरात क्रम सं. 4 के अंतर्गत श्राएंगे, बगर्ते कि बहुमूल्य घात ग्रर्थात प्लेटिनम और पैले डियम कामृत्य उनमें उपयोग की गई घासू के कुल मूल्य के 70 प्रतिशत से कम न हो या जड़ित जेवरात जिनमें पूर्ण रूप से या फ्रांशिक रूप में प्ले-टिनम या पैले डियम से भिन्न पातु हो और जिनमें हीरे, मोती, बहुमूल्य/मर्ध बहुमूल्य रत्न जड़े हों/ पिरोये गए हों, या घ्राया प्रति पूर्ति के उद्देश्य के लिए कम सं 4 के अंतर्गत जाएंगे बगर्ते कि अड़े जाने/पिरोए जाने का मूल्य कूल जहाज पर्यान्त नि:शुल्क मूल्य का 90 प्रतिशत तक या इससे अधिक हो।
- (3) जहाज पर्यन्त निःशल्क मुल्य का निश्चय करने के के लिए ग्राभुषणों में जड़ित भवयवों के ग्रर्थातु कटे पालिश तथा किए हुए हीरों के मृल्य तथा/या, बहुमूल्य तथा श्रध-बहुमूल्य रत्नों तथा या परिष्कृत मोती निर्यातक की घोषणा के श्रनुसार और सीमाण्टक द्वारा जांज करने एवं निर्धारित मूल्य को ध्यान में रखा जाएगा।
- (4) बिना तराशे हुए और बिना सैंट किए हुए हीरों बहुमूल्य स्टोन या प्रर्ध-बहु-मूल्य स्टोन बिना पराशे

(1)

(2)

(3)

(4)

(5)

हए या बिना सैट किए हुए ग्रसली या परिष्कृत मोती, विना जडे हुए/विना छेद किए हुए की प्रतिपूर्ति की अनुमति केवल तब दी जाएगी जब निर्यात किए गए उत्पाद में हीरों, बहु-भूल्य या अर्ध-बहुभूल्य रतन और मोतियों की मान्न क्रमशः (निर्यातक द्वारा यथा घोषित और सीमा शल्क द्वारा बीजक में बिधिवत साक्ष्यांकित जहाज पर्यन्त निःश्रुस्क मूल्य के समानुपात में हों) उपयुक्त जड़ित सामग्री की परस्पर ग्रदला-बदली की अनुमति नहीं दी जाएगी ।

- तराशे या पालिण किए हुए सिन्थैटिक रत्न ।
- 50.00 01. खुवरा मिन्थेटिक रत्न 02. क्युबिक जिरकोनियम
- (1) प्रतिपूर्ति का दावा करने के लिए सीमा शुल्क का संख्यों कित बीजक प्रस्तुत करने की श्रावण्यकता नहीं है।

- 6.1 कृत्रिम 30.00 जेयरात/वेशभूषा के लिए जेयरात जो सिन्थेटिक/ नक्षक्षी रत्न/व्लास्टिक के मनके, लक्ष्डी के मनके, कांच के मनके, नक्षती मोती कांच के चटन ग्रादि मे जुड़े हुए हों था पिरोये हुए हों।
- 30.00 01. कांच के मनके, झूठे मोती श्रीर कांच के चेटन्स/स्टाक लाट में कांच के चेटन्स
 - 02. खुरदरे सिन्धेटिक रहन
 - 03. कृत्रिम जैवरात के लिए अपेक्षित धातु, जुड़नार, फाइंडिंग संघटक और उप-साधित.
 - 04. क्यूबिक जिरकोनिया
 - 05. आभूषणों के खाली बक्से (1.00 प्रतिगत)
- (क) इस प्रविष्टि में केवल वे ग्राएंगे जो ही जेवरान ऋम सं. 4 में उल्लिखित बहुमूल्य धातुष्यों को छोड़कर दूसरी किसी धातु से बने हों, दूसरे शब्दों में इस ऋम सं. 4 के ग्रंतर्गत वे जैवरात म्राएंगे जो एल्यूमिनियम, सांबा, पीतल स्रादि जैसे ग्राधार धात से बने हैं भ्रौर जिनमें कृतिम/नकली रतन प्लास्टिक के मनके, लकड़ी के मनके श्रादि जड़े हुए हों या पिरोए हुए हों । अर्ध बहुमूल्य रत्नों मे जुडे हुए/पिरोए गए श्राधार धातु के कृत्रिम ग्राभूषण भी इसी संख्या के भ्रन्तर्गत भाएंगे।

- (2) प्रतिपूर्ति का दावा करते समय सीमा शुल्क द्वारा साख्यांकित बीजक प्रस्तुत करने की ग्रावस्यकाता नहीं है।
- (3) कर्कालक (पीतल के कफरिक सहित), कृतिम नकली
 रत्न जड़े हुए ककलिक,
 सजाए हुए ककलिक और
 सोना चढ़ाए गए ककलिक
 भी इस कम संख्या के ग्रंतर्गत

- 6.2 कृतिम जेवरात/वेशभूषा के लिए सावे जेवरात (ऋम सं. 6.1 के अन्तर्गत उल्लिखित जेवरात को छोड़कार)
- 10.00 01 क्रितिय आन्षणों के लिए (क) एल्युमीनियम और "गिलट" अपेक्षित धातु की फिटिंग, जैसे आधार धातुओं से बने फाइडिंग संघटक और झुमके, बालियां, अंगूठियां, अनुपंगी कर्तर पट्टियां, नेकलेस, युंघर
 - 02 श्राभूषणों के खाली बक्से (1.00 प्रतिशत)
- एल्युमीनियम और "गिलट" जैसे आधार धातुओं से बने सुमके, बालियां, श्रंगूठियां, कमर पट्टियां, नेकलेस, घृंघरू आदि भी इस कोड के श्रंतगंत आएंगे। कम सं. पी 6.1 में शामिल ककिलक से भिन्न पीतल के कफलिक भी इस कम सं. 15 के श्रंतगंत आएंगे।
- (2) प्रतिपूर्ति का दावा करते समय सीमाशुल्क द्वारा साध्यांकित बीजक प्रस्तुत करना स्रावश्यक नहीं है।

- 6.3 चांदी के जरवोजी और चांदी की जरवोजी के जैवरात
- 10.00 01 धातुकी फिटिंग्स 02 ग्राभूषणों के खाली वक्से (1.00 प्रतिशत)
- 6.4 प्लेटिनम या पैलेडियम से बने जबरात जो सिन्थेटिषा/नकती क्षीच पत्थरों, चैटन मनके, नकली मोती, से जड़े हों या हीरों, कीमती रत्नों, श्रर्ध-बहुमूल्य रत्नों, श्रसलो, कल्चर्ड मोती के साथ हों या उसके बिना हों।
- 30.00 01 कांच के मोती, नकली मीती
 श्रीर कांच के चैटन/स्टाक
 लाट में कांच के चैटन-स्टाक
 02 खुरदरे नकली रतन
 03 क्यूबिक जिरकोनिया
 09 श्राभूषणों के खाली बक्से
 (1.00 प्रतिशत)
 - 01 कांच के मोती, नकली मीती (1) प्रतिपूर्ति का हिसाब लगाते श्रीर कांच के चैटन/स्टाक समय प्लेटिनम श्रीर पैने डियम लगार में कांच के चैटनस का मूल्य जहाज पर्यन्त निः शुक्क 02 खुरदरे नकली रत्न मूल्य से घटा दिया जाएगा।
 - (2) इस कम सं में वे वस्तुएं भी
 प्राएंगी जिनमें बहुमूल्य रत्नों,
 अर्ध-बहुमूल्य रत्नों, सच्चे/
 कल्चर्ड मोतियों के साथ या
 उनके बिना कृतिम नकली
 रत्न चटन, मनके, नकली
 मोती जडे हुए हों।

परिशिष्ट-II

कुछ मवों के सम्बन्ध में ग्रवेक्षित न्यूनतम मूल्य संयोजन

ı.	इलैक्ट्रानिक्स	
	(क) कम्प्यूटर साफ्टबेयप	60 प्रतिम त
	(स्त्र) खाली वीडियो केसेट	25 प्रतिगत
	(ग) करुम्मर इलेक्ट्रानिक्स	20 प्रतिशत
2.	वस्त्र	
	(क) सिले-सिलाए बक्ष	40 प्रतिशत
	(ख) मेड-प्रप्स	25 प्रतिगत
	(ग) काटन मार्न धीर काटन पोलिस्टर यार्न (रग-स्पिडलेस स्पन)	३० प्रतिशत
	(भ) काटन यार्ने और काटन पोलिस्टर मार्ने (श्रोपन एण्ड स्पिनिंग)	35 प्रतिशत
	(कः) पिस गुब्स	३० प्रतिशत
	(च) डेनिम फेबिक्स	३० प्रतिशत
	(छ) टेरी टोक्स्स	32 प्रतिगत
	(ज) सिर्ल्फ फेब्रिक्स	20 प्रतिशत
3.	धमङ्ग ् उत्पाद	
	(%) लेकर क्टिक्यर	25 प्रतिशत
	(ब) लेवर गू-झपर्स	25 प्रतिशत
	(ग) भेकर गारमेन्ट्स/मृह्स	30 प्रतिशत
	(च) स्पोर्ट्स मूज/स्पोर्टस फ् टकियर	25 प्रतिशत
4.	रत्न ग्रीर ग्राभूवण	
	(क) साधारण सीने के ग्राभूषण	10 प्रतिशत
	(ख) तराधे गए सोने के ग्रामूषण	1 5 प्रतिशत
	(ग) चोची के द्राभूवण	25 प्रतिशत
5.	म्र ^{क्} य	
	(क) लेटेक्स ग्लो ब स	40 प्रतिशत
	(ख) ग्रेनाइट	45 प्रतिशत
	(ग) फिश श्रौर श्रिप कल्चर फीड उत्पादन यूनिट	३० प्रतिश्त
	(घ) परीक्षण ग्रीर माप करने के ग्रीजार, ग्रीकोगिक/कन्ट्रोल वा ल्य फोटो कॉपियर	
	ग्रीर चिकित्सीय श्रीर वैज्ञानिक उपकरण	20 प्रतिशत
	(ङ) दीवार घड़ियां/टाइम पीस/हाथ की महिदां	30 प्रतिशत
	(च) सिगरेट	35 प्रतिशत
	(छ) सिगरेट लाइटर	40 प्रतिशत
	(ज) बुगों समेत ब्रिटल्स	30 प्रतिशत
	(म) दिश्यू कल्चर पौधे	60 प्रतिमत
	(ञा) दूर संचार सम्बन्धी उपकरण	30 प्रतिशत
	(৪) श्रपेक्षाकृत छोटे वर्तन श्रर्थात् ट्रावनर्स, टग्स, ड्रेजर्स श्रादि	30 प्रतिशत
	(১) विदेश में जाने वाले विशाल बर्तन	40 प्रतिशत

MINISTRY OF COMMERCE IMPORT TRADE CONTROL PUBLIC NOTICE NO.1——ITC(PN)/92/97

New Delhi, the 31st March, 1992

Subject:- Export and Import Policy for April, 1992—March, 1997.

Fil: No. IPC/4/5(244)/92-97.—In exercise of the powers conferred under section 3 of the Imports and Exports (Control) Act, 1947, the Export and Import Policy contained in Annexure-I to this Public Netice is hereby notified. It shall come into force with effect from 1st April, 1992, and shall remain in force for a period of five years, i.e. upto 31st March, 1997.

- 2. The provisions and procedure contained in the Import and Export Policy (Volumes I and II) 1990-93 (Ministry of Commerce Public Notices No. 1-ITC (PN)/90-93 dated 30th March, 1990 and No. 10-ETC (PN)/90—93 dated 30th March, 1990) and the procedures prescribed in the Hand Fock of Procedures (Volumes I & II) 1990—93, (Ministry of Commerce—Pulic Notice No. 2—ITC (PN)/90—93 dated 30th March 1990), shall, so far as they are not inconsistent with the provisions and procedure contained in the Policy mentioned in Para I above, continue to be in force and shall be deemed to have been made, issued or done under this Policy.
 - 3. This issues in Public interest.

D.R. MEHTA, Chief Controller of Imports and Exports

FOREWORD

I have great pleasure in presenting the new Export and Import Policy which will come into force on 1st April, 1992. Having regard to the need for stable policies, the duration of the new Policy will be five years, that is, the whole of the Eighth Plan period. The new Policy will replace the current Import-Export Policy (1990—93).

It is widely acknowledged that trade can flourish only in a regime of substantial freedom. Major changes in trade policy were announced by the Central Government on 4th July, 1991 and 13th August, 1991. The new Policy reinferces the direction set by these trade policy reforms. The Policy would also complement the changes made in the industrial and fiscal policies.

The fundamental feature of the new Policy is freedom. It substantially eliminates licensing, quentitative restrictions and other regulatory and discretionary controls. All goods may be freely imported and experted, save for two Negative Lists. The Negative List of Imports and the Negative List of Exports place restrictions on the import or export of certain goods. These lists have been kept as small as possible in the present circumstances. It is the policy of the Government to prune these lists from time to time as exports gather momentum and the economy gains strength.

The restrictions placed on goods included in the Negative Lists are on grounds of public policy. Trading in condisted goods may be done normally by the designated agencies only. Howevers the Centrol Government may grant licences to others to import or export any canalised goods. The number of canalised good has been drastically reduced and canalisation is confined to certain petroleum products, for tilizers, edible oils, cereals and a few other items. Some other goods have been included in the Negative Lists and placed under restrictions like licensing, registration, ceiling limits etc. The import of consumer goods and durables will continue to be under restraint. These restrictions are considered necessary for economic reasons a well as on grounds of safety, security, environment, employment and the like. In respect of certain goods included in the Negative Lists, the conditions for import or export will be specified in a general way in Public Notices issued in this behalf so that the need for licensing in individual cases is eliminated. When the procedures to be followed are laid down, care will be taken to ensure that the restrictions are simple and easy for both compliance and administration.

The Policy has a pronounced bias towards exports and strengthens special schemes directed toward exports.

The scope of the duty exemption scheme has been enlarged by introducing value based Advance Licences besides the quantity based Advance Licences. This will give greater flexibility to the exporter to import and export goods within the overall value limits and without any quantitative restrictions except in the case of sensitive goods. Export Houses, Trading Houses and Star Trading Houses will be eligible for the facility of self-certification under the Advance Licence Scheme. Export sof specified products will be brought under the self-certification scheme later.

The Export Promotion Capital Goods (EPCG) Scheme has been liberalised and two windows will be now available for import of capital goods at concessional rates of customs duty at 25% or 15% with corresponding export obligations. Both new and second hand capital goods may be imported under the scheme. Domestic immufacturers of capital goods who may require to import components may also avail themselves of the EPGC Scheme at the concessional rate of customs duty at 15% of CIF value.

Gem and jewellery export promotion schemes are continued with little modification.

In the trade policy reforms, Export-Oriented Units and units in the Export Processing Zones were given greater autonomy and flexibility. Under the new Policy, they will be allowed to install not only own machinery but also machinery taken on lease. They may also export their production through Export Houses Trading Houses or Star Trading Houses.

The crucial role of Export Houses, Trading Houses and Star Trading Houses has been reiterated.

Export Promotion Councils (EPCs) have performed a very vitail role in the promotion of exports. Their role has been recognised in the new policy. The Registration-cum-Membership Certificate (RCMC) issued by EPCs will continue to be an essential requirement for any importer/exporter to avail of the benefits or concessions or to apply for any licence under the new Policy.

Deemed exports have been defined and benefits such as duty exemption schemes, duty drawback schemes and exemption from terminal excise duty have been extended to deemed exports.

Certain categories of exports and exporters will be eligible to receive special import licences. These include deemed exports, Export Houses, Trading Houses and Star Trading Houses and manufacturers who acquire ISO 9000 (series) or BIS 14000 (series) certification of quality.

The Central Government proposes to launch, in association with trade and industry, a major nation-wide campaign on quality awareness and to take other steps to bring Indian products to world standards.

The Policy aims at simplification and transparency. The Policy has to be supplemented by procedures. The procedures are being revised and will be kept simple and easy to administer. The Handbook of Procedures will be issued shortly and until then, the existing procedures will be applicable.

It no ds to be emphasized that the new Policy will remain stable for the five year period. However, changes would have to be made in the direction of liberalisation. Some other changes may also become necessary as a response to an emergency situation. It is the intention of the Government to make such changes as far as possible only once every quarter.

It is hop d that the Policy will achieve the overall objective of promoting foreign trade to the edvantage of the country.

Before concluding, I would like to express my sincere gratitude to all those in the confice of CCI&E, the the Ministry of Commerce and others who have contributed to the formulation of this Policy. I would also like to thank the Computer Centre of the National Informatics Centre in the Ministry of Commerce and the Government of India Printing Press for their services.

New Delhi, 31st March, 1992 D.R. MEHTA, Chief Controller of Imports and Exports

CHAPTER I

INTRODUCTION

- 1. NOTIFICATION.—In exercise of the powers conferred under Section 3 of the Imports and Exports (Control) Act, 1947¹ the Central Government hereby notifies the Export and Import Policy for the period 1992-97.
- 2. APPLICATION AND DURATION.—The Export and Import Policy shall come into force with effect from 1st April, 1992 and shall remain in force for a period of five years, that is, upto 31st March, 1997.
- 3. AMENDMENT.—The Central Government reserves the right in public interest to make any amendments to this Policy. The amendments will be published by means of Public Notices issued by the Chief Controller of Imports and Exports.*
- 4. TRANSITIONAL ARRANGEMENTS.—Any Notification made or Public Notice issued or anything done under the previous Export-Import policies, and in force immediately before the commencement of this Policy shall, in so far as they are not inconsistent with the provisions of this Policy, continue to be in force and shall be deemed to have been made, issued or done under this Policy. Licences issued before the commencement of this Policy shall continue to be valid for import/export of the items permitted therein.
- 5. Exports and imports which were on Open General Licence (OGL) or where no licences/permits were required under the previous policies, but are subject to regulation or licence under this Policy, will also be permitted, provided they are supported by letters of credit established on or before the 31st March, 1992.

CHAPTER II

OBJECTIVES

- 6. The principal objectives of this Policy are as under:
- (a) To establish the framework for globalisation of India's foreign trade;
- (b) To promote the productivity, modernisation and competitiveness of Indian industry and thereby to enhance its export capabilities;
- (c) To encourage the attainment of high and internationally accepted standards of quality and thereby enhance the image of India's products abroad;
- (d) To augment India's exports by facilitating access to raw materials, intermediates, components, consumables and capital goods from the international market;
- (c) To promote efficient and internationally competitive import substitution and self-reliance under a deregulated framework for foreign trade;
- (f) To eliminate or minimise quantitative, licensing and other discretionary controls in the framework of India's foreign trade;
- (g) To foster the country's Research and Development (R&D) and technological capabilities; and
- (h) To simplify and streamline the procedures governing exports and imports.
- 1. The Foreign Trade (Dev lopment and Regulation) Bill, 1992 will be introduced in Parliament shortly. On the Bill becoming a law, this Policy shall be deemed to have been made under the new Act.
- 2. Under the new Act, it is proposed to re-designate this office as Director General of Foreign Trade (DGFT).

CHAPTER III

DEFINITIONS

- 7. For the purpose of this Policy, unless the context otherwise requires, the following words and expressions shall have the meanings attached to them:
 - (1) "Accessory" or "Attachment" means a part, sub-assembly or assembly that contributes to the efficiency or effectiveness of a piece of equipment without changing its basic functions.
 - (2) "Act" means the Imports and Exports (Control) Act, 1947.
 - (3) "Actual User" means an actual user who may be either industrial or non-industrial.
 - (4) "Actual User (Industrial)" means a person who utilises the imported goods for manufacturing in his own industrial unit or manufacturing for his own use in another unit including a jobbing unit.
 - (5) "Actual User (Non-Industrial)" means a person who utilises the imported goods for his own use in
 - (i) any commercial establishment carrying on any business, trade or profession; or
 - (ii) any laboratory, scientific or Research and Development (R&D) institution, university or other educational institution or hospital; or
 - (iii) any service industry.
 - (6) "Capital Goods" means any plant, machinery, equipment or accessories required for production, directly or indirectly, of goods or for rendering services, including those required for replacement, modernisation or expansion.
 - (7) "Canalisation" of exports and imports means exports and imports only through the agencies designated by the Central Government.
 - (8) "Competent Authority" means an authority competent to exercise any power or discharge any duty or function under the Act or the Rules and Orders made thereunder or under this Policy.
 - (9) "Component" means one of the parts of a sub-assembly or assembly of which a manufactured product is made up and into which it may be resolved. A component includes an accessory or attachment.
 - (10) "Consumables" means any item which participates in or is required for a manufacturing process, but does not form a part of the end-product. Items which are substantially or totally consumed during a manufacturing process will be deemed to be consumables.
 - (11) "Consumer Goods" means any consumption goods which can directly satisfy human needs without further processing and include consumer durables.
 - (12) "Counter Trade" means any arrangement under which exports/imports from India are balanced either by direct imports/exports from the importing/exporting country or through a third country under a Trade Agreement or otherwise. Exports/Imports under Counter Trade may be carried out through Escrow Account, Buy Back arrangements, Barter trade or any similar arrangement. The balancing of exports and imports could wholly or partly be in cash, goods and/or services.
 - (13) "Drawback" in relation to any goods manufactured in India and experted means the rebate of duty chargeable on any imported materials or excisable materials used in the manufacture of such goods in India.
 - (14) "Excisable goods" means any goods produced or manufactured in India and subject to a duty of excise under the Central Excise and Salt Act, 1944 (1 of 1944).
 - (15) "Exporter" means a person who exports or intends to export and holds an Importer-Exporter code number.

- (16) "Export House/Trading House/Star Trading House" means an exporter holding an Export House/Trading House/Star Trading House certificate issued by the Chief Controller of Imports and Exports.
- (17) "Export Obligation" means the obligation to export the product or products covered by the licence or permission in terms of quantity, value or both, as may be prescribed or specified by the licensing or competent authority.
- (18) "Importer" means a person who imports or intends to import and holds an Importer-Exporter code number.
- (19) "International Price Reimbursement Scheme" means any scheme providing for reimbursement of an amount equivalent to the difference between domestic and international prices, as determined by the Central Government from time to time, in respect of a specific input used in the export product.
- (20) "Licensing Authority" means the authority competent to grant a licence under any law for the time being in force.
- (21) "Licence" means a licence granted and includes a Customs Clearance Permit or any other permission granted by the licensing authority.
- (22) "Licensing year" means the period beginning on the 1st April of a year and ending on the 31st March of the following year.
- (23) "Life Saving Drug" means a drug necessary for saving life and includes a sight-saving drug and notified as such by the Chief Controller of Imports and Exports.
- (24) "Life Saving Equipment" means an equipment (including spares) necessary for saving life and notified as such by the Chief Controller of Imports and Exports.
- (25) "Manufacture" means to make, produce, fabricate, assemble, process or being into existence, by hand or by machine, a new product having a distinctive name, character or use.
- (26) "Manufacturer Exporter" means a person who manufactures goods and exports or intends to export such goods.
- (27) "Merchant Exporter" means a person engaged in trading activity and exporting or intending to export goods.
- (28) "Notification" means a notification published in the official Gazette.
- (29) "Part" means an element of a sub-assembly or assembly not normally useful by itself and not amenable to further disassembly for maintenance purposes. A part may be a component or an accessory.
- (30) "Person" includes an individual, firm, society, company, corporation or any other legal person.
- (31) "Policy" means the Export and Import Policy 1992-97 as amended from time to time.
- (32) "Prescribed" means prescribed under the Imports and Exports (Control) Act 1947 or the Rules or Orders made thereunder or under this Policy.
- (33) "Public Notice" means a notice published under the Policy for the information of the public.
- (34) "Raw material" means
 - (i) basic materials which are needed for the manufacture of goods, but which are still in a raw natural, unrefined or unmanufactued state; and
 - (ii) for a manufacture, any materials or goods which are required for his manufacturing process, whether they have actually been previously manufactured or are processed or are still in raw or natural state.
- (35) "Registration-cum-Membership Certificate" means the certificate of registration and membership granted by any Export Promotion Council listed in Chapter XIII.

(36) "Spares" means a part of a sub-assembly or assembly for substitution, that is, ready to replace an identical or similar part or sub-assembly or assembly. Spares includes a component or an accessory.

(37) "Specified" means specified by or under the provisions of this Policy.

CHAPTER IV

GENERAL PROVISIONS REGARDING

EXPORTS AND IMPORTS

- 8. EXPORTS & IMPORTS FREE UNLESS REGULATED:—Exports and imports may be done freely, except to the extent they are regulated by the provisions of this Policy or any other law for the time being in force.
- 9. FORM OF REGULATION:—The Central Government may, in public interest, regulate the import or export of goods by means of a Negative List of imports a or as the Negative List of Exports, as the case may be.
- 10. NEGATIVE LISTS:—The Negative Lists may consist of goods, the import or export of which is prohibited, restricted through licensing or otherwise, or canalised. The Negative List of Imports and the Negative List of Exports shall be as contained in this Policy.
 - 11. PROHIBITED GOODS:—Prohibited goods shall not be imported or exported.
- 12. LICENSING:—Any goods, the export or import of which is restricted through licensing, may be exported or imported only in accordance with a licence issued in this behalf.
- 13. TERMS AND CONDITIONS:—A licence shall contain such terms and conditions as may be specified by the licensing authority and may include:
 - (a) The quantity, description and value of the goods;
 - (b) Actual user condition, if any;
 - (c) Export obligation, if any;
 - (d) The value addition to be achieved, if any;
 - (e) The minimum export price, if any; and
 - (f) The country of origin or destination of the goods.
- 14. PERIOD OF VALIDITY:—Every licence shall be valid for the period of validity specified in the licence and if no period is specified it shall be valid until the 31st March of the licensing year.
- 15. LICENCE NOT A RIGHT.—No person may claim a licence as of right and the licensing authority shall have the power to refuse a licence.
- 16. PROCEDURE.—The Chief Controller of Imports and Exports may, in any case or class of cases, specify the procedure to be followed by an exporter or importer or by any licensing, competent or other authority for the purpose of implementing the provisions of the Act, the Rules and Orders made thereunder and this Policy. Such procedures shall be included in the Handbook of Procedures and published by means of a Public Notice. Such procedures may, in like manner, be amended from time to time.
- 17. CANALISATION.—Any goods, the import or export of which is canalised, may be imported or exported by the canalising agency specified in the Negative Lists. However, the Chief Controller of Imports and Exports may grant a licence to any other person to import or export any canalised goods.
- 18. IEC CODE No.—An Importer-Exporter Code (IEC) number shall be granted, on application, by the competent authority in accordance with the procedure specified in this behalf by the Chief Controller of Imports and Exports. No export or import shall be made by any person not granted an Importer-Exporter Code (IEC) number unless specifically exempted under any other provision of this Policy.
- 19. COMPLIANCE WITH LAWS.—Every exporter or importer shall comply with the provisionso the imports and Exports (Control) Act 1947, the Rules and Orders made thereunder, the provisions of this Policy and the terms and conditions of any licence granted to him.

- 20. INTERPRETATION OF POLICY.—If any question or doubt arises in respect of the interpretation of any provision contained in this Policy, the said question or doubt shall be referred to the Chief Controller of Imports and Exports and his decision shall be final.
- 21. RELAXATION OF POLICY/PROCEDURE.—Any request for relaxation of the provisions of this Policy or of any procedure, on the gruond that there is genuine hardship to the applicant or that a strict application of the Policy or the procedure is likely to affect trade adversely, may be made to the Chief Controller of Imports and Exports for such relief as may be necessary. The Chief Controller of Import and Exports may pass such orders or grant such relaxation or relief as he may deem fit.

CHAPTER V

IMPORTS

- 22. FREE IMPORTABILITY. -Capital goods, raw materials, intermediates, components, consumables, spares, parts, accessories, instruments and other goods may be imported without any restriction except to the extent such imports are regulated by the Negative List of Imports or any other provision of this Policy or any other law for the time being in force.
- 23. ACTUAL USER CONDITION.—Capital goods, raw materials, intermediates, components, consumables, spares, parts, accessories, instruments and other goods, which are importable without any restriction, may be imported by any person whether he is an Actual User or not. However, if such imports require a licence, the Actual User alone may import such goods unless the Actual User condition is specifically dispensed with by the licensing authority.
- 24. SECOND HAND GOODS.—Second hand capital goods and any other second hand goods shall not be imported unless permitted by this Policy or in accordance with a licence issued in this behalf.
- 25. IMPORT OF SECOND HAND CAPITAL GOODS WITHOUT LICENCE.—Second hand capital goods may be imported without a licence in the following sectors;
 - (a) Printing and allied processes
 - (b) Garments/Hosiery/Made-ups
 - (c) Leather processing/Leather finishing/Leather goods manufacturing/Leather apparel manufacturing.
 - (d) Rubber and Canvas footwear
 - (e) Sports goods
 - (f) Electric lamps
 - (g) Packaging and Packaging material
 - (h) Forged hand tools
 - (i) Oil field services
 - j) Writing instruments
 - (k) Sea food
 - Any other sector as may be specified by a Public Notice issued in this behalf.
- 26. IMPORT OF SECOND HAND CAPITAL GOODS WITH LICENCE.—Any other second hand capital goods may be imported in accordance with a licence issued in this behalf.
- 27. APPLICATION.—An application for the import of second hand capital goods may be made to the licensing authority and shall contain the following:
 - (a) Complete specifications of the second hand plant, machinery, equipment and accessories and price (proforma invoice), together photographs, if available and break-up of the price of the capital goods, cost of dismantling, freight and insurance.

- (b) Performance guarantee furnished by the supplier;
- (c) Reasons and grounds in support of such import, including the advantages that would accrue in eapital cost, production, prices of the products proposed to be manufactured and exports; and
- (d) A certificate in the prescribed form from a professional independent Chartered Engineer or any Institution of Engineers in the country from which the second hand capital goods are intended to be imported certifying the age and residual life of the said capital second.
- 28. CONDITIONS FOR IMPORT OF SECOND HAND MACHINERY.—The second hand capital goods shall not be more than seven years old and shall have a minimum residual life of five years. Imports of second hand capital goods shall be subject to Actual User condition in all cases.
- 29. OTHER SECOND HAND GOODS.—All second hand goods, other than capital goods, may be imported in accordance with a Public Notice or a licence issued in this behalf.
- 30. IMPORT ON RE-EXPORT BASIS.—The following capital goods may be imported on re-export basis without a licence:
 - (a) Capital goods for reconditioning, on execution of bond/bank guarantee to the satisfaction of the Customs authorities;
 - (b) Jigs, fixtures, dies and patterns (including contour roller dies), moulds (including moulds for die casting) and press tools; and
 - (e) Construction machinery and other equipment subject to execution of bond/bank guarantee to the satisfaction of the Customs authorities.
- 31. REPAIRS ABROAD AND RE-IMPORT WITHOUT LICENCE.—Imported capital goods or parts thereof may be sent abroad for repairs and re-imported without a licence but subject to the satisfaction of the Customs authorities that the re-imported goods are the same as the goods that were exported.
- 32. UNDER LICENCE.—Indigenous capital goods having imported components may be sent abroad for repairs after obtaining a licence from the Chief Controller of Imports and Exports for such export on re-import basis.
- 33. IMPORT OF USED MACHINERY AND EQUIPMENT.—After completion of the projects abroad, project contractors may import, without a licence, used construction equipment, machinery, related spares, tools and accessories on the basis of production of evidence of purchase for and use in the overseas project. Used office equipment and vehicles may also be imported after completion of the projects abroad, without a licence, but subject to the condition that they have been used for at least one year.
- 34. IMPORT OF GIFTS.—Import of gifts shall be permitted according to the Baggage Rules, 1976. In any other case, a Customs Clearance Permit (CCP) shall be required for import of gifts by such institutions and establishments as may be specified in this behalf. A Customs Clearance Permit (CCP) may be issued, on application, by the licensing authority after considering the merits of the case. Such imports will, however, be subject to the Foreign Contribution (Regulation) Act, 1976.
- 35. SALE ON HIGH SEAS.—Sale of goods on high seas for importation into India may be made subject to this Policy or any other law for the time being in force.
- 36. TRADE WITH NEIGHBOURING COUNTRIES.—In the case of trade with neighbouring countries, the Chief Controller of Imports and Exports may issue from time to time such instructions as may be required.

CHAPTER VI

EXPORT PROMOTION CAPITAL GOODS SCHEME

37. SCHEME.—Capital goods may be imported with a licence under the Export Promotion Capital Goods (EPCG) Scheme.

38. Import on concessional duty.—Capital goods may be imported, at a concessional rate of customs duty according to the conditions given in the table below, but subject to an export obligation to be fulfilled over a period of time. Such export obligation may be reckoned from the date of customs clearance of the first consignment of such imported goods.

Duty		Export Obligation	Period	Period	
26 % CIF 15 % CIF	value value	3 times CIF value 4 CIF value	4 years 5 years	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	

- 39. Eligibility.—A manufacturer-exporter to be cligible to import capital goods under the scheme should have been a regular exporter for a period of not less than three years. However, import of capital goods under the scheme may also be allowed, on merits, to other manufacturer-exporters who are new exporters or whose export performance is for a period of less than three years. Testing equipment, R & D equipment, packaging machinery and such other machinery or equipment as may be specified may also be imported under the scheme.
- 40. Conditions for import of second hand capital goods.—Both new and second hand capital goods may be imported under the scheme. In the case of import of second hand capital goods, the general conditions contained in Chapter V shall apply and the licensing authority may also specify any other terms and conditions.
- 41. Export obligation.—The export obligation to be fulfilled by the importer shall be independent of any other obligation undertaken by the importer and shall be over and above the average level of exports made by him in the preceding three licensing years. Further, the export obligation under the scheme shall be in the form of direct exports of the products manufactured with the capital goods permitted to be imported. For this purpose, deemed exports and third party exports shall not be taken into account.
- 42. Actual User condition.—Import of capital goods under the scheme shall be subject to this Actual User condition.
- 43. Procedure for application.—An application for grant of a licence under the scheme may be made to the licensing authority in accordance with the procedure specified in this behalf.
- 44. Import of Computer systems.—Import of computer systems shall also be governed by paragraphs 37 to 43 above.
- 45. Bond and Bank Guarantee.—A manufacturer-exporter shall be required to execute a bond with the licensing authority in the prescribed form supported by a bank guarantee for the value and period as mentioned in the licence.
- 46. Import of Components—A person holding a licence under the EPCG scheme for import of capital goods may source the capital goods from a domestic supplier instead of importing it. In the event of a firm contract between the parties or such sourcing, the domestic supplier may apply for the import of components under this scheme at a concessional rate of customs duty of 15% of the CIF value of such components for the manufacture and supply of the said capital goods to the EPCG licence holder. The export obligation pertaining to the import of the capital goods shall, however, continue to be discharged by the EPCG licence holder.

CHAPTER VII

DUTY EXEMPTION SCHEME

- 47. Duty Exemption Scheme.—Under the Duty Exemption Scheme, imports of duty free raw materials, components, intermediates, consumables, parts, spares including mandatory spares and packing materials required for the purpose of export production may be permitted by the competent authority under the five categories of licences mentioned hereinafter.
- 48. Advance Licence.—An Advance Licence is granted for the duty free import of raw materials, components, intermediates, consumables, parts, spares including mandatory spares and packing materials. Such licences shall be subject to the fulfilment of a time-bound export obligation and value addition as may be specified. Advance Licences may be based on either value or quantity. An exporter may apply for a value based or quantity based Advance Licence.

- 49. Value based Advance Licence.—A value based Advance Licence shall specify:
- (a) the names and description of items to be imported and exported;
- (b) the CIF value of imports;
- (c) the FOB value of exports; and
- (d) the value addition in accordance with the standard Input-Output norms published by means of a Public Notice or, in respect of items for which such norms have not been published, value addition as may be specified by the competent authority.

For the items described as sensitive items, or where the competent authority considers it necessary to do so, quantity or CIF value or both of each sensitive item intended to be imported shall also be specified in the licence.

- 50. Quantity based Advance Licence.—A quantity based Advance Licence shall specify:
- (a) the names and description of items to be imported and exported;
- (b) the quantity of each item to be imported;
- (c) the CIF value of each item to be imported;
- (d) the quantity and FOB value of exports; and
- (e) the value addition.
- 51. Input-Output norms.—The quantitative norms to be incorporated in such licences shall be in accordance with the standard Input-Output norms published by means of a Public Notice or, in respect of items for which such norms have not been published, quantitative norms as may be specified by the competent authority.
- 52. Modification of norms.—The Chief Controller of Imports and Exports may, on the recommendation of the Advance Licensing Committee (ALC), modify the norms or prescribe additional norms.
- 53. Flexible value addition.—A quantity or value based Advance Licence may be given for a class or classes of export products in the same sector in order to provide flexibility to the exporter in achieving the value addition. The export obligation and value addition will be regarded as having been achieved by taking the value of imports and exports for each such class of products covered by the licence. This scheme will be introduced in respect of the pharmaceutical sector and such other sectors as may be specified by the Chief Controller of Imports and Exports in this behalf.
- 54. Self-declared Pass Book Scheme.—A scheme of self-certification and self-declaration under the Advance Licence scheme will be available for some categories of exporters.

Star Trading Houses, Trading Houses and Export Houses will be eligible to avail themselves of the scheme. Exporters of other products, as may be specified in this behalf by the Chief Controller of Imports and Exports, may also avail themselves of the scheme.

Under the scheme, an exporter will be issued a Pass Book indicating the names and description of the items to be imported and exported by him and the value addition to be achieved through such exports. The exporter will be permitted to enter on the import side of the Pass Book the names and description of the items to be imported by him and the CIF value of the imports. He shall certify and declare the contents to be true. On the basis of such self-certification and self-declaration, the Customs authorities shall permit the import of raw materials, components, intermediates' consumables, spares including mandatory spares, parts and packing materials' After the export is made, the exporter shall, on the export side of the Pass Book, enter the names and description of the items exported and the value addition achieved. He shall certify and declare the contents to be true. On the basis of the self-certification and self-declaration the licensing authority may, after due verification, discharge his export obligation.

The Pass Book shall be valid for a period of one year and may be renewed from time to time.

A bank guarantee/legal undertaking (LUT) equiavalent to the CIF value of the imports shall be furnished by the Pass Book holder to the licensing authority. The bank guarantee/LUT shall be kept valid for an amount not less than the CIF value of the imports against which exports have yet to be made.

----_ ---- . ____-

- 55. Advance Intermediate Licence.—An Advance Intermediate Licence is granted for the duty free import of raw materials, components, intermediates, consumables, parts, spares and packing materials by the intermediate manufacturer for supply under an agreement to the ultimate exporter holding a licence under the Duty Exemption Scheme. The Intermediate Licence holder shall have an option either to supply to a licence holder under the Duty Exemption Scheme or export directly within a specified period and on satisfying the requirement of value addition. The quantitate norms applicable to Advance Licences shall also apply to Advance Intermediate Licences.
- 56. Special Imprest Licence.—A Special Imprest Licence is granted for the duty free import of raw materials, components, intermediates, consumables, parts, spares including mandatory spares and packing materials to main/sub contractors for the manufacture and supply of products in the following eases:
 - (i) Supplies made to United Nations Organisations or under the aid programme of the United Nations or other multilateral agencies and paid for in foreign exchange;
 - (ii) Supplies made to projects financed by the following multilateral or bilateral agencies/Funds or any other agency/Fund as may be notified by the Central Government, under international competitive bidding or under limited tender system in accordance with the precedures of those agencies/Funds:
 - 1. Abn Dhabi Fund for Atab Economic Development.
 - 2. Asian Development Bank (ADB)
 - 3. International Bank for Peconstruction and Development (IBR D/IDA)
 - 4. International Fund for Agricultural Development (IFAD)
 - 5. Kreditansdalt für Wiederaufbau (KFW)
 - 6. Kuwaiti Fund for Arab Economic Development.
 - 7. Organisation of Petroleum Exporting Countries (OPEC) Fund
 - 8. Saudi Fund for Development (SFD)
 - 9. United States Agency for International Development (USAID).
 - 10. Yen credit channelised through Overseas Economic Cooperation Fund (OECF);
 - (iii) Supplies made to units in the Export Processing Zones (EPZs) and Export Oriented Units (EOUs) of such goods as are specified by a Public Notice issued in this behalf or any other goods specified in the Special Imprest Licence;
 - (iv) Supplies of capital goods, raw materials, components, intermediates, consumables, parts, equipment, instruments, accessories, tools and spares to the Oil and Natural Gas Commission (ONGC), Oil India Ltd. (OIL) and Gas Authority of India Ltd. (GAIL), for their off-shore and on-shore exploration, drilling and production operations; and
 - (v) Supply of capital goods for fertiliser plants by the Indian main contrctors if the supply is made under the procedure of international competitive bidding.
- 57. Special Imprest Licences shall be quantity based and the input-output norms shall be as may be determinded by the competent authority.
- 58. Advance Customs Clearance Permit.—Advance Customs Clearance Permit (ACCP) is granted for the duty free import of goods for the purpose of jobbing, repairing, servicing, restoration, reconditioning, renovation and may also include patterns, drawings, jigs, tools, fixtures, moulds, tackles and instruments as are directly related to the export order and are supplied free of cost by the foreign buyer. But these shall be reexported along with the export product. Requests for retention of imported moulds, patterns etc., may be made after the fulfilment of the export obligation and may be permitted by the ALC, subject to the payment of customs duty leviable on the date of import and such other conditions as may be specified by the competent authority.
- 59. Eligibility.—Any merchant exporter or manufacturer exporter who holds an Importer-Exporter Code number, a specific export order/letter of credit and is in a position to realise the export preceeds in his own name may apply for duty free licences.

- 60. Value Addition.--Value addition norms, as specified by means of a Public Notice issued in this behalf, shall apply to duty free licences. Products not listed therein shall have a minimum value addition of 33%. The ALC may, however, consider requests for grant of licences on a lower value addition, but in no case below 25% on technical grounds.
- 61. Exports to RPA countries.—Exports to Rupee Payment Area countries shall be subject to such value addition as may be specified from time to time by a Public Notice issued in this behalf.
- 62. Licences under Production Programme.—Exporters may apply for duty free licences, except Speial Imprest Licence, without an export order. In the case of an application without an export order, the value of the licence may not exceed the average of the FOB value of exports of the applicant during the preceding three licensing years.

Manufacturers and merchants having an average annual turn-over of Rs. 5 crores or more during the preceding three licensing years may apply for duty free licenses, except Special Imprest License, to meet their needs of export production, without an export order. The value of the license may not exceed 25% of the said average annual turnover.

63. Export Obligation.— A licence issued under this scheme shall specify the export obligation which must be fulfilled within the period stipulated below:

sl. No.	Export Product	Period
1.	Items of project/turnkey project.	till the contracted duration of export/supply.
2.	Engineering items [other than those covered by (1) above]	12 months
3.	Items of computer hard ware/ peripherals/cassettes (audio or video)	6 months
4.	Others	9 months

A request for extension of the period to fulfil the export obligation may be granted by the licensing authority or the competent authority, as the case may be.

- 64. Advance Release Orders.—A holder of a duty free licence has the option either to import items allowed under the licence directly or to obtain them from indigenous sources/canalising agencies against Advance Release Orders denominated in foreign exchange/Indian rupees. An advance Release Order may be granted, on application, by the licensing authority who issued the duty free licence or any other licensing authority as may be authorised in this behalf.
- 65. Sourcing and clerance.—A holder of a duty free licence may source or clear any goods already imported and kept in a customs bonded warehouse. A holder of a duty free licence may also source or clear any goods manufactured or processed in units in EPZs or in EOUs. In the latter case, the duty free licence holder shall apply for and obtain an Advance Relesase Order from the licensing authority.
- 66. Exports in anticipation of licence.—Exports/supplies made from the date of receipt of an application under this scheme by the licensing authority may be accepted towards discharge of export obligation. The conversion of duty free shipping bills to drawback shipping bills may also be permitted by the Customs authorities in case the application is rejected or modified by the licensing authority.
- 67. Transferability of Advance Licence.—A value or quantity based Advance Licence, a quantity based Intermediate Advance Licence and a Special Imprest Licence, or the materials imported against them, may be freely transferable after the export obligation has been fulfilled, export proceeds realised and the bank guarantee/LUT redeemed. This facility shall not be available in cases where the MODVAT/Proforma Credit facility or excise relief under Rule 191B of the Central Excise Rules has been availed of.
- 68. Mandatory Spares.—Where import of mandatory spares is allowed under the scheme, the value of such mandatory spares shall not exceed 5% of the value of the licence and such spares shall be re-exported along with the export product.
- 69. Prohibited items.—Prohibited items in the Negative List of Imports shall not be imported under the scheme.

- 70. Admissibility of Drawback/IPRS. -Drawback and International Price Reimbursement Scheme (IPRS) shall not be admissible on the produts exported under the scheme.
- 71. Penalty.—If a holder of a duty free licence under the scheme violates any condition of the Feince or fails to fulfil the export obligation, he shall be liable to such penalty as may be notified by an order made in this behalf by the Central Government.
- 72. Scheme for Advance Licence for Gold and Silver Jewellery and Articles.—An Advance Licence for Gold and Silver jewellery and articles is granted for the duty free import of:
 - (i) Gold, mountings, sockets, frames and findings of 18 carats and below; and
 - (ii) Silver, mounting, sockets, frames and findings.
- 73. Conditions.—The scheme shall, however, be limited to exports which are supported by an irrevocable letter of credit, documents against acceptance, and/or payment of eash-on-delivery basis. Imports may be made only through specified ports as notified by the Customs authorities.
- 74. Export obligation.—Exports shall be made only against prior imports. The export obligation will begin from the date of import of the first consignment and will be required to be fulfilled within 120 days from the said date.
- 75. Value addition.—The value addition shall be calculated on the basis of the price at which the gold content (including wastages) and silver content (without wastages) are imported. The CIF value of mountings, findings etc. shall also be taken into account and their import/export shall be on net-to-net basis. The minimum value addition for gold and silver jewellery/articles shall be 15% and 25% respectively.
- 76. Wastage or loss.—Gold wastages or manufacturing loss, as indicated in the Handbook of Procedures may be allowed. On gold mountings, findings etc., a wastage of 3% of the gold content by weight may be allowed. If the FOB value of the exports is more than the prescribed export obligation, a Gem Replenishment Licence may be issued on the excess value in accordance with the formula prescribed in the Handbook of Procedures.
- 77. "Value Addition" for the purpose of this chapter shall be expressed as a percentage and shall be calculated according to the following formula:

$$VA = \frac{A - B}{B} \times 100$$
, where

VA is Value addition,

A is the FOB value realised by the export of the product covered by the licence; and

B is the CIF value of the imported inputs covered by the licence.

CHAPTER VIII

DIAMOND, GEM & JEWELLERY EXPORT PROMOTION SCHEMES

- 78. Scheme for Gems and Jewellery.—Exporters of Gems and Jewellery may import their inputs by obtaining Replenishment Licences and Diamond/DTC imprest Licences from the competent authorities in accordance with the procedure specified in this behalf.
- 79. Replenishment Licences.—The exporters of Gems and Jewellery products listed in Appendix I shall be eligible for grant of Replenishment Licences at the rate and for the items mentioned in the said Appendix to import and replenish their inputs. Such licences will be transferable. The exports made in fulfilment of export obligation against Diamond/DTC Imprest Licences shall not qualify for this benefit.
- 80. Diamond and DTC Imprest Licences.—Diamond and DTC Imprest Licences may be issued,in advance, for import of rough diamonds and for export of cut and polished diamonds. These licences are non-transferable. The imported goods may, however, be transferred to another person for processing but the responsibility to fulfil the export obligation shall be of the licensee. These licences shall carry an export obligation fixed in the inverse ratio of 65% of replenishment i.e., if the licence is issued for a CIF value of US\$65, the FOB value of rexport obligation shall be US\$100. At the time of redemption, the actual entitlement of the licensee may be recalculated with reference to the replenishment rates admissible for the corresponding export products in the said Appendix. Due to such re-calculation, if the licensee's entitlement comes to more than US\$65 (as in the above mentioned example) the licensing authority shall issue a Replensihment Licence for a value equivalent to whatever is in excess of US\$65 for import of rough dimaonds.

- 81. An exporter may apply for a licence:
- (a) against a value export contract in his own name if he has less than 3 years past export performance in cut and polished diamonds; or
- (b) against the best years's export performance during the preceding 3 licensing years plus 25 % thereof, if he has a minimum of 3 years export performance.
- 82. Export Obligation.—The export obligation shall be fulfilled within seven months from the date of clearance of the first consignment through Customs.
- 83. DTC Imprest Licences.—A regular DTC sight holder may be allowed annual DTC Licence equal to one and one-half time the consolidated value of the DTC sights received by him (excluding the sights cleared against a Replenishment Licence) in the preceding licensing year. Commission/brokerage charges upto one and one-half percent may be added provided there is a corresponding increase in the export obligation. The new sight holders may also apply for licences on monthly basis on allotment of sight from DTC, London. These licences will be valid for import from DTC, London only. The export obligation shall be completed within 120 days from the date of import of the first consignment and in accordance with the endorsement for each sight made on the licence.
- 84. Bulk Licences for Rough Diamonds.—Bulk licences for rough diamonds may be issued to M/s. Hindustan Diamond Company Ltd. (HDCL), Bombay and Minerals and Metals Trading Corporation (MMTC) Lt, New Delhi to meet the demand of the holders of valid REP/Diamond Imprest Licences.
- 85. Re-Export.—An exporter on re-exporting rough diamonds shall be eligible for import replenishment@ 100% of the CIF value minus foreign exchange cost of such re-export including commission. In case of imports from DTC, London and from mines (in run-of-the mine condition) re-export upto 5% and 10% respectively of the value of rough diamonds may be allowed. For imports made from any other source- re-export shall not exceed 5% of the value of rough diamonds imported, but this facility shall not be applicable to imports by bulk licence holders.
- 86. Schemes for Gold and Silver Jewellery.—Exporters of gold and silver jewellery may import their essential inputs such as gold, silver, mountings, findings, rough gcms, precious and semi-precious synthetic stones and unprocessed pearls etc., through import licences granted by the licensing authorities in accordance with the procedure specified in this behalf.
- 87. Gold/Silver content.—The following items, if exported, would be eligible for the facilities under these schemes:
 - (a) Gold jewellery and articles (other than coins), whether plain or studded, containing gold of 8 carats and above; and
 - (b) Silver jewellery and articles (excluding coins and any engineering goods) containing more than 50% silver by weight.
 - 88. Schemes.—Gold/silver jewellery and articles may be exported under the following schemes:
- A. Scheme for export of Gold/Silver jewellery and articles against Gold/Silver supplied by the foriegn buyer:

Under this cheme, the foreign buyer may supply, in advance, gold or silver, free of charge, for manufacture and ultimate export of gold or silver jewellery and articles thereof. He may also similarly supply alloys, findings and mountings of silver and gold of 18 carats and below. The export order should provide for

- (i) supply of gold and silver free of charge to the extent of quantity of gold and silver required after allowing wastages; and
- (ii) payment of manufacturing and other costs by means of irrevocable letter of credit or payment of cash on delivery or advance payment in foreign exchange. Gold jewellery may also be exported on collection basis (documents against acceptance). The export order should relate to a single buyer overseas. This scheme for export of gold/silver jewellery and articles will apply to export orders received by the Handicrafts & Handlooms Export Corporation (HHEC) or any other public sector agency nominated by the Ministry of Commerce, Government of India. The exports may be made by the nominated agency directly or through its associates. Exports will be allowed only by air freight and through Custom Houses at Bombay, Calcutta, Madras, New Delhi, Jaipur, Bangalore and Kochi.

The value addition may be calculated with reference to the value of gold content (including wastages) and silver content (without wastages) at the price of gold and silver announced by HHEC at the beginning of each month. For mountings, findings etc., the value addition shall be based on the CIF price of imports as determined by the nominated agency. The minimum value addition for gold and silver jewellery/articles is 15% and 25% respectively. The import and export of mountings and findings etc., shall be on net to net basis.

B. Scheme for export of Gold/Silver jewellery and articles for sale at approved exhibitions.

Exports made by Handierafts & Handlooms Export Corporation (HHEC)/State Trading Corporation (STC)/ India Trade Promotion Organisation (ITPO)/Minerals and Metals Trading Corporation (MMTC) and their associates are covered under this scheme. These organisations shall function as nominated agencies. Any other person may also be allowed to export under this scheme, if approved by the Ministry of Commerce. Exports shall be made on consignment basis for holding exhibitions and shall be subject to the condition that

- (i) the items which are not sold abroad shall be imported within 45 days of the close of the exhibition; and
- (ii) for items sold abroad, the gold and silver content shall be imported as replenishment not later than 60 days of the close of the exhibition. The nominated agency shall execute a bond to this effect with the Customs before export is allowed. In respect of exhibitions organised by others, bonds or bank guarantees shall be executed by the organisers as required under the rules of the RBI or the Customs authorities. After the close of the exhibition, for the purpose of replenishment, booking shall be made by the exporter with the assistance of the State Bank of India (SBI) or their agents at the place where the exhibition is held before the close of the exhibition or with the authorised SBI branches in India within 50 days of the close of the exhibition.

The value addition shall be calculated on the basis of price of gold content (including wastages) and silver content (without wastages) at which replenishment may be allowed or at the price on which the export invoice was made, whichever is higher. The exporter while preparing the export invoice may use the monthly notional price of gold/silver notified by HHEC. The minimum value addition for gold and silver jewellery/articles is 15% and 25% respectively. On presentation of required documents, appropriate Release Order and Gem Replenishment Licence may be issued by the licensing authority.

C. Gold and Silver jewellery and articles Export Promotion and Replenishment Scheme:

Against export of gold/silver jewellery and articles, the scheme provides for replenishment of gold/silver through the designated branches of SBI or any other agency nominated by the Ministry of Commerce, at a price indicated in the certificate issued by the SBI/agency after purchase of gold/silver. The scheme shall be limited to exports which are supported by irrevocable letter of credit, payment of cash on delivery basis or advance payment in foreign exchange. Export of gold jewellery may also be allowed on collection basis (documents against acceptance). The exporter has the option to obtain gold/silver from SBI in advance. On presentation of required documents, appropriate Release Order and Gem Replenishment Licence may be issued by the licensing authority.

The value addition will be calculated with reference to the value of gold content (including wastages) and silver content (without wastages) at the price at which the gold and silver is booked by SBI. The minimum value addition for gold and silver jewellery/articles shall be 15% and 25% respectively.

D. Scheme for advance licence for gold and silver jewellery and articles:

The provisions of the Advance Licence Scheme contained in Chapter VII shall apply to export of gold and silve jewellery and articles thereof.

E. Scheme for export of gold and silver jewellery and articles from Export Processing Zones (EPZs) and from Export Oriented Unit (EOU) complexes:

The Export Oriented Units are governed by the general provisions of the EOUs Scheme and the units set up in Export Processing Zones are governed by the general provisions of the EPZ Scheme except that

- (i) nothing including rejects shall be permitted to be sold in the Domestic Tariff Area (DTA); and
- (ii) in the event of an unit ceasing its operation, gold and other precious metals, alloys, ges and other materials available for manufacture of jewellery, shall be handed over to an agency nominateled by the Ministry of Commerce at the price to be determined by that agency.

These units may import raw material, alloys, carat gold, coloured gold, precious metals including silver, platinum and palladium, findings, mountings, sockets and frames made of gold and other precious metals. These units may also import diamonds, coloured gems and stones, semi-precious stones, synthetic stones, pearls etc. In addition, gold of 0.995 fineness may also be made available to these units through SBI or any other agency nominated by the Ministry of Commerce. The units may apply through the Development Commissioner of the EPZ or the sponsoring authority of the EOU complex for supply of 0.995 fineness gold. These units may be allowed to import capital goods, prototypes, technical samples, consumables, spares and packaging materials in accordance with the procedures applicable to the EOUs Scheme and EPZ Scheme. However, gold of 0.999 fineness shall not be allowed to be imported except through the SBI.

The value addition a may be calculated on the price at which gold content (including wastages), whether it be gold of 0.995 fineness or of any other purity, is imported. Similar procedure shall be applicable for imported silver (without wastages). For export of plain and studded gold jewellery including articles, the minimum value addition shall be 10% and 15% respectively. For silver plain/studded jewellery and articles the minimum value addition shall be 25%. An exporter shall also be required to achieve an additional value addition of 5% over the value of cut and polished diamonds, precious and semi-precious stones, pearls and synthetic used as studdings. CIF value of mountings, findings, etc. may also be taken into account for value addition and their import/export shall be on net to basis.

In case of units exporting loose cut and polished diamonds and precious/semi-precious stones the minimum value addition required to be achieved shall be calculated on the basis of corresponding replenishmen rates available to such exports from DTA. Apart from gold and silver jewellery and articles, jewellery and articles from other precious metals may also be manufactured and exported from the aforesaid EOU complexes/EPZs. The value addition and other requirements in respect of platinum and palladium etc., shall be specified through a Public Natice by the Chief Controller of Imports and Exports.

Jewellery samples allowed to be imported may be re-exported after proper identification.

Scrap/dust/sweepings of gold may be sent to the Government of India Mint from the units in the EPZ and returned to the EPZ in standard gold bars in accordance with the procedure prescribed by the Customs authorities.

Re-export of rough diamonds may be allowed by the Development Commissioner of the EPZ/EOU Complex concerned upto 5% of the value of imported rough diamonds in accordance with Paragraph 85 of this Chapter.

Units in the EPZ/EOU Complex may participate in Government approved exhibitions. No sale shall be permitted in exhibitions held in the country. The procedure for movement of the jewellery from these zones/complexes and back shall be prescribed by the Customs authorities.

Partly processed jewellery may also be exported subject to realisation of the prescribed minimum value addition.

The MMTC may also supply gold, gold intermediates and components including gold alloys, carat gold, findings, excepting gold of 0.999 fineness, to the approved gold jewellery manufacturing exporting units set up under this scheme in accordance with the procedure specified from time to time.

F. Scheme for import of gold of above 18 carats directly by units situated in DTA under replenishment:

Against exports of plain gold jewellery where export proceeds have been fully realied in foreign exchange, the licensing authority may issue a non-transferable Replenishment Licence @87% of the FOB value of export for direct import of:

- (i) gold of 0.995 fineness; and
- (ii) gold findings/mountings of 0.920 fineness upto 10% of the value of the licence which shall, however, be within the overall value of the licence.

Against exports of studded gold jewellery where export proceeds have been fully realised in foreign exchange, the licensing authority may issue a non-transferable Replenishment Licene @ 80% of the FOB value of exports for the direct import of:

- (i) gold of 0.995 fineness, the value of which shall be determined by taking into account the quantity of pute gold (0.999 fineness) used in the gold studded jewellery exported, as certified by the Customs authorities, multiplied by the international price of pure gold (0.999 fineness) on the date of export, as certified by the designated branches of SBI, plus 20% of the residual replenishment value of studdings;
- (ii) gold findings/mountings of 0.920 fineness upto 10% of the value of the licence and within the value of the licence; and
- (iii) rough diamonds, rough coloured gem-stones and real or cultured pearls undrilled/unset for the residual value.

The Replenishment Licence shall be valid for a period of 90 days from the date of its issue.

G. Scheme for import of gold of above 18 carats on pre-export basis for export production by units situated in DTA under Gold Imprest Licence:

An exporter with an annual average export performance of plain and studded gold jewellery of Rs.3 crores and above during the preceding three licensing years will be eligible for Gold Imprest Lecence against valid export contract in his own name. The licence may be issued for a value equivalent to his best year's performance during the said three years plus 25% thereon. With in his overall entitlement an exporter may apply for a Gold Imprest Licence separately for export of plain and for export of studded gold jewellery. The licence shall be subject to the following conditions:

- (i) Export obligation in the manner indicated below;
- (ii) The licence shall be in terms of value and shall be valid for import of gold of 0.995 fineness;
- (iii) The licence shall be non-transferable;
- · (iv) Exports shall be made after importing gold against the licence; and
 - (v) The licence shall be valid for six months from the date of its issue.

The Gold Imprest Licence issued for export of plain gold jewellery shall carry an export c bligation in inverse ratio of 87% i.e., if the Gold Imprest Licence is issued for a CIF value of US \$ 87, the export obligation shall be US \$ 100. The export obligation on studded gold jewellery shall be fixed in the inverse ratio of 80%, i.e., if the Gold Imprest Licence is issued for a CIF value of US \$ 80, the export obligation shall be US \$ 100. The export obligation shall be completed within 120 days from the date of clearance of each consignment of gold and the exporter shall not claim any benefit of replenishment on these exports under any other scheme, except to the extent that he has exceeded the export obligation.

- 89. Other Provisions.—An exporter may pay agency commission upto 3% of the FOB value of exports except in Schemes 88(F) and 88(G) above. Wherever agency commission is paid, the minimum value addition shall be correspondingly increased by the percentage of the agency commission.
- 90. Under the schemes mentioned in Paragraph 88(A) to (E) above, Gold wastages or manufacturing loss shall be admissible as specified in the Handbook of Procedures.
- 91. Gem Replenishment Licences may be issued under the schemes mentioned in Paragraphs 88(A) to (C) above on export of plain gold/silver jewellery in cases where an exporter achieves the minimum prescribed value addition. The value of such licence shall be determined with reference to the realisation in excess of the minimum value addition. Exporters of studded gold/silver jewellery and articles may be entitled to Gem Replenishment Licence taking into account the value of studdings used in the items exported, after accounting for the value addition on gold including wastages. For the purpose of licensing, the studdings will be divided into four categories, namely,
 - (a) diamonds,
 - (b) precious stones,
 - (c) semi-precious and synthetic stones and
 - (d) pearls.

The scale of replenishment will be as contained in the Handbook of Procedures. These licences shall be valid for import of rough diamonds, precious stones, semi-precious and synthetic stones and pearls. Besides, the licence shall also be valid for import of empty jewellery boxes upto 1% of the value of the licence. These licences shall be freely transferable.

92. Invoice. - Under all the schemes, imports and exports shall be invoiced in US dollars.

CHAPTER IX

EXPORT ORIENTED UNITS AND UNITS IN EXPORT PROCESSING ZONES

93. Eligibility.—Units undertaking to export their entire production of goods may be set up under the Export Oriented Unit (EQU) Scheme or Export Processing Zone (EPZ) Schemes. Such units may be engaged in manufacture, production of software, horticulture, agriculture, acquaculture, animal husbandry or similar activity. Units engaged in service activities may also be considered on merits.

- 94. Importability of goods.—The unit may import free of duty the following goods required by them for production provided they are not prohibited items in the Negative List of Imports.
 - (a) Capital goods including captive power plants;
 - (b) Raw materials, components, intermediates, semi-finished goods, spares, parts and consumables;
 - (c) Proto-types, office equipment and consumables for office equipment; and
 - (d) Material handling equipment such as forklifts, overhead cranes, etc.
- 95. Second hand Capital goods.—Second-hand capital goods may also be imported in accordance with the provisions contained in Chapter V.
- 95. Leasing of Capital goods.—An EOU/EPZ unit may, on the basis of a firm contract between the parties, source the capital goods from a domestic leasing company. In such a case, the domestic leasing company will be eligible to import the capital goods free of duty and supply it to the EOU/EPZ units on such terms and conditions as may be mutually agreed upon between the two parties. The capital goods shall, however, remain as a part of the capital assets of the EOU/EPZ unit till the export obligation is discharged by the unit and they shall not be diverted for any other use.
- 97. Value Addition.—The unit shall achieve a minimum Value Addition (VA) of 20%, but units engaged in the manufacture or production of items specified in Appendix II shall achieve the Value Addition (VA) norms indicated therein.
- 98. Legal Undertaking.—The unit shall execute a bond/legal undertaking with the Development Commissioner concerned and in the event of failure to fulfil the obligations stipulated in the letter of approval/intent, it would be liable to penalty in terms of the bond/legal undertaking or under any other law for the time being in force.
- 99. Currency balancing.—Any proposal involving imports from General Currency Area (GCA) for exports to Rupee Payment Area (RPA) may be considered provided the outflow and inflow of foreign exchange are balanced. This will also apply to proposals for change in or modification of approvals already granted.
- 100. Automatic Approvals.—Project applications satisfying the conditions mentioned in para 3 of Ministry of Industry Press Note No. 3 (1991 series) may be given automatic approval within 15 days by the Development Commissioner of the EPZ concerned. In the case of EOUs, such approval shall be granted by the Secretariat of Industrial Approvals (SIA).
- 101. Other cases.—In other cases, approval may be granted by the Board(s) of Approval set up for this purpose.
 - 102. DTA Sales.—The entire production of EOU/EPZ Units shall be exported except:
 - (a) Rejects upto 5% or such percentage as may be fixed by the Board of Approval. Rejects may be sold in the Domestic Tariff Area (DTA), subject to payment of appropriate duties.
 - (b) 25% of the production in value terms may be sold in the DTA when the use of indigenous inputs is more than 30% in value terms. When the use of such inputs is less than 30%, DTA sale entitlement shall not exceed 15% in value terms. DTA sale shall be subject to fulfilment of minimum value addition and export obligation. No DTA sale shall be permissible in respect of jewellery, diamonds, precious and semi-precious stones/gems, motor cars, recorded video and audio cassettes and silver bullion.
 - 103. Export Obligation.—The following supplies shall be counted towards fulfilment of the export obligation:
 - (a) Supplies effected in DTA under global tender conditions;
 - (b) Supplies effected in DTA against payment in foreign exchange;
 - (c) Supplies against Advance Licences and other import licences;
 - (d) Supplies, with the permission of the Development Commissioner, to other EOU5/EPZ units.
- 104. Exports through Export House/Trading House/Star Trading House.—An EOU/EPZ unit may export goods manufactured by it through an Export House/Trading House/Star Trading House/Trading House/Trading House/Trading House/Trading House/Trading House/Star Trading House. The manufacture of the goods shall be done in the EOU/EPZ units. The value addition and export obligations as well as any other obligation relating to the imports and exports shall continue to be discharged by the EOU/EPZ unit.

- 105. The Development Commissioner may also permit. --
- (a) Supplies or sale, in reasonable quantities, of samples of goods produced by EOU/EPZ units for display or canvassing orders on payment of duties leviable. Such samples may also be allowed to be removed from the unit on furnishing a suitable undertaking for return of such goods.
- (b) Bringing back for repair/replacement goods sold in DTA but found defective. Such goods may be removed from the unit subject to the satisfaction of the Customs authorities as to the identity of the goods.
- (c) Transfer of goods to DTA for repair, testing or calibration provided that in the case of an EOU unit this permission may be granted by the Customs authorities.
- 106. Benefits for supplies from the DTA.—Supplies from the DTA to EOUs/EPZ units will be regarded as "Deemed Exports" and will be eligible for the following benefits:
 - (a) Refund of terminal excise duty, Central sales tax and duty draw back;
 - (b) Exemptions from payment of Central excise duty on capital goods, components and raw materials supplied under this paragraph;
 - (c) Discharge of export obligation, if any, on the supplier.
- 107. Conditions.—The benefits stated under paragraph 106 shall be available provided the goods supplied are manufactured in the country and the supplies are against letter of authority issued by the Development Commissioner.
- 108. Renefits for EPZ/EOU Units.—Concessional Rent: The units set up in the EPZs will be eligible for concessional rent for lease of industrial plots and standard design factory (SDF) buildings/sheds allotted for the first three years at the following rates:

For Plots: The concession will be 75% for the first year, 50% for the second year and 25% for the third year if production had commenced in the first year or the second year. The concession will not be available for the third year if production had not commenced by the end of the second year;

For SDF buildings/sheds: The concession will be 50% for the first year and 40% for the second year if production had commenced in the first year. The concession will be 25% for the third year if production had commenced in the first year. The concession will not be available if production had not commenced by the end of the first year;

Tax Holiday: EOUs and EPZ units will be exempted from payment of corporate income tax for a block of five years in the first eight years of operation;

Clubbing of NFE; Net Foreign Exchange (NFE) carned by an EOU/EPZ unit can be clubbed with the NFE of its parent/associate company in the DTA for the purpose of according Export House, Trading House or Star Trading House status for the latter;

- IPRS: The International Price Reimbursement Scheme for supply of iron and steel will be available to EOUs and EPZ units; and
 - 100% Foreign Equity: Foreign equity upto 100% is permissible in the case of EOUs and EPZ units.
- 109. Inter-unit transfer.—Transfer of manufactured goods may be permitted by the Development Commissioner from one EPZ unit to another EPZ unit, one EPZ unit to a EOU, one EOU to an EPZ unit or from one EOU to another EOU.
- 110. Goods imported by an EOU/EPZ unit may be transferred or given on loan to another EOU/EPZ unit with the prermission of the Development Commissioner.
- 111. Subcontracting.—The EOU/EPZ units may be permitted to sub-contract part of their production for job work to units in the DTA on a case to case basis. Requests in this regard will be considered by the concerned Customs authorities on the basis of factors such as feasibility of bonding, fixation of input and output norms, and furnishing of undertakings/bonds by the concerned units.
- 112. Sale of Imported Materials. In case an EOU/EPZ unit is unable, for valid reasons, to utilise the imported goods, it may re-export them with the permission of the Development Commissioner, subject to clearance from Customs with reference to valuation etc. Such goods may also be transferred to an Actual User in the DTA with the permission of the Development Commissioner on payment of applicable duties.

- 113. Imported machinery/capital goods that have become obsolete may be disposed of, subject to payment of customs duties on the depreciated value thereof.
- 114. Disposal of scrap.—The Development Commissioner may, subject to guidelines laid down by the BOA in this behalf, permit sale in the DTA of scrap/waste/rempants arising out of production process on payment of applicable duties and taxes. Percentage of such scrap/waste/remnants shall be fixed by the Board keeping in view the norms specified by a Public Notice issued in this behalf by the Chief Controller of Imports and Exports.
- 115. Private bonded Warehouses.—Private bonded warehouses may be permitted to be set up in EPZs for stock and sale of duty-free raw materials. components etc. to EOUs and EPZ units subject to the following conditions:
 - (a) The private bonded warehouses shall be located within the EPZ;
 - (b) Imports for such private bonded warehouses shall be made only against specific licences. No licence shall be given to import items which are not required by the consuming units; and
 - (c) The items imported by the private bonded warehouses shall not be permitted to be sold in the DTA.
- 116. Period of Bonding.—The bonding period for units under the EOU Scheme shall be 10 years. The period may be reduced to 5 years by the BOA in case of products liable to rapid technological change. On completion of the bonding period, it shall be open to the unit to continue under the scheme or opt out of the scheme. Such debonding shall, however, be subject to the industrial policy in force at the time the option is exercised.
- 117. De-Bonding.—On the satisfaction of the BOA, EOU/EPZ units may be debonded on their inability to achieve export obligation, value addition or other requirements. Such debonding shall be subject to such penalty as may be imposed and levy of the following duties:
 - (a) Customs duty on capital goods at depreciated value but at rates prevalent on the dates of import;
 - (b) Customs duty on unused raw materials and components on the value on the dates of import and at rates in force on the dates of clearance.
- 118. Conversion.—Existing DTA units may also apply for conversion into an EOU but no concession in duties and taxes would be available under the scheme for plant, machinery and equipment already installed.
- 119. Value addition.—"Value Addition" for the purpose of this chapter shall be expressed as a .percentage and shall be calculated according to the following formula:

$$VA = \frac{A-B}{A} \times 100$$
, where

VA is Value addition,

A is the FOB value realised by the EOU/EPZ unit; and

is the sum total of the CIF value of all imported inputs, the value of all payments made in foreign exchange by way of commission, royalty, fees or any other charges, and the value of all indigenous inputs purchased by the EOU/EPZ unit. Inputs mean raw materials, intermediates, components, consumables, parts and packing materials.

CHAPTER X

DEEMED EXPORTS

- 120. Definition.—"Deeined Exports" means those transactions in which the goods supplied do not leave the country and the payment for the goods is received by the supplier in Indian rupees, but the supplies earn or save foreign exchange for the country.
- 121. Categories of supply.—The following categories of supply of goods shall be regarded as "Deemed Exports", under this Policy, provided the goods are manufactured in India and the payment is received in Indian rupees:
 - (a) Supply of goods against licences issued under the Duty Exemption Scheme;
 - (b) Supply of goods in India to foreign ships and foreign airlines:
 - (c) Supply of goods to units olocated in Export Processing Zones (FPZs) or Export Oriented Units (EOUs);
 - (d) Supply of capital goods to holders of licences under the Export Promotion Capital Goods (EPCG) Scheme:
 - e) Supply of capital goods, components, parts, raw materials, consumables, instruments, accessories, tools and spares to Oil and Natural Gas Commission (ONGC), Oil India Ltd. (OIL), and Gas Authority of India Ltd. (GAIL), for thier off-shore and on-shore exploration, drilling and production operations;
 - (f) Supply of goods to projects financed by the following multilateral or bilateral agencies/Funds or any other agency/Fund as may be notified by the Central Government, under international competitive bidding or under limited tender system in accordance with the procedures of those agencies/Funds:
 - 1. Abu Dhabi Fund for Arab Economic Development.
 - 2. Asian Development Bank (ADB).
 - 3. International Bank for Reconstruction and Development (IBRD/IDA).
 - 4. International Fund for Agricultural Development (IFAD).
 - 5. Kreditansdalt fur Wiederaufbau (KFW),
 - 6. Kuwaiti Fund for Arab Economic Development.
 - 7. Organisation of Petroleum Exporting Countries (OPEC) Fund.
 - 8. Saudi Fund for Development (SFD).
 - 9. United States Agency for International Development (USAID).
 - 10. Yen credit channelised through Overseas Economic Coopeartion Fund (OFCF).
 - (g) Supply of capital goods to fertilizer by plants the Indian main contractors if the supply is made under the procedure of international competitive bidding.
- 122. Benefits for deemed exports.—Deemed exports shall be eligible for the following benefits in respect of manufacture and supply of goods qualifying as deemed exports:
 - (a) Duty Exemption Scheme under Chapter VII.
 - (b) Duty Drawback Scheme.
 - (c) Refund of terminal Excise duty.
 - (d) Special import licences, for such value or bearing such proportion to the value of the deemed exports, for the import of such items included in the Negative List of Imports as may be specified under a scheme to be notified in this behalf.

CHAPTER XI

EXPORTS

- 123. Free Exports:—All goods may be exported without any restriction except to the extent such exports, are regulated by the Negative List of Exports or any other provision of this Policy or any other law for the time—being in force.
- 124. Registration-cum-Membership Certificate (RCMC).—Any person applying for a licence to import or export or for any other benefit or concession under this Policy shall be required to furnish his Registration-cum-Membership Certificate (RCMC) number granted to him by any Export Promotion Council (EPC) of which he is a member.

- 125. Project Exports,—Export of items not specifically regulated may be made for projects abroad. The competent authority may permit export of items included in the Negative List of Exports.
- 126. Denomination of contracts.—All export contracts shall be denominated in freely convertible currency. Contracts for which payments are received through the Asian Clearing Union (ACU) may be denominated in the country of the exporter or importer or in any freely convertible currency and all such payments shall be deemed to have been received in convertible currency.
- 127. Export Contracts with RPA countries.—Exports to Rupee Payment Area (RPA)—countries/former Rupee Payment Area (RPA) countries may be made under the terms of the Trade Agreement/Protocol signed with such countries. However, exports to such countries against payments in non-convertible Indian rupees be may required to be registered with such authority as may be specified in this behalf.
- 128. Re-exports.—Goods imported from any country in the General Currency Area (GCA) in accordance with this Policy shall not be re-exported in the same or substantially the same form, without a licence, to any country in the Rupee Payment Area (RPA).
- 129. Export of Personal Baggage.—Bonafide personal baggage of Indian passengers may be exported either along with the passenger or, if unaccompanied, within one year before or after the passenger's departure from India. Items included in the Negative List of Exports shall require a licence issued by the licensing authority, except in the case of edible items not exceeding 100 kgs. per person.
- 130. Ship Stores.—Sea men engaged on ships and bonafide passengers may take as ship stores, without a licence, any goods which may be included in the Negative List of Exports, except the prohibited items, in accordance with such scale as may be notified in this behalf by the Ministry of Surface Transport, Government of India.
- 131. Export of Gifts.—No goods of value exceeding Rs. 3000/- may be exported as a gift. Items included in the Negative List of Exports shall not be exported as a gift, without a licence, except in the case of edible items not exceeding a value of Rs. 3000/-.
- 132. Export of in ligenous spares. Warranty spares of equipment, machinery, automobiles and any other item may be exported Suring their warranty/performance guarantee period upto 2% of the total FOB value of exporte of the previous licensing year, along with the main equipment or subsequently. Such exports must be declared to the Customs authorities in the exporter's invoice, shipping bill and GR form. Spares exceeding 2% of the FOB value will be allowed on merits by the Export Licensing Committee (ELC).
- 133. Transit Facility:—Transit of goods by land to or from countries adjacent to India and with no seaboard of their own is permitted according to the procedure for regulating transit traffic provided that the goods are intended for consumption in that country.
- 134. Transitional arrangement.—Unless otherwise directed by the Chief Controller of Imports and Exports, if any amendment to this Policy interferes with a affects the performance of any agreement to export which is supported by an irrevocable letter of credit or receipt of full payment in advance prior to the date of the amendment, such agreement to export shall be valid and the exporter may execute the agreement as if the amendment did not apply to his case.

CHAPTER XII

EXPORT HOUSES, TRADING HOUSES AND STAR TRADING HOUSES

- 135. Definition.—Merchant and manufacturer exporters and trading companies including those having foreign equity, Export Oriented Units (EOUs) and units located in Export Processing Zones (EPZs) have been recognised as Export Houses, Trading Houses or Star Trading Houses under criteria which were laid own from time to time upto 31st March, 1992. All such Export Houses, Trading Houses and Star Trading Houses shall continue to enjoy the status accorded to them for the period for which such status was accorded.
- 136. Criterion for renewal.—However, when an Export House, Trading House or Star Trading House applies at the expiry of the aforesaid period for renewal of recongition as Export House, Trading House or Star Trading House as the case may be, it shall satisfy the criterion laid down hereinafter for grant of such recongition.

137. Criterion for recognition.—With effect from 1st April, 1992, the criterion for recognition as Export House, Trading House or Star Trading House shall be the average annual NFE during the three preceding years or the NFE during the preceding year, whichever is satisfied, as follows:

Category	Average annual Net Foreign Exchange (NFE) earned during the base period i.e., 3 preceding licensing years, in Rupees	Not Foreign Exchange (NFE) earned during the base period i.e., preceding licensing year, in Rupees				
Export Houses	6 Crores	12 Crores				
Trading Houses	30 Crores	60 Crores				
Star Trading Houses	125 Crores	150 Crores				

- 138. Calculation of NFE.—For the purpose of the above criterion, the Net Foreign Exchange (NFE) earned shall be calculated by taking the FOB value of the exports made by the exporter and deducting therefrom—
 - (a) the CIF value of all goods (other than capital goods) imported by him;
- (b) the CIF value of all goods (other than capital goods) imported in the name of or through an associate or supporting manufacturer; and
 - (c) the value of all payments made in foreign exchange by the exporter by way of commission, reyalty, fees or any other charges.
- 139. When an exporter applies on or after 1st April, 1992 for recognition as Export House, Trading House or Star Trading House under paragraph 137 above, the NFE earned during the years 1989-90, 1990-91 and 1991-92 shall be calculated in accordance with paragraph 138 above.
- 140. Extra weightage to SSI/Handicraft sectors.—Double and triple weightage shall be given to the NFE carned by the export of products manufactured by SSI and Handicrafts sectors respectively. Handicraft products will include silk products also.
- 141. Validity period.—Export House/Trading House/Star Trading House Certificates shall be valid for a period of three years ending 31st March of the licensing year unless otherwise specified. On the expiry of the previous certificate, such Houses will be allowed a grace period of six months to apply for and obtain a fresh certificate.
- 142. Benefits.—Export Houses/Trading Houses/StarTrading Houses shall be entitled to special import licences, for such value or bearing such proportion to the NFE earned during the previous licensing year, for the import of such items included in the Negative List of imports as may be specified under a scheme to be notified in this behalf.

CHAPTER XIII

EXPORT PROMOTION COUNCILS

- 143. EPCs.—At present, there are 19 Export Promotion Councils (EPCs) whose basic objective is to promote and develop the exports of the country. Each Council is responsible for the promotion of a particular group of products, projects and services. The EPCs are listed below:
 - (i) Engineering Export Promotion Council (EEPC), Calcutta.
 - (ii) Overseas Construction Council of India (OCCI), Bombay.
 - (iii) Electronics and Computer Software Export Promotion Council, New Delhi.
 - (iv) Plastics & Linoleums Export Promotion Council (PLEXCIL), Bombay.
 - (v) Basic Chemicals, Pharmaceuticals and Cosmetics Export Promotion Council (CHEME XCIL). Bombav
 - (vi) Chemicals and Allied Products Export Promotion Council (CAPEXCIL); Calcutta.
 - (vii) Gems & Jewellery Export Promotion Council (GJEPC), Bombay.
 - (viji) Council for Leather Exports (CLE), Madras.
 - (ix) Sports Goods Export Promotion Council (SGEPC), New Delhi.
 - (x) Cashew Export Promotion Council, Kochi.
 - (xi) Shellac Export Promotion Council, Calcutta.
 - (xii) Apparel Export Promotion Council (AEPC), New Delhi.
 - (xiii) Synthetic and Rayon Textiles Export Promotion Council, Bombay.
 - (xiv) Indian Silk Export Promotion Council, Bombay.

- (xv) Carpet Export Promotion Council, New Delhi.
- (vi) Export Promotion Council for Handicrafts, New Delhi.
- (xvii) Wool & Woollens Export Promotion Council, New Delhi.
- (xviii) Cotton Textiles Export Promotion Council (TEXPROCIL), Bombay.
- (xix) Handloom Export Promotion Council (HEPC), Madras.
- 144. Non-Profit organisations.—The EPCs are non-profit organisations registered under the Companies Act or the Societies Registration Act, as the case may be. They are supported by financial assistance from the Central Government.
- 145. Role.—The main role of the EPCs is to project India's image abroad as a reliable supplier of high quality goods and services. In particular, the EPCs shall encourage and monitor the observance of international standards and specifications by exporters. The EPCs shall keep abreast of the trends and opportunities in international markets for goods and services and assist their members in taking advantage of such opportunities in order to expand and diversify exports.
 - 146. Functions.—The major functions of the EPCs are as follows:—
 - (a) To provide commercially useful information and assistance to their members in developing and increasing their exports;
 - (b) To offer professional advice to their members in areas such as technology upgradation, quality and design improvement, standards and specifications, product development, innovation, etc;
 - (c) To organise visits of delegations of its members abroad to explore overseas market opportunities; and
 - (d) To organise participation in trade fairs, exhibitions and buyer-seller meets in India and abroad.
 - (e) To promote interaction between the exporting community and the Government both at the Central and State levels.
 - (f) To build a statistical base and provide data on the exports and imports of the country, exports and imports of their members, as well as other relevant international trade data.
- 147. Membership.—Any exporter/importer may apply to become a member of an EPC and such application shall be considered and disposed of within one month thereof in accordance with the rules and regulations of the EPC. On being admitted to membership, the applicant shall be granted forth with a Registration-cum-Membership Certificate (RCMC).
- 148. Professional bodies.—In order to play their part in the promotion of exports, it is important that the EPC function as professional bodies. For this purpose, excecutives with a professional background and experience industry, commerce and international marketing should be brought into the EPCs.
- 149. Autonomy.—The EPCs would be autonomous and shall regulate their owns ffairs. They would not be required to obtain the approval of the Central Government for sending sales teams or delegations abread for participation in fairs/exhibitions etc. The Central Government would only approve the annual plans and budget of the EPCs and monitor and evaluate their performance. The Ministry of Commerce/Ministry of Textiles would interact with the Managing Committee of the Council concerned, twice a year, once for approving the annual plan and budget and again for a mid-year review.
- 150. Conditions for Support.—The support given to the EPCs by the Government, monetary or otherwise would depend upon
 - (a) effective discharge of functions assigned to them:
 - (b) democratisation of the membership of the EPCs;
 - (c) democratic elections of office bearers of the EPCs being held regularly; and
 - (d) timely audit of the accounts of the EPCs.

CHAPTER XIV

QUALITY

151. Quality awareness campaign.—It is the policy of the Central Government to encourage the manufacturers and exporters to attain internationally accepted standards of quality for their products. The Central Government will extend support and assistance to trade and industry associations to launch a nationwide programme on quality awareness and to promote the concept of total quality management.

- 152. State-level programmes.—The Central Government will encourage and assist State Governments in launching a similar programme in their respective States, particularly for the small scale and handicraft sectors.
- 153. Rewards and benefits.—The Central Government will introduce a scheme to recognise and suitably reward manufacturers who have acquired the ISO 9000 (series) or the BIS 14000 (series) or any other intensitionally recognised equivalent certification of quality. Such manufacturers will be aligible for grant of special import licences, for such value or bearing such proportion to the value of their exports, for the import of such items included in the Negative List of Imports as may be specified under a scheme to be notified in this behalf.
- 154. Test houses.—The Central Government will assist in the modernisation and upgradation of test houses and lab ratories in order to bring them at par with international standards so that certification by such test? houses and laboratories is recognised within the country and abroad.

CHAPTER XV **NEGATIVE LIST OF IMPORTS**

	PART I	I
Sl. No.	155. Prohibited Items: Description of items	Nature of restriction
1.	Tallow, Fat and/or Oils, rendered, unrendered or otherwise, of any animal origin including the following:	Not permitted to be imported.
	 (i) Lard stearine, oleo stearine, tallow stearine, lard oil, oleo oil and tallow oil not emulsified or mixed or prepared in any way; 	
	(ii) Neat's-foot oil and fats from bone or waste;	
	(iii) Poultry fats, rendered or solvent extracted;	
	(iv) Fats and oils of fish/marine origin, whether or not refined, excluding cod liver oil (Pharmaco- poeial grade) and Fish Lipid Oil containing Eicospentaenoic acid and Decosa hexaenoic acid; and	
	(v) Margarine, imitation lard and other prepared edible fats of animal origin.	
2.	Animal rennet	-do-
3.	Ivory unmanufactured	-do-
	PART II	
	156. Restricted Items. A. CONSUME	R GOODS
Sl. No.	Description of items	Nature of restriction
1	2	3
	trial, agricultural, mineral or animal origin, whether in SKD/CKD condition or ready to assemble sets or in finished form. For the removal of doubts, it is hereby declared that consumer goods shall also include the following:-	Not permitted to be imported except against a licence or in accordance with a Public Notice issued in this behalf.
	Consumer electronic goods, equipment and systems, howsoever, described.	

3 2 1 2. Consumer telecommunication equipment. 3. Watches in SKD/CKD or assembled condition as well as movements (mechanical); watch cases watch dials. 4. Cotton, woollen, silk, man-made and blended fabrics including cotton Terry Towel fabrics. 5. Concentrates of alcoholic beverages.

- 6. Wines (tonic or medicated).
- 7. Saffron.
- 8. Cloves, Cinnamon and Cassia.

Import will be allowed against a licence subject to export obligation of twice the value of imports. The goods qualifying for export obligation shall be as specified.

9. Sports goods/equipment

Import will be allowed against a licence. Central or State Government organisations dealing with sports, educational institutions, Universities, Associations of sportsmen, sports clubs and eminent sportsmen, on the recommendation of the Central or State Government Department concerned, may be permitted to import.

10. Cameras Import will be allowed against a licence.

Photographic Studios and accredited cameramen, accredited correspondents of foreign broadcasting or television organisations, foreign news agencies or foreign newspapers may be permitted to import in accordance with the specified conditions.

11. Gifts of consumer goods

Charitable, religious or educational institutions and such persons as may be specified or otherwise approved by the Central Government may be permitted to import in accordance with the specified conditions.

However, the following items shall not be regarded as consumer goods:

- 1. All kinds of timber logs.
- 2. Pulses.
- 3. Rudraksha beads.
- 4. Raw cashewnut.
- 5. (i) Seeds of vegetables, flowers and plants, tubers and bulbs of flowers;
 - (ii) Cuttings, saplings, budwood, etc., of flowers;
- 6. Dry fruits including almonds and dates.
- 7. Homoeopathic medicines and drugs.
- 8. Crude drugs required for making Ayurvedic and Unani medicines. Import of jade, pearls and corals will be allowed only in powder form and of nonjewellery quality only.
- 9. Life saving and sight saving drugs, medicines and equipment as may be specified by the Chief Controller of Imports and Exports.
- 10. Asafoetida (Hing)
- Rock salt. 11.

[भाग रिन्धीट 1] भारत का राजपन : प्रसामारम 3 1 12. Teaching aids, including, (i) Mico films, microfiches and reader-cum-printers; (ii) Film strips/slides, audio cassettes, video tapes and video discs of educational nature. 13. Learning aids, such as language records, cassettes and videos. 14. Instruments and equipment required by the blind including Braille typewriters. Educational, scientific and technical books, journals, 15. news magazines and newspapers. 16. Audio-Visual News or Audio-Visual Views material including news clippings. Children's films (including video films) certified by 17. the Central Board of Film Certification to be "Children's Films". Finished rolls of cinematographic colour films 18. (unexposed) positive. 19. Photographic films (colour). Photographic films (black and white) other than 20. 120 and 620 size rolls. 21. Computer Software. 22. Amateur radio communication equipment including kits, accessories, instruments, spares and components 23. All kinds of contraceptives. Art and Chrome paper/Board. 24. Facsimile machine. 25. Photo Copier. 26. 27. Drawing paper. 28. Bus and Truck tyres, all types. **B. PRECIOUS, SEMI-PRECIOUS AND OTER STONES** Cubic Zirconia. Import permitted for export against a licence. 1. 2. Stones: -do-(a) Rough diamonds: (b) Synthetic stones finished or unworked (other than synthetic ruby unworked); and (c) Emerald/rubies and sapphires, semi-precious and precious stones and pearls (real or cultured). 3. Granite, porphyry, baslat, sand stone and other -domonumental or building stone, whether or not roughly trimmed or merely cut, by sawing or otherwise into blocks or slabs. 4. Marble travertine, ecaussine and other calcaeous -domonumental or building stone of an apparent specific

5. Onyx.

or slabs.

gravity of 2.5 or more, whether or not roughly trimmed or merely cut, by sawing or otherwise, into blocks

-do-

78 THE GAZETTE OF INDIA: EXTRAORDINARY 2 1 3 C. SAFETY, SECURITY AND RELATED ITEMS 1. Paper for security printing, currency paper, stamp Not permitted to be imported except against a licence paper and other special types of paper. or in accordance with a Public Notice issued in this behalf. Empty/discharged cartridges of all bores/sizes. -do-2. 3 Not permitted to be imported except against a licence Fire arms. by renowned shooters/Rifle Clubs for their own use on the recommendation of the Department of Youth Affairs and Sports, Government of India. Import permitted against a licence by 4. Ammunition. (i) Renowned shooters/Rifle Clubs for their own use on the recommendation of the Department of Youth Affairs and Sports, Government of India; (ii) Licensed arms dealers for the specified type of ammunition subject to such conditions as may be specified. 5. Explosives. to import.

Government Departmenis and Public Sector Undertakings, on the recommendation of the Controller of Explosives, Government of India, may be permitted

Chloro Fluoro Hydro Carbons (Freon Gases). 6.

Not permitted to be imported except against a licence or in accordance with a Public Notice issued in this behalf.

D. SEEDS, PLANTS AND ANIMALS

Animals Birds and Reptiles. 1.

Import permitted against a licence to Zoos and Zoological parks, recongnised scientific/research institutions, circus companies, private individuals, on the recommendation of the Chief Wild Life Warden of a State Government subject to the provisions of the Convention on International Trade in Endangered Species of Wild Fauna and Flora (CITES).

2. Stallione and Broodmares. Import permitted against a licence on the recommendation of the Director, Animal Husbandry and Veterinary Services of a State Government.

Livestock (excluding equine), Pureline stocks, birds, 3. eggs, frozen semen/embryo Grand parent stock (poultry).

Import pemitted against a licence on the recommendation of the Department of Agriculture and Cooperation Government of India.

Plants, seeds and other plant matering 4.

Import permitted

- (a) against a licence on the recommend at on of the Department of Agriculture and Cooperation, Government of India subject to the provisions of Plants, Fruits and Sceds (Regulation of Import into India) Order, 1984; and
- (b) in accordance with a Public Notice issued in this behalf.

E. INSECTICIDES AND PESTICIDES

1. Any pesticide, insecticide, weedicide, herbicide, rodenticide and miticide, which has not been registered or which is prohibited for import under the Insecticides Act, 1969 and formulations thereof.

Not permitted to be imported.

2. DDT-Technical 75 Wdp.

Import permitted against a licence.

F. ELECTRONIC ITEMS

1. Cathode ray tubes, the following:—
20" and 21" size colour T.V. picture tubes, subassembly thereof and assembly containing colour T.V.
picture tube.

Import permitted against a licence.

- 2. Integrated circuits, devices and chips for clocks and time pieces.
- -do-
- 3. Populated, loaded or stuffed printed circuit boards.
- -do-

4. £ Single sided printed coircuit boards.

- -do-
- 5. Double sided printed circuit boards with or without Plated Through Hole (PTH).
- -do-
- 6. Audio magnetic tapes in all forms excluding 35 mm and 16 mm sprocketed tapes.
- -do-
- 7. Video magentic tapes in hubs and reels, rolls, pancakes, jumbo rolls-in all forms.
- -do-
- 8. Video Tape Deck Mechanism including front and top loading cassette mechanism and sub-assemblies there-
- -do-
- 9. Computer systems, including personal computers, of CIF value below Rs. 6 lakhs.
- -do-

G. DRUGS & PHARMACEUTICALS

All types of Pencillin.
 6-APA.

Imports permitted against a licence.

- Tetracycline/Oxytetracycline and their salts.
- -do-

5. Tetracycline/Oxytetracycl

-do-

4. Gentamycin Sulphate.

-do-

5. Streptomycin.

-do-

6. Rifampicin.

7.

8.

-do-

- Intermediate of Rifampicins, namely
 (i) 3 Formly Rifa S.V;
 - (ii) Rifa S/Rifa S Sodium; and
 - (iii) 1-Amino-4 Methyl Piper azine.

Vitamin B.1, Vitamin B.2 and their salts.

-do-

9. Vitamin B.12.

-do-

H. CHEMICALS AND ALLIED ITEMS

1. Allyl Isothiocyanate.

Import permitted against a licence.

2. Capacitor fluids-PCB type.

-do-

I. ITEMS RELATING TO THE SMALL SCALE SECTOR

1. Copper oxychloride

Imports permitted against a licence.

Dimethyl Sulphate

-do-

3	DNPT (Dinitroso Pentamethylene tetramiye).	Import permitted against a licence.
4.	Flavouring essences-All types (including those for liquors).	-do-
5.	Niacin/Nicotinic Acid/Niacinamide/Nicotinamide/Acidamide.	d -do-
6.	Mixtures of odorifersous substances/mixtures of resinoids.	-do-
7.	Phthalate Plasticisers.	-do-
8.	Perfumery compounds/synthetic essential oils	-do-
8.	Lead and rule cutters.	-do-
0.	Mounting tables.	-do-
1.	Paper cutting knives of all sizes.	-do-
2.	Paper cutting machines, excluding machines with devices such as automatic programme cutting or three knife trimmers.	-do-
3.	Wire stitching machines single headed.	-do-
4.	Drawing and Mathematical Instruments.	-do-
5.	Domestic water meters.	-do-
6.	All types of dumpy levels/engineer's levels/builder's	-do-
	levels (not automatic) and quick set levels with or without horizontal circles.	
	J. MISCELLANE	EOUS ITEMS

1.	Aircraft and helicopters.	Not permitted to be imported except against a licence or in accordance with a Public Notice issued in this behalf.
2.	Ships, trawlers, boats and other water transport crafts.	-do-
3.	Commercial and Passenger automobile vehicles, including two wheelers, three wheelers and personal type vehicles.	-do-
4.	Gold in any form including Liquid Gold	-do-
5.	Coir (fibre/yarn/fabrics).	-do-
6.	Newsprint.	Permitted to be imported only against a licence or in accordance with a Public Notice issued in this behalf.
7.	Raw cotton and cotton yarn.	-do-
8.	Raw silk.	-do-
9.	Polyester staple fibre/tow.	-do-
10.	Natural Rubber.	-do-
11.	Diesel generating sets upto 1500 KVA (excluding DG sets with nobreak system).	-do-
12.	Electric portable generators upto 3.5 KVA	- do-
13.	Radio active material.	Permitted to be imported on the recommendation of Department of Atomic Energy.
14.	Rare earth oxides including rutile sand.	-do-
15.	Cinematograph feature films and video films	Import will be permitted by (a) Doordarshan, All India Radio, National Film Archives of India, Film and Television Institute of India and Children's Film Society of India; (b) by others subject to such conditions as may be specified in this behalf.

1 2

3

- 1. Special items required by hotels, restaurants, travel Import permitted against a licence on the recommenagents and tour operators.
 - dation of the Director General of Tourism, Government of India. Items qualifying for importand conditions of such imports shalt be as specified in a Public Notice issued in this behalf.
- 2, Special items required by sports and recreational bodies.

Import permitted against a licence for mouting essential import requirement. Items qualifying for import and conditions of such imports shall be as specified in a Public Notice issued in this behalf.

PART III

157. CANALISED ITEMS

Sl. Description of items

No.

Canalising Agency

Limited.

Indian Oil Corporation Limited

l. Petroleum products, namely,

- (a) Aviation Turbine fuel;
- (b) Crude Oil;
- (c) Kerosene;
- (d) Liquefied Petroleum Gas (LPG):
- (e) Motor Spirit;
- (f) Bitumen (asphalt)-Paving Grade;
- (g) Naphtha; and
- (h) Furnace Oil.
- 2. All types of nitrogenous, phosphatic, potassic
 - and complex chemicals fertilisers.

3. Drugs.

Vitamin-A and Premixes of Vitamin-A.

- 4. Oils (Coconut Oil, Groundnut Oil, Safflower Oil, Palm Oil (all types, inleuding palmolein and other fractions), Rapeseed Oil, Sunflower Oil, Soya bean Oil, Cotton Seed Oil).
- The State Trading Corporation of India Limited and Hindustan Vegetable Oils Corporation Limit, d.

Minerals and Metals Trading Corporation of India

The State Trading Corporation of India Limited.

5. Seeds (Copra, Groundnut, Palm, Rapeseed, Safflower, Soyabean, Sunflower, Cotton).

-do--do-

- All other oils or seeds or any other material from which 6. oil can be extracted (whether edible or non-edible) including vegetable fats not specifically mentioned above or elsewhere in this Policy (but excluding tung oil/China wood oil and natural essential oils).
- 7. Fatty acids and acid oils (Palm Kernel Oil, Palm The State Trading Corporation of India Limited. Stearine, Tallowamines, Hydrogenated tallow amines, Oleyl amines and Stearyl amines, including their primary, secondary, tertiary and quarternary derivatives).
- 8. Cercals.

Food Corporation of India.

CHAPTER XVI

NEGATIVE LIST OF EXPORTS

PART I

158 PROHIBITED ITEMS

S. No.

Description of Items

- 1. All forms of wild life including their parts and products
- 2. Exotic birds
- 3. All items of wild flora included in Appendix I of the Convention on International Trade in Endangered Species
- 4. Beef
- 5. Human skeletons
- 6. Tallow, fat and/or oils of any animal origin excluding fish oil
- 7. Wood and wood products in the form of logs, timber, stumps, roots, barks, chips, powder, flakes, dust, pulp and char coal

PART II

159 EXPORTS PERMITTED SUBJECT TO LICENSING

Sl, No.	Description of	items		
1		2	 	

- 1. Beche-de-mer of sizes below 3 inches
- 2. Beryl including gem variety of beryl
- 3. Bone meal
- 4. Cattle
- 5. Camel
- 6. Coconut and copra, exluding decorticated coconut whole, coconut protein, coconut honey, coconut flour and dessicated coconut
- 7. Creosote of (light and heavy), coalear and mixtures containing coaltar
- 8. (i) Chemical fertilizers, all types, including super-phosphate
 - (ii) Micronutrient fertilizers and mixtures thereof containing NPK excluding those specified in Schedule I, Part A 1 (f) of Fertilizers (Control) Order, 1985
- 9. Chloroquine phosphate, including formulations manufactured from chloroquine phosphate
- 10. Diosgenin and Dioscorea roots
- 11. Dress materials/readymade garments fabrics/textile items with imprints of excerpts or verses of the Holy Quran
- 12. Deciled groundnut cakes containing more than 1% oil
- Donkeys
- 14. Expeller cakes, all varieties, including groundnut oil cake but excluding cotton seed expeller cakes
- 15. Fish meal with less than 50% protein content
- 16. Ferrous scrap excluding mill scale scrap
- 17. Fresh and frozen silver pomfrets of weight less than 20° gms. from the ports of Tuticorin, Madras, Kakinada Vishakapatnam, Paradeep and Calcutta and less than 300 gms. from all other ports
- 18. Fur of domestic animals excluding lamb fur skin
- 19. Grass, other than decorative and non-edible grass

20. Hand spun sifk yarn

- 21. Hides and skins, namely:—
 - (i) Cuttings and fleshing of hides and skins used as raw materials for manufacture of animal glue gelatine
 - (ii) Raw hides and skins, all types excluding lamb fur skin

2

- (iii) All categories of semi-processed hides and skins including E.I. tanned and wet blue hides and skins and crust leather
- (iv) Clothing leather fur suede/hair, hair-on suede/shearing suede leathers
- (v) Fur leathers
- (vi) Industrial leathers, namely:--
 - 1. Cycle saddle teathers
 - 2. Hydraulic/packing/horting/horness/washor/leather
 - 3. Piciking band leathers
 - 4. Strap/combing teathers
- (vii) Lining leathers namely:--
 - 1. From cow and buffalo hides and calf skins
 - (a) Coloured lining leather
 - (b) Lining suede/heel grip suede leathers
 - 2. From goat/kid/lamb/sheep skins and lining suede
- (viii) Luggage leathers—case hide or side/suit-case/hand bag/luggage/cash bag leather
- (ix) Miscellaneous leathers, namely:-
 - 1. Booking binding leathers
 - 2. Skiver leathers
 - 3. Tranisistor case/camera case leather
- (x) Shoe upper leathers, namely:—
 - 1. Bunwar leather
 - 2. Kattai slipper/sandal leather
- (ix) Sole leather chrome tanned sole leather
- 22. Horses-Kathiawari, Marwari and Manipuri breeds; Mules
- 23. Kuth (Costus lappa syn. Saussurea lappa CB C1-Asteraccae) obtained from the Wild; Wild ordiids
- 24. Metals and their compounds, namely:-
 - (i) Beryllium and its compounds
 - (ii) Lithium and its compounts
 - (iii) Neptunium and its compounds
 - (iv) Plutonium and its compounsd
 - (v) Radium and its compounds
 - (vi) Thorium and its compounds
 - (vii) Uranium and its compounds
 - (viii) Zirconium and its compounds
 - (ix) Iridium, iridosmine and osmiridium
 - (x) Selenium
 - (xi) Deuterium compounds
 - (xii) Rare earth metals
 - (xiii) Scandium and Yttrium (whether or not interleaved or inter-alloyed/mixed)
 - (xiv) Oxide and peroxide of strontium
 - (xv) Lithium oxide and hydroxide

(1)

- (xvi) Perchlorate of Sodium
- (xvii) Chromium
- (xviii) Germanium
- (xix) Gallium
- (xx) Hafnium
- (xxi) Indium
- (xxii) Niobium
- (xxiii) Rhenium
- (xxiv) Thallium
- (xxv) Articles made of metals, including waste and scrap, mentioned in s. no. (xvii) to (xxvi) above
- (xxvi) Reaction initiators, reaction accelerators and catalytic preparations with nickel or nickel compounds as active substance
- (xxvii) Reaction initiators, reaction accelerators and catalytic preparations, not elsewhere specified or included, with precious metal compounds as active substance
- 25. Minerals, ores and concentrates, namely:-
 - (i) Radium ores and concentrates
 - (ii) Uranium ores and concentrates
 - (iii) Chrome ores, other than those mentioned in part IV
 - (iv) Vanadium ores and concentrates
 - (v) Vanadium bearing iron ore containing V₂O₆ exceeding 0.2 percent
 - (vi) Tungsten (wolfrom) ores and concentrates
 - (vii) Andalusite
 - (viii) Kyanite all grades
 - (ix) All types of sillimanite (except granular sillimanite)
 - (x) Calcined magnesite with silica content below 7.5 percent and dead burnt magnesite
 - (xi) Chrysotile, crocidolite and amosite varieties of asbestos of all sizes and grades
 - (xii) Lumpy/blended manganese ore with more than 46% manganese
 - (xiii) Raw magnesite and fused magnesite
- 26. Mulberry pierced cocoons
- 27. Milk, baby milk and sterilised liquid milk
- 28. Military stores
- 29. Napthalene
- 30. Oleo resins ex-Pinus longifolia
- 31. Paraffin wax, excluding Type III
- 32. Pasewa and any lac containing living insects; Sticklac; Broodlac
- 33. Pig iron
- 34. Pulses, all types, including lentils, grams, beans and flour made therefrom
- 35. Processed pulses other than those made out of the pulses imported under the Duty Exemption Scheme or by an EOU/Unit in the EPZ
- 36. Paddy (Rice in husk)
- 37. Pure silk yarn including silk noil yarn
- 38. Rough (uncut and unset) precious stones and Rock crystal quartz
- 39. Rice, bran, raw and boiled
- 40. Rock phosphate
- 41. Raw silk

(1)

(2)

42. Seeds and planting materials namely: —

Castor seeds; cotton seeds; cashew seeds and plants; Egyptian clover (Barscem)-Trifolium alaxtum seeds; Fodder crop seeds; Green manure seeds other than Dhaincha; guar seeds (whole); jute seeds; linseeds; lemongrass seeds and roots; lucerne (alfalfa) medicago sativa; mustard seeds; mesta seeds; Nux vomica seeds/bark/leaves/roots and powder thereof; onion seeds; seeds of ornamental plants (wild variety); paddy seeds (wild variety); pepper cuttings or rooted cuttings of pepper; Persian clover (Snaftel trifolium-resupinatum) seeds; rape seed; red sanders seeds (Ptcrocarpus santalinus); rubber seeds; russa grass seeds and tufts; seeds of all forestry species; seeds of all oilseeds and pulses; sunflower seeds; soyabean seeds; sandalwood seeds (Santalum album); saffron seeds or corms (planting material for saffron); wheat seeds (wild variety)

- 43. Sea shells, excluding those mentioned in Part V of this chapter
- 44. Sea weeds, all types, including G. edulis but excluding brown sea weeds and agarophytes of Tamil Nadu coast origin in processed form mentioned in Part III of this chapter
- 45. Silk worms; silk tops, silk waste; silk worm seeds and silk worm cocoons including reeling cocoons
- 46. Uncrushed bones other than fish bones
- 47. Vegetable oils namely: coconut oil; cotton seed oil, corn oil, groundnut oil; kardi oil; linsced oil; mustard oil; niger seed oil; palm oil; palm kernel oil; rap seed oil; rice bran oil; salad oil; sunflower oil; sesame seed oil; soyabean oil
- 48. Vintage motor cars, motor cycles and parts and components thereof i.e., motor cars and motor cycles manufactured prior to 1-1-1960.
- 49. Viscose staple fibre (regular,) excluding high performance viscose staple fibre
- 50. Whole human blood plasma and all products derived from human blood except gamma globulin and human serum albumin manufactured from human placenta and human placental blood; Raw placenta; Placental blood plasma
- 51. Waste paper.

PART III

160 EXPORTS PERMITTED SUBJECT TO QUANTITATIVE CEILINGS

Sl. No.

Description of items

- 1. Brown sea weeds and Agarophytes excluding G. eduils of Tamil Nadu coast origin in processed form
- Cotton seed expeller cakes
- 3. Culled live sheep and goat (adult)
- 4. Calcined magnesite with silica contents of 7.5% and above
- 5. Corrundum other than sapphires and rubies
- 6. Handicrafts and articles made of peacock tail feathers
- 7. lodised salt (used for human consumption)
- 8. Natural rubber of RMA IV or equivalent grade
- 9. Pyrophyllite
- 10. Safflower seed (Kardi seed)
- 11. Wheat straw (Hay)

PART IV

161 EXPORTS PERMITTED THROUGH CANALISING AGENCIES

The Canalising Agencies mentioned in Column 3 may export to any country the items as per the table below, subject to the provisions of the Policy:—

Si. No		Canalising Agencies
1	2	3
	Petroleum products, namely:— (i) Aviation turbine fuel (ii) Bitumen (asphalt) paving grade (iii) Crude oil (iv) Furance oil (v) High speed diesel (vi) Kerosene (vii) Liquified petroleum gas (LPG) (viii) Motor spirit (ix) Naptha (x) Raw petroleum coke	Indian Gil Corporation Limited.
2.	Butter	National Dairy Development Board (NDDB), Anand, Gujarat.
3.	Gum Karaya	The Tribal Cooperative Marketing Federation of India Limited (TRIFED), New Delhi.
4.	Gum resin	THIRFED and tribal Corporations of the State Governments.
5.	Mica waste (including factory cuttings) and scarp which is obtained by processing mica and which be- cause of size and colour is considered below the speci- fication of processed mica.	Minerals and Metals Trading Corporation of India Limited, (MMTC) New Delhi and Mica Trading Corporation of India Limited, Bihar.
6.	Minerals ores and concentrates, namely:	
	(i) Thorium ores concentrates and compounds there- of	Indian Rare Earth Limited, Bombay.
	(ii) Rare Earths (including Yttrium) ores, concentrate and compounds thereof	s -do-
	 (iii) Other mineral containing the following substances as accessory ingredients including:— (a) Columbite (b) Monazite (c) Samerskite (d) Uraniferrous allanite:— (1) Radium ores and concentrates (2) Thorium ores and concentrates (3) Uranium ores and concentrates (4) Uranium bearing tailings left over from ores after extraction of copper or gold (5) Zircon ores and concentrates (6) Titanium ores and concentrate ilmenite, rutile, loucexene, etc.) 	- Indian Rare Earths Limited, Bombay and Kerala Minerals & Metals Limited, Kollam.

[जाग — खंड 1] भा		त राजपत्र : ग्रसामारण 87
(1)	(2)	(3)
	(iv) Granular sillimanite produced by Indian Rare Farths Limited and Kerala Minerals and Metals Limited.	-do-
	(v) Iron ore except of Goa origin when exported to China or Europe in addition to Japan, South Corea and Taiwan and Iron ore of Redi Origin	
	(vi)(a) Chrome ore lumps with Cr ₂ O ₃ not exceeding 38 percent	
	(b) Low silica friable/fine ore with Cr ₂ O ₃ and Silica exceeding 4 percent	
	(vii) All grades of bauxite, except calcined bauxite and low grade bauxite with alumina content Al_2O_3 less than 54% of West coast orgin	-do-
((viii) Manganese Ores ex-cluding the following:— Lumpy blended Manganese ore with more than 46% Manganese	-do-
	(ix) Iron ore concentrate prepared by benefications and/or concentration of low grade ore containing 40 percent or less of iron produced by Kudremukh Iron Ore Company Limited.	Kudremukh Iron Ore Company Limited, Bangalore.
	(x) Iron ore pellets manufactured by Kudremukh Iron Ore Company Ltd. out of concentrates produced by it.	-do-
7.	Niger Seeds	 (i) National Agricultural Cooperative Marketing Federation of India Ltd., (NAFED), New Delhi. (ii) TRIFED.
8.	Onions	NAFED
9.	Powder Milk (skimmed or full cream)/whole or infant milk food	NDDB ANAND.
10.	Pure milk ghee	-do-

PART V

162. ITEMS WHICH MAY BE EXPORTED WITHOUT A LICENCE BUT SUBJECT TO TERMS AND CONDITIONS SPECIFIED IN THIS BEHALF.

The following items may be exported without a licence. However, the exporter shall satisfy the terms and conditions specified in this behalf for each item or category of items. The terms and conditions are contained in the Handbook of Procedures.

Sl.	o. Description of Item	
(1)	(2)	_
ī	i) Arms and ammunition viz. Muzzle loading weapons and breach loading or bolt action weapons such as	

- 1. (i) Arms and ammunition viz. Muzzle loading weapons and breach loading or bolt action weapons such as shot guns, revolvers, pistols and their ammunition
 - (ii) Replicas of antique weapons
- 2. All seeds of trees, hedges, ornamental plants, flowers and Gloriosa superba (Lilliaceae)
- 3. Vegetable seeds other than onion seeds
- 4. Aircrafts, spares and accessories thereof including those for repair/over-haul on returnable basis by both Indian and Foreign Airlines

(1) (2)

- 5. All cultivated varieties of orchids
- 6. Basmati rice
- 7. Black pepper (Asta Quality MG-1)
- 8. Carbonised lignite briquettes (LECO)
- 9. Chloroquine phosphate, formulations manufactured out of imported bulk drug (choloroquine phosphate)
- 10. (i) Cinchona mixed Alkaloids and cinchona salts after extraction of quinine and quinidine and salts thereof
 - (ii) Quinidine sulphate
 - (iii) Quinine and Quinine Products
- 11. Coir and coir products
- Cotton yarn including tyre cord yarn
- 13. De-oiled groundnut cake (extraction)
- 14. De-oiled rice bran (Rice bran extraction)
- 15. Flue-cured virginia to bacco, sun-cured virginia to bacco, Natu (Country) to bacco and suncrued justy to bacco
- 16. Finished leathers, all kinds
- 17. Guar gum splits
- 18. Grains and flour, namely:-
 - (i) Non-basmati rice
 - (ii) Wheat
 - (iii) Wheat products viz. rawa, resultant atta, wheat bran
 - (iv) Maida, suji and whole-meal atta (Wheat flour of not less than 95 % extraction)
 - (v) Barley
 - (vi) Maize
 - (vii) Bajra
 - (viii) Jowar
 - (ix) Ragi
- 19. Hand made woollen/synthetic/silk carpets including other floor coverings like woollen durries, straggets, chain stitched rugs, needle point rugs, gabbas and namdhas
- 20. HPS groundnuts (both in shell and kernels)
- 21. (i) Handicrafts made of sandal wood
 - (ii) Machine finished sandalwood products namely:—
 - (a) Visiting cards
 - (b) Blades for ladies hand fans
 - (c) Outer case and dails of watches
 - (d) Any other product of similar nature meeting the above specification and value addition norms
 - (iii) Hand icrafts made out of sea-shells
- 22. Kuth (Costus lappa Syn. Saussurea lappa CB CI-Asteraceae) cultivated in private lands and acrivatives except wild varieties
- 23. Laterite
- 24. Lamb fur skin
- 25. Low grade bauxite with a lumina content Al₂O₃ below 54% of West coast origin
- 26. (i) Meat of buffalo (both male and female) including heart, liver, lungs, brain, tongue, kidneys, offals and other organs
 - (ii) Meat of Indian sheep including heart, liver, lungs, brain, tongue, kidneys and other organs
 - (iii) Meat of Indian goat including heart, liver, lungs, brain, tongue, kidneys and other organs.

(1)

- 27. Metallurgical residues i.e. drosses, skimming slags, ashes, slims and flue dust (other than those of gold and silver) containing less than 15 per cent of free metal content
- 28. Mulberry X Dupion fabrics (100 per centar natural silk)
- 29. Meghalaya coal
- 30. Onions as a part of assorted vegetables
- 31. Processed pulses made only out of the pulses imported under the Duty exemption scheme or by an approved Export Oriented Unit/unit in the EPZ
- 32. (i) Processed mica including mica blocks, mica films and splittings, of all grades and varieties but excluding mica waste/factory cuttings and mica scrap
 - (ii) Processed mica items, silvered mica, capacitor plates, fabricated mica, mica flakes/powder
- 33. (i) Phosphorous oxychloride
 - (ii) Phosphorous trichloride
 - (iii) Thinyl chloride
 - (iv) Acetic anhydride
- 34. Plants, plant portions and derivatives, obtained from the wild
- 35. Raw cotton:
 - (i) Bengal deshi
 - (ii) Assam comillas
 - (iii) Staple cotton
 - (iv) Cotton deceloured by damage due to fire /water
 - (v) Zodo and sweepings
 - (vi) Yellow pickings
 - (vii) Others
- 36. Sesame seeds
- 37. Silk goods excluding silk carpets
- 38. Soft cotton waste/hard cotton waste
- 39. Solvent extracted cotton seed cakes (Decorticated/undecorticated)
- 40. Soyabean extraction
- 41. Sugar
- 42. Shellac and all forms of fac except those specified in Part II of this chapter
- 43. Export of cectain textile products of cotton, wool and manmade fibres and blands which are subject to MOUs/ Agreements between India or Austria or Canada or EEC or Finland or Nerway or Sweden or USA
- 44. Processed timber of all species excluding sandalwood and red sanders wood
- 45. Samples: -Samples of goods included in Part II, III, IV and V of the Negative List of Exports
- 46. Exhibits: -Exhibits of goods included in Parts II, III, IV and V of the Negative List of Exports

APPENDIX I

IMPORT REPLENISHMENT FOR GEM AND JEWELLERY

General Note

- (1) Necklaces strung or threaded, with cut and polished precious/semipricious Stones/Polished and Processed Pearls will also fall under respective ntries below and replenishment allowed accordingly, provided the value of metal fittings, namely, cliplps, Clasps, Pins, Hooks etc. is negligible and such value is excluded.
- (2) Exports of Gem and Jewellery items to Rupec Payment Area will qualify for the grant of Replenishment Licences valid for Imports only from the Rupee[Payment Area.

S.No	. Export Product	Import Replenishment Percentage of FOB	Materials permitted	Remarks
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
1.	Polished, Processed Pearls (Real or Cultured).	65.00	01 Real or Cultured Pearls Unset/ Undrilled.	
2.1	Cut & Polished Diamonds (with per carat realisation upto US\$ 260 FOB).	65.00	 01 Diamonds Unset and Uncut. 02 Special Industrial Adhesives/Gums/ Solutions used in Gem & Jewellery Industry and Synthetic Diamond Powder (1.00%.) 	
2.2	Cut & Polished Diamond (with per carat realisation of more than USS 260 and upto US \$ 350 FOB).	70.00	 01 Diamonds Unset and Uncut. 02 Special Industrial Adhesives/Gums Solutions used in Gem & Jewellery Industry and Synthetic Diamond Powder (1.00%). 	
2.3	Cut & Polished Diamonds (with per carat realisation of more than US\$ 350 and U\$ \$ 400 FOB).	75.00	01 Diamonds Unset and Uncut. 02 Special Industrial Adhesives/Gems Solutions used in Gems & Jewellery Industry and Synthetic Diamond Powder (1.00%).	
2.4	Cut & Polished Diamonds (with per carat realisation of more than US \$ 400 FOB).	62,50	 01 Diamonds Unset and Uncut. 02 Special Industrial Adhesives/Gums/Solutions used in Gem & Jewellery Industry and Synthetic Diamond Powder (1.00%). 	
2.5	Cut & Polished Diamonds (with per carat realisation of more than US \$ 600 FOB provided these are minimum 0.2 carat per stone).	90.00	 Diamonds Unset and Uncut. Special Industrial Adhesives/Gums/Solutions used in Gem & Jewellery Industry and Synthetic Diamond Powder (1.00%). 	(1) The import replenishment at the rate of 90% will be admissible on exports of cut and polished diamonds, provided the Custom attested invoice contains the exporter's declaration that the size of each diamond exported was 0.2 carat and above.
3.1	Cut and Polished Emeralds/ Rubies/Sapphires (with per carat realisation of US S 350 and upto US S 600 FOB).	80.00	 01 Emeralds uncut & unset. 02 Rubies uncut & unset 03 Sapphires uncut & unset 04 Precious stone unset including in Tumbled/broken/sliced/damaged form. 	
3.2	(i) Cut & Polished precious stones and semi-precious stones including cut and polished semi-precious stones from tumbled/broken/sheed/damaged rough semi-precious stones, not covered by S.No. 3.1 of less than US \$ 350 per carat FOB.	69.00	Ol Precious or semi-precious stones unget & uncut. Ol Rough semi-precious stones in tumbled/broken/sliced/damaged form.	
	(ii) Cut & Polished Coral	65.99	01 Coral unprepared, or coral sticks not cut to any shape or size.	
	(iii) Cut & Polished precious stones (when per carat FOB is US \$ 600 and above).	90.00	 61 Emeralds uncut & unset 62 Rubies uncut & unset 63 Sapphires uncut & unset 64 Precious stones unset including in tumbled/broken/sliced/damaged form. 	

claiming replenishment.

(1)	(5)	(3)	(4)		(5)
· . –	Cut & Pollshed Onyx.	50.00	01 Sliced Onyx.		
3.3	Cut & Pollshed Onyx. Jewellery containing platinum or palladium and studded/ strung with diamonds, Precious or semi-precious stones, real or cultured pearls, synthetic/ imitation stones provided the value of synthetic/imitation stones does not exceed 10% of the FOB value of Jewellery excluding the value of metal.	containing platinum containing platinum dium and studded/ th diamonds, Precious recious stones, real or bearls, synthetic/ stones provided the synthetic/imitation res not exceed 10% of value of Jewellery 65.00 Ol Diamonds uncut & unset unset and uncut. Ol Real or Cultured Pearls unset/ undrilled Ol Rough Semi-Precious Stones in tumbled/broken/sliced/damaged form Ol Diamonds uncut & unset unset and uncut. Ol Real or Cultured Pearls unset/ undrilled Ol Rough Semi-Precious Stones in tumbled/broken/sliced/damaged form Ol Diamonds uncut & unset unset Ol Diamonds uncut & unset unset Ol Diamonds uncut & unset unset Ol Diamonds uncut & unset Ol Diamonds uncut & unset Unset undrilled Ol Diamonds uncut & unset Unset undrilled Ol Real or Cultured Pearls unset/ undrilled Ol Rough Semi-precious stones Ol Diamonds uncut & unset Unset unset Ol Real or Cultured Pearls unset/ Undrilled Ol Rough Semi-precious Stones Ol Real or Cultured Pearls unset/ Undrilled Ol Rough Semi-Precious Stones in tumbled/broken/sliced/damaged form Ol Diamonds uncut & unset	(2)	Studded/Strung Jewellery containing Synthetic or Imitation stones exceeding 10% of the value of jewellery excluding the value of metal, in addition to the Diamonds, precious or semi-precious stones and/or Pearls are excluded from the scope of this Export Product. Precious Metal Jewellery as described under Col.2 will be covered under S.No.4 provided the value of precious metal i.e. Platinum or Palladium is not less than 70% of total val.:c of metal used therein or studded jewellery containing in whole or in part, metal other than Platinum or Palladium and studded/strung with diamonds, pearls, p ecious/semi-precious stones will also be grouped under S.No. 4 for the puprose of import replenishment, provided the value of the studdings/stringings amount to 90% or above of the total FOB value, of the total FOB value of the studdings in jewellery, namely, the value of cut and polished diamonds and/or precious and semi-precious stones and/or finished pearls as per the declaration of the exporter duly scrutinised and appraised by cusoms will be taken into account	
				(4)	Replenishment of diamonds uncut and unset precious/semi-precious stones, uncut & unset real or cultured pearls, unset/undrilled shall be allowed in proportion to the FOB value content of diamonds, uncut and unset precious or semi-precious stones unset and uncut and real or cultured pearls unset, undrilled respectively used, as contained in the exported produc as declared by the customs in the invoice. No interchangeability of the aforesaid studding materials inter-se shall be allowed.
5.	Cut or polished senthetic stones	50.00	01 Rough synthetic stones 02 Cubic zirconia	(1)	Production of customs attested invoices is not required for claiming Replenishment.
j	Imitation Jewellery/costumes jewellery studded or strung with synthetic/imitation stones plastic beads, wooden beads, glass beads, false pearls, glass chatons etc.	30.00	 01 Glass beads, false pearls & glass chatons/glass chatons in stock lots. 02 Rough synthetic stones 03 Metal fittings, findings, components & accessories required for imitation jewellely. 04 Cubic zirconia. 05 Empty Jewellery Boxes (1.00%) 		Only jewellery made of metals other than precious metals referred to in S. No. 4 will be covered by this entry. In other words, only jewellery made of base metal like aluminium, copper, brass etc. and studded/strung with synthetic/imitation stontes/plastic beads, wooden beads, etc. would fall under this S. No. Base metal imitation jewellery studded/strong with semi-precious stones will also fall under this S.No.
				(2)	Production of customs attested invoices is not required while

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
				(3) Cuil links (including brass cuff links, studded with synthetic/imitation stones, decoated cuff links and gold plated cuff links will also fall under this S.No.
6.2	Imitation jewellery/costume jewellery plain (other than (those specified under S No. 6.1).	10.00	 01 Meta fittings, findings, components & accessories required for imitation jewellery. 02 Empty jewellery Boxes (1.00%) 	 (1) Jhumka, Rings, Finger rings belts, necklaces, Ghungroos etc. made of base metals such as Aluminlum and Gillet will also fall under this S.No. Brass cuff links other than those covered by S.No. 6.1 wil also fall under the S.No. (2) Production of customs attested invoices is not required while claiming replenishment.
6.3	Silver Filigree and Silver Filigree Jeweller	10.00	01 Metal Fittings 02 Empty Jewellery Boxes (1.00%)	
6.4	Jewellery made of platinum or palladium and studded with synthetic/imitation glass, stones, chatons, beads false pearls, etc. with or without diamonds, precious stones, semi-precious stones, real cultured pearls.	30.00	0) Glass Beads, False pearls & glass chatons/glass chatons in stock lots 02 Rough synthetic stones 03 Cubic Zirconia 04 Fmpty Jewellery Boxes (1.00)%	 The price of platinum and palladium will be excluded from the FOB value while calculating replenishment. This S. No. will also cover articles studded with synthetic imitation glass stones, chaton beads, false pearls with or without diamonds, precious stones, semiprecious stones, real/cultured pearls.
			APPENDIXII	
		M VALI	E ADDITION REQUIREMENT FOR C	BRTAIN ITEMS
I.	ELECTRONICS (a) Computer software (b) Blank video cassette (c) Consumer electronics			60% 25% 30%
И.	TEXTILES (a) Ready made garments (b) Made-ups (c) Cotton yarn and cotton polyes (d) Cotton yarn and cotton polyes (e) Piece good (f) Denim fabrics (g) Terry towels (h) Silk fabrics			40% 25% 30% 35% 30% 30% 30% 30%
Ш.	LEATHER PRODUCTS (a) Leather footwear (b) I eather shoe uppers			25% 25%
	(c) Leather garments/good (d) Sports shoes/sports footwear			30% 25%
₩.	GEM & JEWELLERY (a) Plain gold jeweilery			10%
	(b) Studded gold jewelle y			15%
V.	(c) Silver jewellery OTHERS			25%
	(a) Latex gloves			40°-,
	(b) Granite (c) Fish and shrimp culture feed	producti	ion unit	45% 30%
	(d) Test and measuring instrumen		rial/control valves, photocopiers and me	
	scientific instrements (c) Clocks/Time pieces/wrist water	ches		30°°,
	(f Cigarette (g) Cigarette lighters			35% 40 <i>@</i>
	(h) Bristles, including brushes			30 °
	 (i) Tissue culture plants (j) Telecommunication equipment 	nt		60 % 30 %
	(k) Smaller vessels i.e. trawlers, t(l) Large ocean-going vessels	ugs, dred	gers, etc.	30% 30% 4 0 %